RAJASTHAN

BSTC

प्रवेश पूर्व परीक्षा

Pre D.El.Ed. Examination 2024

शिक्षण अभिक्षमता

विशेषताएँ

- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम,सरल भाषा एवं व्यावहारिक उदाहरणों का संकलन
- नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
- परीक्षोपयोगी संभावित प्रश्नोत्तरों का संग्रह

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™
M. 6376957258, 6376491126
Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)
3rd floor, E-112, Kalpatru Shopping Centre, Jodhpur

विषय - वस्तु

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	शिक्षण अधिगम	1 - 5
2.	नेतृत्व गुण	6 - 8
3.	सृजनात्मकता	9 - 13
4.	सतत् एवं समग्र (व्यापक) मूल्यांकन	14 - 20
5.	संप्रेषण	21 - 24
6.	व्यावसायिक अभिवृत्ति	25 - 26
7.	सामाजिक संवेदनशीलता	27 - 34
8.	अभ्यास प्रश्न	35 - 70
9.	शिक्षण अधिगम से संबंधित महत्त्वपूर्ण पुस्तकें एवं उनके लेखक	71

1
अध्याय

शिक्षण अधिगम

Short Notes

शिक्षण अधिगम (Teaching Learning):-

- शिक्षण का अर्थ ज्ञान प्रदान करना, कौशल का विकास करना, पाठ पढ़ाना, उन्हें उत्साहित करना आदि है। सामान्य अर्थों में शिक्षण का अर्थ अध्यापक द्वारा अपनाये गये व्यवसाय अथवा किसी व्यक्ति विशेष को कुछ सीखाने या कुछ विशेष ज्ञान, कौशल, रुचियों और अभिवृत्ति आदि को अर्जित करने में दी जाने वाली सहायता से लिया जाता है।
- शिक्षण एक त्रिस्तरीय प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य अन्त क्रिया होती है।

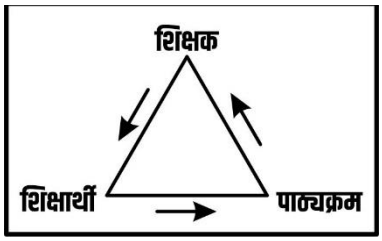

- सारांश में कहा जा सकता है कि शिक्षण वह प्रक्रिया है जो सीखने को प्रभावित करती है। उसका स्वरूप विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग हो सकता है परंतु उन सभी का उद्देश्य छात्रों को सिखाना होता है।

शिक्षण की संकल्पना Concept of Teaching :- शिक्षण विद्यार्थी को कक्षा में सूचनाएँ देने मात्र तक सीमित नहीं होता वरन् इस प्रक्रिया में बच्चे का उद्दीपन, मार्ग दर्शन, दिशा-निर्देशन और सीखने के लिए प्रोत्साहन जैसी प्रक्रियाएँ सन्निहित होती है। उद्दीपन बच्चों को नई चीजे सीखने के लिए अभिप्रेरित करता है। शिक्षण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य एक शैक्षिक सम्प्रेषण है, जो अपने विचारों से एक-दूसरे को प्रभावित करते है और अंतः क्रिया की इस प्रक्रिया से कुछ सीखते है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी, शिक्षक, पाठ्यचर्या तथा अन्य सम्बद्ध चरों को किसी पूर्व निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित रूप से संगठित किया जाता है। शिक्षण के समय शिक्षार्थियों में व्यवहारगत परिवर्तन लाने के लिए शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

- शिक्षण की त्रिस्तरीय संकल्पना जॉन ड्यूवी ने प्रस्तुत की थी, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया गया।
- द्विस्तरीय संकल्पना जॉन एड्म्स ने प्रस्तुत की थी, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी को सम्मिलित किया गया।

शिक्षण की परिभाषाएं (Defination of Teaching) :-

- **क्लार्क के अनुसार,** "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके प्रारूप तथा संचालन की व्यवस्था इसलिये की जाती है, जिससे शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सके।"
- **स्मिथ के अनुसार**, "शिक्षण एक उद्देश्य निर्देशित क्रिया है।"
- **बी.एफ. स्कीनर के अनुसार,** "शिक्षण पुनर्बलन की आकस्मिकताओं का क्रम है।"
- **एन.एल. गेज के अनुसार,** "शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य है दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना।"
- **जेम्स. एम. थाइन,** "समस्त शिक्षण का अर्थ है सीखने में वृद्धि करना।"

शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Teaching):-

- शिक्षण में शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्य वस्तु के मध्य परस्पर अंतःक्रिया होती है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। **ब्लूम के अनुसार**, "शैक्षिक उद्देश्य केवल यह लक्ष्य नहीं है जिनके लिए पाठ्यक्रम बनाया जाता है और मार्गदर्शन किया जाता है, बल्कि वह लक्ष्य भी है जो शिक्षा हेतु अनिवार्य प्रविधियों के निर्माण तथा उपयोग हेतु विस्तृत विनिर्देश भी देते हैं।"

शिक्षण के चर (Variables of Teaching):-

- चर किसी भी विषय-वस्तु से संबंधित वे घटक (Component) होते है जो प्रभावित करते है या प्रभावित होते है। शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रकार से चरों का अध्ययन किया जाता है जो निम्नलिखित हैं-

1. **स्वतंत्र चर (Independent Variable)-** शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को स्वतंत्र चर की संज्ञा दी गयी है। शिक्षक ही शिक्षण व्यवस्था नियोजन तथा परिचालन का कार्य करता है।
2. **आश्रित चर (Dependent Variable)-** शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी को आश्रित चर की संज्ञा दी गयी है। शिक्षार्थी को शिक्षण व्यवस्था, नियोजन तथा परिचालन के अनुरूप ही क्रियाशील रहना पड़ता है।
3. **हस्तक्षेपी या मध्यपथ चर (Intervening Variable)-** शिक्षण प्रक्रिया में हस्तक्षेपी या मध्यपथ चर वे चर है जो स्वतंत्र तथा आश्रित चर के मध्य सक्रिय होते हैं। यह पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन तकनीकें आदि हैं। ये चर मिलकर शिक्षण प्रक्रिया को पूर्ण करते है।

शिक्षण के प्रकार (Types of Teaching):-

- शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण का विभाजन भी कई प्रकार से किया जाता है। शिक्षण विभाजन का आधार निम्नलिखित है-

  1. शिक्षण क्रियाओं की दृष्टि से – शिक्षण में अनेकों प्रकार की क्रियाएं की जाती है। उन सभी क्रियाओं को तीन भागों में विभाजित कर सकते है- 1. प्रस्तुतीकरण 2. प्रदर्शन 3. कार्य।

  2. शिक्षण के उद्देश्यों की दृष्टि से – शिक्षण के तीन उद्देश्य - ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक होते है।

  3. शिक्षण के स्तरों की दृष्टि से – शिक्षण को स्मृति स्तर, बोथ स्तर तथा चिंतन स्तर में विभाजित किया गया है।

- **स्मृति स्तर-** शिक्षण के स्मृति स्तर के प्रवर्तक **हरबर्ट स्पेन्सर** थे। इसमें शिक्षण अधिगम मात्र स्मृति के सहारे टिका रहता है। छात्रों के सामने तथ्यों, सूचनाओं, नियमों तथा सूत्रों आदि के रूप में जो भी ज्ञान दिया जाता है, छात्र उसे केवल रटकर अपने ज्ञान भण्डार में वृद्धि करते रहते हैं। स्मृति स्तर के शिक्षण में अध्यापक की भूमिका प्रधान होती है और विद्यार्थी की गौण। इसमें अध्यापक छात्रों की रुचि, क्षमताओं तथा योग्यता आदि पर ध्यान दिये बिना शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण करता है।
- **बोध स्तर का शिक्षण-** शिक्षण के बोध स्तर के प्रवर्तक **मॉरीसन** थे। इस शिक्षण में विद्यार्थी अपनी बुद्धि और विचार प्रक्रिया का समुचित प्रयोग करने तथा विद्यार्थियों की मानसिक शक्तियों का उपयोग करने एवं विकसित करने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।
- **चिंतन स्तर का शिक्षण-** इसके प्रवर्तक **हण्ट** थे। स्मृति स्तर तथा बोध स्तर के शिक्षण से जब छात्रों में आवश्यक समझ तथा सूझबूझ विकसित हो जाती है, तब आगे का शिक्षण मार्ग चिंतन स्तर के शिक्षण द्वारा तय किया जाता है।

शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching) :-

- **1. शिक्षण एक उपचार विधि है –** शिक्षण में छात्रों की कमजोरियों का निदान करके उन्हें सुधार के लिये उपचार बताया जाता है।

  2. शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है- शिक्षण की त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में ब्लूम ने शिक्षण के तीन पक्ष-
  i. शिक्षण उद्देश्य
  ii. सीखने के अनुभव
  iii. व्यवहार परिवर्तन बताये है।

  3. शिक्षण एक आमने-सामने होने वाली प्रक्रिया है- शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षक तथा छात्र आमने-सामने बैठते हैं।

  4. शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है- शिक्षण प्रक्रिया के तहत् बालकों का सर्वांगीण विकास होता है।

  5. शिक्षण एक औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है।
  6. शिक्षण एक उद्देश्य (सोद्देश्य) प्रक्रिया है।
  7. शिक्षण का मापन किया जाता है।
  8. शिक्षण एक अंतःप्रक्रिया है।
  9. शिक्षण कला तथा विज्ञान दोनों ही है।

शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक :-

- **1. वातावरण का प्रभाव :-** कक्षा कक्ष का वातावरण जिस प्रकार का होता है उसी के अनुरूप शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण करते है। वातावरण के उचित निर्माण के अभाव में शिक्षक शिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति रुचि विकसित करने में असफल रहता है।

  2. सहायक सामग्री – शिक्षक सहायक सामग्री के अभाव में शिक्षण को सरल, बोधगम्य व रुचिकर नहीं बना पाता है। अतः सहायक सामग्री भी शिक्षण को प्रभावित करती है।

Short Notes

3. शिक्षक की कुशलताः – यदि शिक्षक कुशल, बालमनोविज्ञान से परिचित है तो यह कक्षा कक्ष के वातावरण का उत्तम निर्माण करके शिक्षार्थियों के अधिगम को आसान बना सकता है। शिक्षक की कुशलता में ही शिक्षण की सफलता है।

4. नियोजित कार्य – यदि शिक्षण कार्य पूर्व में नियोजित करके व्यवस्थित रूप से किया जाये तो बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन करने की पूरी संभावनाएं होगी। इसके विपरीत यदि नियोजित ढंग से शिक्षण कार्य नहीं किया जाये तो दिशा विहीन, अव्यवस्थित कार्य के नकारात्मक परिणाम आने की सम्भावनाएँ बन जायेगी।

5. शिक्षण उद्देश्य – शिक्षण के उद्देश्य शिक्षण कार्य को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं क्योंकि यदि शिक्षण उद्देश्य निर्धारित नहीं किये जायेंगे तो शिक्षण का कार्य दिशाहीन हो जायेगा तथा शिक्षण की सफलता संदिग्ध हो जायेगी।

अधिगम (Learning) :-

– किसी भी शिक्षा प्रणाली में अधिगम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक सुव्यवस्थित एवं कुशल शिक्षा प्रणाली में अधिगम प्रभावशाली होना चाहिए। **अधिगम का अर्थ है-** सीखना अथवा व्यवहार में परिवर्तन अर्थात् अधिगम व्यवहार में परिवर्तन लाने की एक प्रक्रिया है।

अधिगम की परिभाषा (Defination of Learning) :-

क्रो एवं क्रो के अनुसार, "आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन ही अधिगम (सीखना) है।"

गेट्स के अनुसार, "अनुभव एवं प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार परिवर्तन को अधिगम कहते है।"

गिलफोर्ड के अनुसार, "व्यवहार के कारण, व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।"

स्किनर के अनुसार, "अधिगम व्यवहार में उत्तरोत्तर सामजंस्य की प्रक्रिया है।"

अधिगम की संकल्पना (Concept of Learning) :-

– अधिगम, व्यक्ति के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है और उद्दीपन तथा अनुक्रिया की प्रक्रिया द्वारा प्रबलित अभ्यास का परिणाम होता है। अधिगम से होने वाले परिवर्तन सकारात्मक और सक्रिय होते है, नकारात्मक तथा निष्क्रिय नहीं होते है। अधिगम को प्रत्यक्ष रूप से देखा नही जा सकता, किन्तु व्यक्ति के व्यवहार से उसका अनुमान लगाया जा सकता है। जब कोई व्यक्ति पहले किसी काम को नहीं कर पाया परंतु बाद में उसी काम को कर लेता है, तो हम कह सकते है (अनुमान लगा सकते है) कि उसने वह काम करना सीख लिया है।

– व्यवहारवादियों ने बताया है कि अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी उद्दीपन के तत्काल बाद तथा बार-बार होने वालो सफल अनुक्रिया के फलस्वरूप उद्दीपन और अनुक्रिया में सम्बन्ध (बंध) स्थापित होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में व्यवहारवादियों ने उद्देश्यों का ऐसे प्रत्यक्ष व्यवहार के रूप में उल्लेख करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिन्हें देखा और मापा जा सके। सीखने के समय शिक्षार्थियों के व्यवहार में आए परिवर्तनों का निश्चय करने में तथा उनका इस प्रकार शिक्षण करने में कि उनमें वांछित व्यवहार-परिवर्तन आ सके। शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

अधिगम की प्रकृति :-

– 1. अधिगम एक विवेकपूर्ण क्रिया है।
2. अधिगम एक समायोजन की प्रक्रिया है।
3. अधिगम एक सामाजिक प्रक्रिया है।
4. अधिगम एक खोज की प्रक्रिया है।
5. अधिगम एक विकास की प्रक्रिया है।
6. अधिगम व्यवहार परिवर्तन है।
7. अधिगम एक समस्या समाधान प्रक्रिया है।
8. अधिगम सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार का होता है।
9. अधिगम मानव की एक प्रकृति है।
10. अधिगम एक सतत् एवं सक्रिय प्रक्रिया है।

शिक्षण और अधिगम का सम्बन्ध :-

– शिक्षक द्वारा किसी को सीखने में सहायता करने को शिक्षण कहा जाता है शिक्षक के शिक्षण की गुणवत्ता का शिक्षार्थियों के अधिगम और मूल्य की गुणवत्ता से सीधा संबंध होता है।

शिक्षण तथा अधिगम में संबंध :-

क्र.स.	उद्देश्य	अधिगम	शिक्षण
1.	ज्ञान	संकेत अधिनियम उद्दीपन अनुक्रिया अधिगम	स्मृति स्तर शिक्षण

Short Notes

2.	अवबोध	शाब्दिक श्रृंखला अधिनियम	अवबोध स्तर
3.	अनुप्रयोग	बहुभेदीय अधिगम	शिक्षण
4.	विश्लेषण	प्रत्यय अधिगम	–
5.	संश्लेषण	प्रत्यय अधिगम	चिंतन स्तर
6.	मूल्यांकन	अधिनियम अधिगम समस्या समाधान अधिगम	शिक्षण

शिक्षण एवं अधिगम-

- प्रायः शिक्षण को अधिगम का अभिन्न अंग माना जाता है। **किलपैट्रिक** ने कहा है कि शिक्षण और अधिगम में यही सम्बन्ध है, जो कि बेचने और खरीदने में हैं।

शिक्षण एवं अधिगम में अंतर:-

क्र.स.	आधार	शिक्षण	अधिगम
1.	क्रिया	शिक्षण एक सामाजिक क्रिया है। इसमें क्रियाओं का समन्वय होता है।	यह व्यक्तिगत क्रिया है।
2.	उद्देश्य	इसका उद्देश्य दूसरों को प्रभावित करना तथा उनके व्यवहार को परिवर्तित करना है।	इसका उद्देश्य निजी हित में नवीन व्यवहार अर्जित करना है।
3.	उपस्थित	शिक्षण में कम से कम दो व्यक्तियों की उपस्थिति अनिवार्य है।	अधिगम व्यक्तिगत प्रक्रिया है। प्रत्येक प्राणी निजी हित में ही सीखता है।
4.	बोध अथवा सूचक	शिक्षण शब्द में कृत्य का बोध होता है जिसमे लगातार लक्ष्य की ओर बढ़ने का आशय रहता है।	अधिगम शब्द निष्पति या सफलता का सूचक होता है।
5.	भाव	शिक्षण शब्द में कुछ देने का भाव होता है।	अधिगम शब्द में लेने का भाव होता है।
6.	पूर्ति	शिक्षण व अधिगम दोनों मिलकर शिक्षण चक्र बनाते है।	निरंतर क्रिया के कारण अधिगम की प्राप्ति होती है।

शिक्षण अधिगम व्यूह रचना एवं विधियाँ :-

- शिक्षक शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षण विधियों के द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त शिक्षण व्यूह रचना का चयन करता है।
- **स्ट्रेचर के अनुसार,** "शिक्षण व्यूह रचनाएं वे योजनाएं होती है जिसमें शिक्षण के उद्देश्यों, विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन, पाठ्य-वस्तु, कार्य विश्लेषण, अधिगम अनुभव तथा छात्रों की पृष्ठभूमि आदि को विशेष महत्ता दी जाती है।"

शिक्षण विधियाँ :-

- शिक्षण को रोचक, बोधगम्य, प्रभावी एवं सरल बनाने के लिए एक अध्यापक द्वारा काम में ली जाने वाली तकनीके शिक्षण विधियाँ कहलाती है। कक्षा-कक्ष में होने वाली अंत:प्रक्रिया इसमें आती है।

शिक्षण विधियों की परिभाषाएँ (Definations of Teaching methodology) :-

बाइनिंग एण्ड बाइनिंग के अनुसार– "शिक्षण पद्धति शिक्षा प्रक्रिया का गतिशील कार्य है।"

वैस्ले के अनुसार- "शिक्षण पद्धति शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिससे विद्यार्थियों को ज्ञान की प्राप्ति होती है।"

शिक्षण विधियों के प्रकार :-

- शिक्षण विधियों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते है-
  1. शिक्षक केन्द्रित विधियाँ (Teacher-centered methods)
  2. बाल केन्द्रित विधियाँ (Child-centered methods)

1. शिक्षक केन्द्रित विधियाँ (Teacher-centered methods)-

- (i) व्याख्यान विधि (Lecture method)
  (ii) कहानी विधि (Story method)

Short Notes

(iii) पाठ्य-पुस्तक विधि (Text Book Method)
(iv) व्याख्यान प्रदर्शन विधि (Lecture Demonstration Method)

विशेषताएँ :-

- इसमें शिक्षक मुख्य भूमिका में होता है तथा विद्यार्थी गौण होता है।
  अध्यापक सक्रिय रहता है तथा विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता होता है।
  यह वर्णनात्मक प्रकार की होती है।
  इसके द्वारा शिक्षण में औपचारिकता की मात्रा अधिक अर्थात् केवल मौखिक सम्प्रेषण होता है।
  इसके द्वारा स्मृति स्तर व पुनः स्मरण पर ध्यान देते हुए विद्यार्थियों को ज्ञानात्मक स्तर का ही ज्ञान दिया जाता है।
  शिक्षक केन्द्रित विधियों की प्रमुख कमी यह है कि इसमें विद्यार्थियों के विचारों और सृजनात्मकता आदि के लिए कोई स्थान नहीं होता है।

2. बाल केन्द्रित विधियाँ (Child-centered method)-

- जिन विधियों में बालक की रुचि, क्षमता, आयु, योग्यता, मनोदशा के अनुसार शारीरिक क्रियाएँ होती है उन्हें बालकेन्द्रित विधियाँ कहते है।
  (i) मॉण्टेसरी प्रणाली- प्रवर्तक- डॉ. मारिया मॉण्टेसरी
  (ii) किण्डर गार्टन पद्धति – प्रवर्तक - फ्रेडरिक फ्रोबेल
  (iii) खेल विधि- प्रवर्तक- हेनरी कॉल्डवेल कुक (पुस्तक – The Play Way), प्रयोगकर्ता- फ्रेडरिक फ्रोबेल
  (iv) डाल्टन विधि- प्रवर्तक- कुमारी हेलेन पार्क हर्स्ट
  (v) डैक्रोली प्रणाली- प्रवर्तक- डैक्रोली
  (vi) योजना/प्रायोजना विधि- प्रवर्तक- जॉन ड्यूवी, प्रयोगकर्ता - किलपैट्रिक

विशेषताएँ :-

- इन विधियों में शिक्षण के केन्द्र में बालक होता है तथा अध्यापक मार्गदर्शक की भूमिका में होता है।
  इन विधियों से करके सीखा जाता है। (करके सीखने के सिद्धांत पर आधारित)
  इसमें बालक की आवश्यकताओं, रुचि, स्तर, सृजनात्मकता आदि को ध्यान में रखा जाता है।
  इसमें बालक को स्वतंत्रतापूर्वक सीखने दिया जाता है।

लेखन शिक्षण विधियाँ :-

- **1. जेकटॉट विधि :-** इसमें विद्यार्थी स्वयं अपनी गलतियों को सुधारते है।
  2. पेस्टोलॉजी विधि :- सर्वप्रथम अक्षर ज्ञान करवाया जाता है तथा पहले उन वर्णों को सीखाया जाता है जो सरल है।
  3. श्रुति लेखन तथा स्वतंत्र अनुकरण विधि :- यह विधि अक्षरों व शब्दों को सीखने के बाद की विधि है। इसमें छात्र को शुद्ध लिखना सिखाया जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण विधि (माइक्रो टीचिंग) :-

- सूक्ष्म शिक्षण प्रशिक्षण प्रविधि का विकास स्टेन फोर्ड विश्वविद्यालय में सन् 1963 में **डी. एलेन** व उनके सहयोगियों (एचीसन व राबर्ट ब्रुश) ने किया। इसकी अवधारणा का विकास उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के बाद सर्वप्रथम अमेरिका में हुआ। भारत में सर्वप्रथम प्रयोग 1970 में तथा विकास 1975 के पश्चात् हुआ। सूक्ष्म अध्यापन प्रणाली शिक्षण की वह विधि है जिसके द्वारा छात्राध्यापक किसी शिक्षण कौशल को कम समय (5-10 मिनट) में छोटे समूह को (5-10 बच्चों को) पढ़ाकर अभ्यास किया जा सकता है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार शिक्षकों की भूमिका एवं उत्तर दायित्व :-

- धारा 23 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त शिक्षक निम्नलिखित कर्तव्यों का पालन करेगा-
  1. विद्यालय में उपस्थित होने में नियमितता और समय का पालन
  2. धारा 29 की उपधारा (2) के उपबंधों के अनुसार पाठ्यक्रम संचालित करना और उसे पूरा करना
  3. विनिर्दिष्ट समय के भीतर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को पूरा करना
  4. प्रत्येक बालक की शिक्षा ग्रहण करने के सामर्थ्य का निर्धारण करना और तदनुसार यथा अपेक्षित अतिरिक्त शिक्षण, यदि कोई हो, जोड़ना
  5. माता-पिता और संरक्षकों के साथ नियमित बैठके करना और बालक के बारे में उपस्थिति में नियमितता, शिक्षा ग्रहण करने की सामर्थ्य, शिक्षण में की गई प्रगति और किसी अन्य संसगत जानकारी के बारे में उन्हें अवगत कराना
  6. ऐसे अन्य कर्तव्यों का पालन करना, जो विहित किए जाएँ। धारा 28 के अनुसार कोई भी शिक्षक प्राइवेट ट्यूशन या शिक्षण कार्य नहीं करेगा।

Short Notes

मुश्किल परीक्षाएं भी आसान लगेगी

जब करेंगे लक्ष्य एप के संग तैयारी

मौका है, अपनी तैयारी को सिलेक्शन वाली तैयारी बनाने का

LIVE FROM CLASSROOM

ONLINE/OFFLINE COURSE

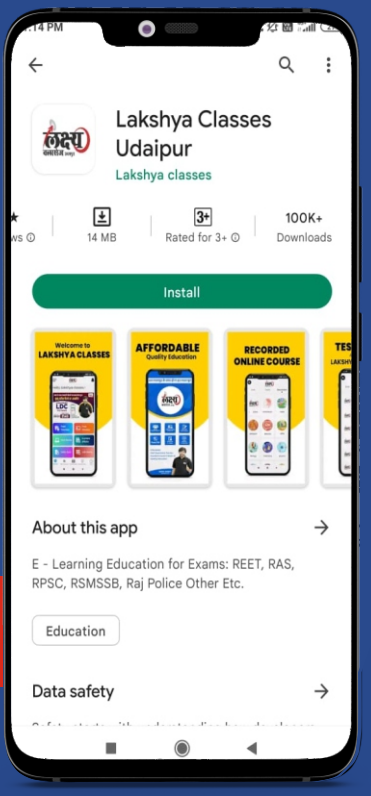

करें RAS की दमदार तैयारी 12th के बाद, कॉलेज के साथ

MASTER BATCH

RAS Foundation Batch (Pre + Mains)

RAS Prelims/PSI

RAS TARGET BATCH

LIBRARY MENTORSHIP PROGRAM

Scan to Download Lakshya App Now

Google play

INSTAGRAM | FACEBOOK | YOUTUBE | TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)

M. 6376957258, 6376491126

RAJASTHAN

BSTC

प्रवेश पूर्व परीक्षा

मानसिक योग्यता

Pre D.El.Ed. Examination 2024

विशेषताएँ

- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम,सरल भाषा एवं व्यावहारिक उदाहरणों का संकलन
- नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
- परीक्षोपयोगी संभावित प्रश्नोत्तरों का संग्रह

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™
M. 6376957258, 6376491126
Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)
3rd floor, E-112, Kalpatru Shopping Centre, Jodhpur

विषय - वस्तु

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	संख्या & अक्षर श्रृंखला (Number & Letter Series)	1-11
2.	लुप्त संख्या (Missing Number)	12-16
3.	कोडिंग-डिकोडिंग (Coding-Decoding)	17-24
4.	रक्त सम्बन्ध (Blood Relation)	25-33
5.	दिशा परीक्षण (Direction Test)	34-43
6.	घड़ी परीक्षण (Clock Test)	44-50
7.	कैलण्डर (Calender)	51-57
8.	सादृश्यता (Analogy)	58-66
9.	वर्गीकरण या बेमेल को अलग करना (Classification/Old One Out)	67-68
10.	वर्णमाला परीक्षण (Alphabet Test)	69-72
11.	तार्किक वेन आरेख (Logical Venn Diagram)	73-78
12.	पानी एवं दर्पण छवियाँ (Water and Mirror Image)	79-83
13	आकृतियों की गणना (Counting the Figure)	84-90
14.	क्रम परीक्षण (Ranking Test)	91-98
15.	बैठक व्यवस्था (Seating Arrangement)	99-103
16.	घन और पासा (Cube and Dice)	104-113
17.	आयु परीक्षण (Age Test)	114-118
18.	न्याय वाक्य (Syllogism)	119-132
19.	कथन और निष्कर्ष (Statement and Conclusion)	133-136
20.	कथन एवं तर्क (Statement & Arguments)	137-138
21.	कथन एवं कार्यवाही (Statement & Cource Of Action)	139-141
22.	कथन एवं पूर्वधारणाएँ (Statement & Assumptions)	142-143

1 अध्याय संख्या & अक्षर श्रृंखला (Number & Letter Series)

Short Notes

संख्या & अक्षर शृंखला (Number & Letter Series)

- इस अध्याय के अन्तर्गत प्रश्न में अंको अथवा अक्षरों (अंग्रेजी) की एक निश्चित श्रृंखला दी होती है जो एक विशेष नियमानुसार होती है हमें उस नियम का पता लगाकर ही अगली संख्या ज्ञात करनी होती है।
- श्रृंखला के प्रश्नों को हल करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें

1. गणितीय संक्रिया में काम आने वाली महत्वपूर्ण संख्याओं वर्ग संख्या, घन संख्या, अभाज्य संख्या, सम संख्या, विषम संख्या आदि को कण्ठस्थ याद रखे।

वर्ग संख्याएँ

$1^2 = 1$	$2^2 = 4$	$3^2 = 9$
$4^2 = 16$	$5^2 = 25$	$6^2 = 36$
$7^2 = 49$	$8^2 = 64$	$9^2 = 81$
$10^2 = 100$	$11^2 = 121$	$12^2 = 144$
$13^2 = 169$	$14^2 = 196$	$15^2 = 225$
$16^2 = 256$	$17^2 = 289$	$18^2 = 324$
$19^2 = 361$	$20^2 = 400$	$21^2 = 441$
$22^2 = 484$	$23^2 = 529$	$24^2 = 576$
$25^2 = 625$	$26^2 = 676$	$27^2 = 729$
$28^2 = 784$	$29^2 = 841$	$30^2 = 900$

घन संख्याएँ

$1^3 = 1$	$2^3 = 8$	$3^3 = 27$
$4^3 = 64$	$5^3 = 125$	$6^3 = 216$
$7^3 = 343$	$8^3 = 512$	$9^3 = 729$
$10^3 = 1000$	$11^3 = 1331$	$12^3 = 1728$

- अभाज्य संख्या-ऐसी संख्या जो 1 तथा स्वंय से भाज्य हो अभाज्य संख्या कहलाती है। 1 से 100 तक कुल 25 अभाज्य संख्या होती है। 2, 3, 5, 7, 11, 13, 17, 19, 23, 29, 31, 37, 41, 43, 47, 53, 59, 61, 67, 71, 73, 79, 83, 89, 97

2. श्रृंखला को हल करने के लिए कोई शॉर्ट ट्रिक नहीं है बल्कि इसका निरंतर अभ्यास ही आपको इस अध्याय पर मजबूत पकड़ बनाएगा।
3. प्रश्न की भाषा को समझकर प्रश्न को हल करने का प्रयास करे।
4. हमारे अनुभव के अनुसार प्रतियोगी परीक्षाओं में अंतर के नियम का सर्वाधिक प्रयोग होता है अतः इस नियम का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

महत्वपूर्ण नियम

Rule of Gap (अंतर का नियम)

- इस नियम के अनुसार दिए गए प्रश्न में पहली और दूसरी संख्या का अंतर, दूसरी और तीसरी संख्या का अंतर और आगे भी यही क्रम जारी रखते हुए अंतर की श्रृंखला का समूह ज्ञात करके उसी आधार पर अगली संख्या प्राप्त की जाती है। इस नियम के उदाहरण अग्रांकित है

वर्णमाला श्रृंखला

- इसके अन्तर्गत दिए गए प्रश्न में अंग्रेजी वर्णों की एक निश्चित श्रृंखला दी जाती है अतः इस श्रृंखला में वर्णों को उनके वर्णमाला क्रमांक देकर अंकीय श्रृंखला बनाई जाती है और प्रश्न को हल किया जाता है।

अंग्रेजी वर्णमाला श्रृंखला

- अंग्रेजी वर्णमाला 26 अक्षरों को विभिन्न प्रकार की श्रेणियों में क्रमित करके श्रेणी क्रम बनाया जाता है। वर्णमाला के अक्षरों की कोई न कोई एक निश्चित श्रेणी क्रम होती है।

अंग्रेजी वर्णमाला

Short Notes

अंग्रेजी वर्णमाला के अंक्षरों का स्थानीय क्रमांकित मान के साथ निरूपण								
A	B	C	D	E	F	G	H	I
1	2	3	4	5	6	7	8	9
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
10	11	12	13	14	15	16	17	18
S	T	U	V	W	X	Y	Z	
19	20	21	22	23	24	25	26	

अंग्रेजी वर्णमाला का विपरीत क्रम								
A	B	C	D	E	F	G	H	I
26	25	24	23	22	21	20	19	18
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
17	16	15	14	13	12	11	10	9
S	T	U	V	W	X	Y	Z	
8	7	6	5	4	3	2	1	

बड़े अक्षरों की शृंखला

- इस प्रकार की शृंखला के अंतर्गत कुछ अक्षर या अक्षर समूह एक निश्चित तरीके के आधार पर शृंखला के रूप में दिए होते हैं। इस शृंखला के एक या कुछ पद रिक्त होते है जिन्हें शृंखला के तरीके को ज्ञात करके करना होता है।
- इस प्रकार के प्रश्नों को हल करने के लिए आपको प्रत्येक अक्षर की वर्णमाला में स्थिति (Position) को याद कर लेना चाहिए तथा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वर्णमाला के वृत्तीय अवधारणा का ख्याल रहे, यानि की Z के बाद फिर A,B,C, D शुरू हो जाएगा।

छोटे अक्षरों की शृंखला

- इस प्रकार के प्रश्नों के अंतर्गत अक्षरों की एक शृंखला दी गई होती है। इस प्रकार की शृंखला अंग्रेजी वर्णमाला के छोटे अक्षरों को विभिन्न तरीकों में आवर्तित करके बनायी जाती है जो बायीं ओर से दायीं ओर किसी विशेष क्रम में बदलते हैं। शृंखला में एक से अधिक रिक्त स्थान हो सकते हैं। परीक्षार्थी को यह ज्ञात करना होता है कि यदि अक्षर इसी क्रम में बदलते रहें तो रिक्त स्थानों पर कौन-से अक्षर होने चाहिए। दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर शृंखला को पूर्ण करना होता है।

(A) शृंखला के अंतर्गत केवल एक समान समूह पुनरावृत्ति है।
(B) जब शृंखला में एक समान यह समूह की पुनरावृत्ति न हो बल्कि समूह के अन्तर किसी एक अक्षर की संख्या में लगातार वृद्धि होती जाए।
(C) शृंखला के प्रत्येक समूह में अलग-अलग अक्षरों की पुनरावृत्ति।
(D) शृंखला के अंतर्गत दो अक्षर समूहों का एकांतर में आना।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश :- (1-15)
नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अंक शृंखला दी गई है, जिसमें एक या एक से अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

1. **120, 99, 80, 63, 48, ?**
(a) 35 (b) 38 (c) 39 (d) 40

2. **0, 6, 24, 60, 120, 210, ?**
(a) 240 (b) 290 (c) 336 (d) 504

3. **4, 9, 25, ?, 121, 169, 289, 361**
(a) 49 (b) 64 (c) 36 (d) 81

4. **1, 3, 3, 6, 7, 9, ?, 12, 21**
(a) 10 (b) 11 (c) 12 (d) 13

5. **2, 5, 9, ?, 20, 27**
(a) 14 (b) 16 (c) 18 (d) 20

6. **1, 6, 15, ?, 45, 66, 91**
(a) 25 (b) 26 (c) 27 (d) 28

7. **22, 24, 28, ?, 52, 84**
(a) 38 (b) 36 (c) 42 (d) 46

8. **240, ?, 120, 40, 10, 2**
(a) 180 (b) 240 (c) 420 (d) 480

9. **28, 33, 31, 36, ?, 39**
(a) 32 (b) 34 (c) 38 (d) 40

10. **1, 5, 13, 25, 41, ?**
(a) 51 (b) 57 (c) 61 (d) 63

11. **6, 17, 39, 72, ?**
(a) 83 (b) 94 (c) 116 (d) 127

12. **2, 3, 5, 7, 11, ?, 17**
(a) 12 (b) 13 (c) 14 (d) 15

13. **1, 4, 27, 16, ?, 36, 343**
(a) 25 (b) 87 (c) 120 (d) 125

14. **1, 1, 4, 8, 9, 27, 16, ?**
(a) 32 (b) 64 (c) 81 (d) 256

15. **10, 100, 200, 310, ?**
(a) 400 (b) 410 (c) 430 (d) 420

निर्देश :- (16-25)
नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अक्षर शृंखला दी गई है, जिसमें एक या एक से अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

16. **A, C, F, J, ?, ?**
(a) L, P (b) M, O (c) O, U (d) R, V

17. **B, D, F, I, L, P, ?**
(a) R (b) T (c) S (d) U

18. **BMO, EOQ, HQS, ?**
(a) KSU (b) LMN (c) SOV (d) SOW

19. **R, U, X, A, D, ?**
(a) F (b) G (c) H (d) I

20. **a, d, c, f, ?, h, g, ?, i**
(a) e, j (b) e, k (c) f, j (d) j, e

21. **AC, FH, KM, PR, ?**
(a) UW (b) VW (c) UX (d) TV

22. **U, B, I, P, W, ?**
(a) D (b) F (c) Q (d) X

23. **Z, ?, T, ?, N, ?, H, ?, B**
(a) W, R, K, E (b) X, Q, K, E (c) X, R, K, E (d) W, Q, K, E

24. **A, G, L, P, S, ?**
(a) U (b) W (c) X (d) Y

25. **T, R, P, N, L, ?, ?**
(a) J, G (b) K, H (c) J, H (d) K, I

निर्देश :-(26-35)
नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में एक अक्षर-अंक शृंखला दी गई है जिसके एक या अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

26. **b3P, c6R, d12T, e24V, ?**
(a) f48X (b) f46X (c) f48W (d) g48X

27. **C3D, E7G, G16J, I35M, ?**
(a) K74P (b) K70Q (c) K54R (d) K36I

28. **1ZA, 3YB, 6XC, 10WD, ?**
(a) 14VE (b) 15UV (c) 12VE (d) 15VE

29. **B2D, E3H, I4M, ?**
(a) N5R (b) N5T (c) N5S (d) N5Q

Short Notes

30. 4EZ 5GY 7IX ? 14MV 19OU
(a) 10KW (b) 10LW (c) 9KW (d) 10KY

31. Z3a, W5d, T8g, Q12j, ?
(a) M16n (b) N17m (c) N16k (d) K17n

32. Z1A, X2D, V6G, T21J, R88M, P445P, ?
(a) N2676S (b) N2676T (c) T2670N (d) T2676N

33. G4T, ? , M20P, P43N, S90L
(a) G4T (b) J9R (c) M20P (d) P43N

34. D-4, F-6, H-8, J-10, ?, ?
(a) K-12, M-13 (b) L-12, M-14
(c) L-12, N-14 (d) K-12, M-14

35. 2B, 4C, 8E, 14H, ?
(a) 16K (b) 20I (c) 20L (d) 22L

निर्देश :-(36-50)
निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न में अक्षरों का कौन-सा समूह दी गई शृंखला में खाली स्थानों पर क्रमवार रखने पर शृंखला को पूरा करेगा?

36. ab_babc_ab_b_bcb_b
(a) c b c a a (b) c a b a c (c) a b c b a (d) a c a c a

37. __cb__aca__bba__ac__bacac
(a) bcbca (b) cbaca (c) abcba (d) abccb

38. d__cdd_ccd_ddcc_
(a) cccd (b) dddc (c) dcdd (d) cddc

39. ipi_upog_pig_pogi_ _g
(a) upgii (b) puigp (c) giupi (d) iupgg

40. l _ b _ u b _ u b t _ b l u _ t u b
(a) u b t l u (b) u t l u b (c) t u l bu (d) b u t l u

41. a_ba_c_aad_aa_ea
(a) babbd (b) babbc (c) bacde (d) babbb

42. _bac_ac_acb_ _ba
(a) cbbac (b) abbac (c) cabbc (d) accbb

43. k__mk__lmkkl__kk__mk
(a) lklm (b) lkml (c) lkmk (d) lkmm

44. ba__b__aab__a__b
(a) abba (b) abab (c) baab (d) babb

45. ba__cb__b__bab__
(a) acbb (b) bcaa (c) cbab (d) bacc

46. abca__bcaab__ca__bbc__a
(a) abba (b) baba (c) bbaa (d) abac

47. a__bbc__aab__cca__bbcc
(a) abba (b) caba (c) caab (d) acba

48. ba__ba__bac__acb__cbac
(a) cbac (b) ccba (c) bcba (d) bbca

49. a__bb__caaab__bcc__aaaa
(a) abcc (b) accb (c) acbc (d) acbb

50. aab__bbaaa__cbba__abc__ba
(a) bcca (b) bcac (c) cbab (d) cbba

Short Notes

व्याख्या

1. **[a]**
यहाँ

120,	99,	80,	63,	48,	?
–21	–19	–17	–15	–13	

अत: लुप्त पद= 48 – 13 = 35

2. **[c]**
यहाँ

0 ,	6 ,	24 ,	60 ,	120 ,	210 ,	?
1^3-1	2^3-2	3^3-3	4^3-4	5^3-5	6^3-6	7^3-7

अत: लुप्त पद= $7^3 - 7$
= 343 – 7
= 336

3. **[a]**
यहाँ अभाज्य संख्याओं के वर्ग की शृंखला है-

4 ,	9 ,	25 ,	? ,	121 ,	169 ,	289 ,	361
2^2	3^2	5^2	7^2	11^2	13^2	17	19

अत: लुप्त पद= $7^2 = 49$

4. **[d]** यहाँ दो शृंखला बन रही है-

1, 3, 3, 6, 7, 9, ?, 12, 21

[a]

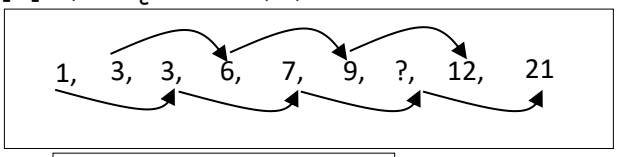

3 ,	6 ,	9 ,	12
3 × 1	3 × 2	3 × 3	3 × 4

[b]

1,	3,	7,	?,	21,
+2	+4	+6	+8	

अत: लुप्त पद= 7+6 = 13

5. **[d]**
यहाँ

2,	5,	9,	?,	20,	27,
+3	+4	+5	+6	+7	

अत: लुप्त पद= 9 + 5 = 14

6. **[d]**
यहाँ

1,	6,	15,	?,	45,	66,	91,
+5	+9	+13	+17	+21	+25	
+4	+4	+4	+4	+4		

अत: लुप्त पद= 15 + 13 = 28

Short Notes

7. [b]

यहाँ

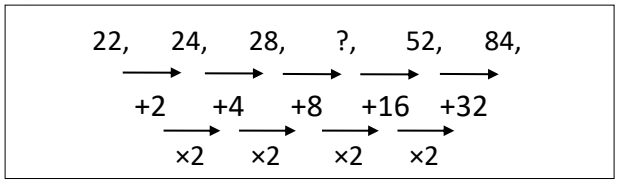

अत: लुप्त पद= 28 + 8 = 36

8. [b]

यहाँ

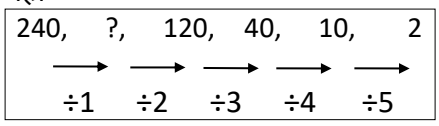

अत: लुप्त पद= 240 ÷ 1 = 240

9. [b]

यहाँ

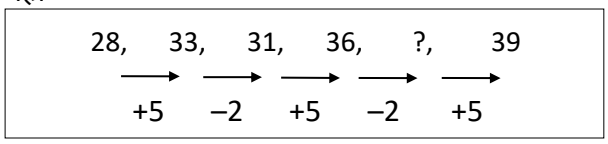

अत: लुप्त पद= 36 − 2 = 34

10. [c]

यहाँ

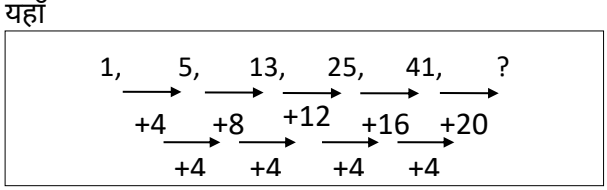

अत: लुप्त पद= 41 + 20 = 61

11. [c]

यहाँ

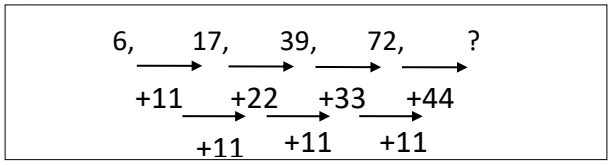

अत: लुप्त पद= 72 + 44 = 116

12. [b]

यहाँ यह अभाज्य संख्याओं की शृंखला है, अत: लुप्त पद= 11 के बाद की अभाज्य संख्या = 13

13. [d]

यहाँ

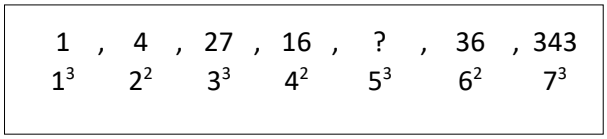

अत: लुप्त पद= 5^3 = 125

14. [b]

यहाँ

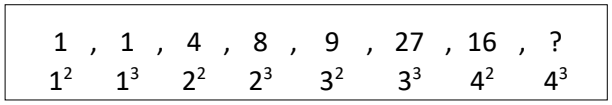

अत: लुप्त पद= 4^3 = 64

Short Notes

15. [c]

यहाँ

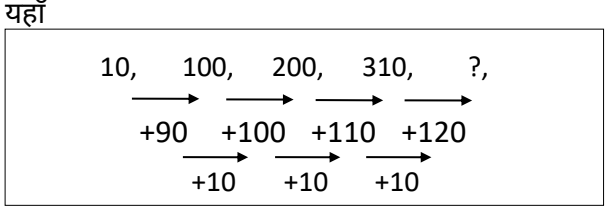

अत: लुप्त पद= 310 + 120 = 430

16. [c]

यहाँ

A $\xrightarrow{+2}$ C $\xrightarrow{+3}$ F $\xrightarrow{+4}$ J $\xrightarrow{+5}$ O $\xrightarrow{6}$ U

अत: लुप्त पद= O, U

17. [b] यहाँ

B $\xrightarrow{+2}$ D $\xrightarrow{+2}$ F $\xrightarrow{+3}$ I $\xrightarrow{+3}$ L $\xrightarrow{+4}$ P $\xrightarrow{+4}$ T

अत: लुप्त पद= T

18. [a]

यहाँ

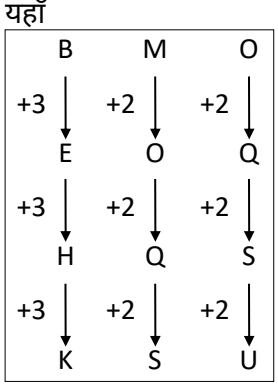

अत: लुप्त पद= KSU

19. [a]

यहाँ

A $\xrightarrow{+6}$ G $\xrightarrow{+5}$ L $\xrightarrow{+4}$ P $\xrightarrow{+3}$ S $\xrightarrow{+2}$ U

अत: लुप्त पद= U

20. [b] यहाँ

R $\xrightarrow{+3}$ U $\xrightarrow{+3}$ X $\xrightarrow{+3}$ A $\xrightarrow{+3}$ D $\xrightarrow{+3}$ G

अत: लुप्त पद= G

21. [a]

यहाँ

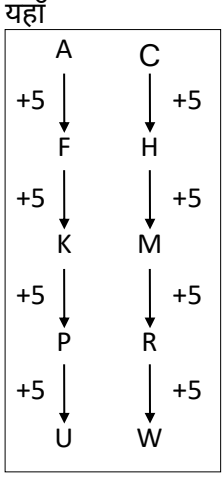

अत: लुप्त पद= UW

Short Notes

22. [a]

– यहाँ

U $\xrightarrow{+7}$ B $\xrightarrow{+7}$ I $\xrightarrow{+7}$ P $\xrightarrow{+7}$ W $\xrightarrow{+7}$ D

अत: लुप्त पद= D

23. [d]

– यहाँ

Z $\xrightarrow{-3}$ W $\xrightarrow{-3}$ T $\xrightarrow{-3}$ Q $\xrightarrow{-3}$

N $\xrightarrow{-3}$ K $\xrightarrow{-3}$ H $\xrightarrow{-3}$ E $\xrightarrow{-3}$ B

अत: लुप्त पद= W, Q, K, E

24. [a]

यहाँ दो शृंखला चल रही है-

a $\xrightarrow{+2}$ c $\xrightarrow{+2}$ (e) $\xrightarrow{+2}$ g $\xrightarrow{+2}$ i

तथा

$d \xrightarrow{+2} f \xrightarrow{+2} h \xrightarrow{+2} (j)$

अत: लुप्त पद= e, j

25. [c]

यहाँ T $\xrightarrow{-2}$ R $\xrightarrow{-2}$ P $\xrightarrow{-2}$ N $\xrightarrow{-2}$ L $\xrightarrow{-2}$ J $\xrightarrow{-2}$ H

अत: लुप्त पद= J, H

26. [a]

यहाँ

b	3	p
+1 ↓	×2 ↓	+2 ↓
c	6	R
+1 ↓	×2 ↓	+2 ↓
d	12	T
+1 ↓	×2 ↓	+2 ↓
e	24	V
+1 ↓	×2 ↓	+2 ↓
f	48	X

अत: लुप्त पद= f48X

27. [a]

यहाँ

C	3	D
+2 ↓	×2+1 ↓	+3 ↓
E	7	G
+2 ↓	×2+2 ↓	+3 ↓
G	16	J
+2 ↓	×2+3 ↓	+3 ↓
I	35	M
+2 ↓	×2+4 ↓	+3 ↓
K	74	P

अत: लुप्त पद= K74P

Short Notes

28. [d]

यहाँ

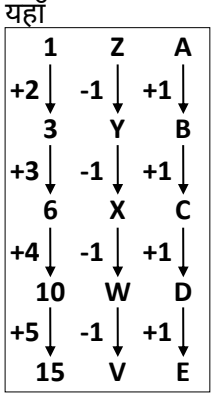

अत: लुप्त पद= 15 VE

29. [c]

यहाँ

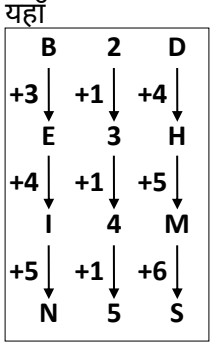

अत: लुप्त पद= N 5 S

30. [a]

यहाँ

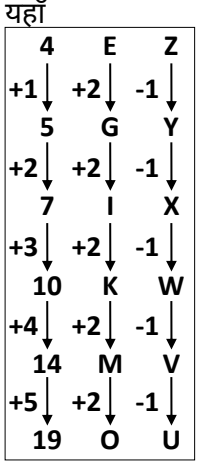

अत: लुप्त पद= 10KW

31. [b]

यहाँ

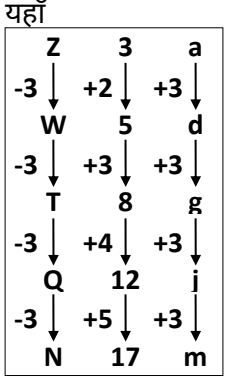

अत: लुप्त पद= N17m

Short Notes

मुश्किल परीक्षाएं भी आसान लगेगी

जब करेंगे लक्ष्य एप के संग तैयारी

मौका है, अपनी तैयारी को सिलेक्शन वाली तैयारी बनाने का

LIVE FROM CLASSROOM

ONLINE/OFFLINE COURSE

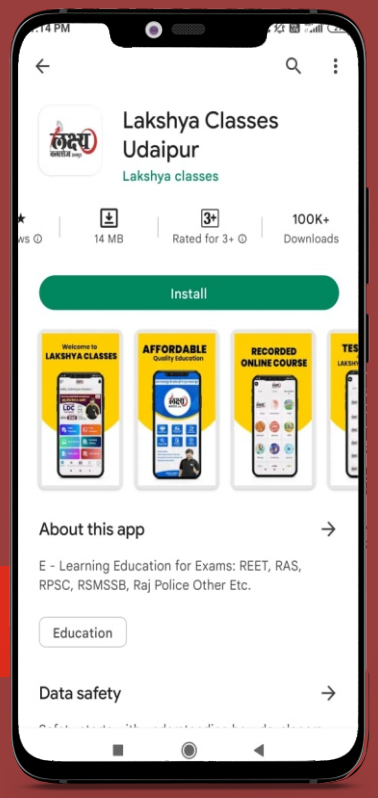

- Test Series
- Recorded Courses
- Downloadable Classes
- Free Quizzes
- Video & Audio Lecture
- Previous Year Paper
- Free Current Affair
- Doubt Solving Session

TEACHING COURSES

HM | PTI | CTET | व्याख्याता | सेकंड ग्रेड शिक्षक | EMRS | NVS

थर्ड ग्रेड शिक्षक (REET मुख्य परीक्षा) | REET पात्रता परीक्षा | KVS

Scan to Download Lakshya App Now

Google play

INSTAGRAM | FACEBOOK | YOUTUBE | TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)

M. 6376957258, 6376491126

RAJASTHAN

BSTC

प्रवेश पूर्व परीक्षा

राजस्थान सामान्य ज्ञान

Pre D.El.Ed. Examination 2024

विशेषताएँ

- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम,सरल भाषा एवं व्यावहारिक उदाहरणों का संकलन
- नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
- परीक्षोपयोगी संभावित प्रश्नोत्तरों का संग्रह

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज TM

M. 6376957258, 6376491126

Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)

3rd floor, E-112, Kalpatru Shopping Centre, Jodhpur

विषय - वस्तु

01 राजस्थान का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार	4 - 9
2.	राजस्थान के भौतिक प्रदेश	10 - 17
3.	राजस्थान की जलवायु एवं मानसून तंत्र	18 - 21
4.	अपवाह तंत्र एवं भू-जल प्रबंधन	22 - 32
5.	सिंचाई परियोजना एवं जल संरक्षण तकनीकें	33 - 40
6.	वन एवं प्राकृतिक वनस्पति	41 - 42
7.	वन्यजीव संरक्षण एवं जैव विविधता	43 - 48
8.	राजस्थान की मृदाएं	49 - 50
9.	राजस्थान की कृषि	51 - 52
10.	राजस्थान की जनसंख्या	53 - 58
11.	धात्विक एवं अधात्विक खनिज	59 - 71
12.	ऊर्जा संसाधन	72 - 77
13.	पर्यटन स्थल	78 - 80
14.	यातायात के साधन	81 - 85

02 राजस्थान का इतिहास

1.	प्राचीन सभ्यताएँ	87 - 90
2.	राजवंश	91 - 131
3.	1857 ई. की क्रांति	132 - 135
4.	जनजातीय आन्दोलन	136
5.	किसान आन्दोलन	137 - 140
6.	प्रजामंडल आन्दोलन	141 - 146
7.	राजस्थान का एकीकरण	147 - 148
8.	प्रमुख व्यक्तित्व	149 - 154

03 राजस्थान की कला एवं संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	दुर्ग	156 - 162
2.	महल	163 - 167
3.	हवेलियाँ	168 - 169
4.	बावड़ियाँ	170 - 171
5.	छतरियाँ	172 - 174
6.	मन्दिर	175 - 177
7.	मकबरे, मस्जिद और दरगाह	178 - 179
8.	चित्रकला	180 - 184
9.	लोक कला	185 - 186
10.	हस्तकला	187 - 188
11.	लोक देवता	189 - 192
12.	लोक देवियाँ	193 - 197
13.	संत-सम्प्रदाय	198 - 205
14.	लोकनृत्य	206 - 210
15.	लोक नाट्य	211 - 212
16.	लोक गीत एवं संगीत	213 - 216
17.	भाषा एवं बोलियाँ	217 - 219
18.	राजस्थानी साहित्य	220 - 225
19.	मेले	226 - 227
20.	त्योहार	228 - 229
21.	जनजातियाँ	230 - 232
22.	लोक वाद्य यंत्र	233
23.	वेशभूषा एवं आभूषण	234 - 242
24.	रीति-रिवाज	243 - 247

04 राजस्थान की अर्थव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान उद्योग एवं औद्योगिक क्षेत्र	249 - 258
2.	गरीबी एवं बेरोजगारी	259 - 265
3.	राजस्थान की प्रमुख विकास परियोजनाएँ	266 - 274
4.	राजस्थान बजट - 2024-25	275 - 280

05 राजस्थान की राजव्यवस्था

1.	राज्यपाल	282 - 287
2.	मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	288 - 292
3.	राज्य विधानसभा	293 - 300
4.	उच्च न्यायालय	301 - 304
5.	राज्य लोक सेवा आयोग	305 - 307
6.	राज्य मानवाधिकार आयोग	308 - 310
7.	राज्य महिला आयोग	311 - 312
8.	लोकायुक्त	313 - 315
9.	राज्य निर्वाचन आयोग	316 - 317
10.	राज्य सूचना आयोग	318 - 319
11.	जिला प्रशासन	320 - 324
12.	स्थानीय स्वशासन	325 - 335

05 अभ्यास प्रश्न

1.	अभ्यास प्रश्न	337 - 343

राजस्थान का भूगोल

1
अध्याय

राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार

Short Notes

राजस्थान का परिचय

- राजस्थान क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का सबसे बड़ा राज्य है और यह देश के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल **3,42,239** वर्ग किलोमीटर है, (**1,32,139** वर्ग मील) जो भारत के कुल क्षेत्रफल का **10.41%** या **1/10वाँ** भाग या दसवां हिस्सा है।
- विश्व के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान 0.25% है।
- (1 नवम्बर, 2000 को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ राज्य के अलग होने से राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बना।)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के पाँच बड़े राज्य क्रमशः राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि राजस्थान श्रीलंका से पाँच गुना, चेकोस्लोवाकिया से तीन गुना, इजराइल से सत्रह गुना, ब्रिटेन से लगभग दुगुना है।
- जापान, कांगो रिपब्लिक, फिनलैंड और जर्मनी के क्षेत्रफल राजस्थान के क्षेत्रफल लगभग बराबर है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान के तीन बड़े जिले –
  1. जैसलमेर, 2. बीकानेर, 3. बाड़मेर
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान के तीन छोटे जिले–
  1. दूदू, 2. जयपुर शहर, 3. जोधपुर शहर

राजस्थान की स्थिति, विस्तार एवं आकृति:–

राजस्थान की ग्लोबीय स्थिति

अक्षांशीय स्थिति	देशांतरीय स्थिति
अक्षांशीय दृष्टि से राजस्थान उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।	देशांतरीय दृष्टि से राजस्थान पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।

Short Notes

- ग्लोब या विश्व के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति उत्तर–पूर्व (इशान कोण) में है।
- राजस्थान की आकृति विषम चतुष्कोणीय चतुर्भुजाकार या पतंगाकार है।
- इस आकृति के बारे में सर्वप्रथम **'टी.एच. हेंडले'** ने बताया।

राजस्थान का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार:–

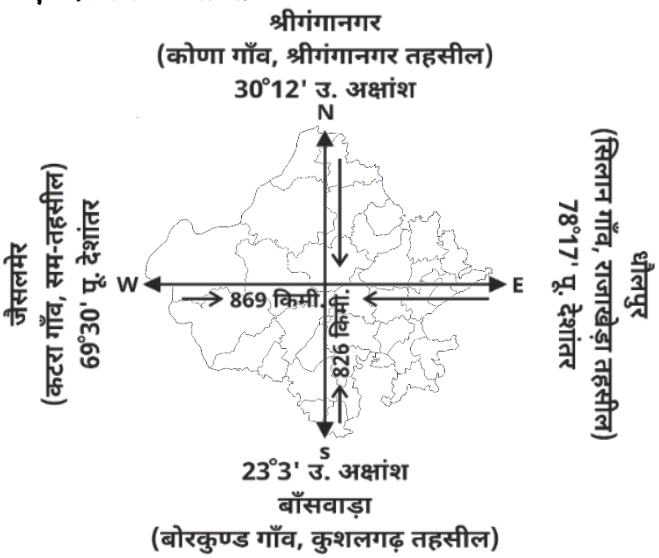

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार:–

- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार **23°3' उत्तरी अक्षांश से 30°12'** उत्तरी अक्षांश तक है।
- राजस्थान का **अक्षांशीय विस्तार 7°9'** अक्षांशों के मध्य है।
- राजस्थान के उत्तर से दक्षिण लम्बाई 826 किलोमीटर है।
- राजस्थान का उत्तरतम बिन्दु कोणा गाँव (श्रीगंगानगर) है।
- राजस्थान का दक्षिणतम बिन्दु बोरकुण्ड (बाँसवाड़ा) है।

राजस्थान का देशांतरीय विस्तार:–

- राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार **69°30' पूर्वी देशांतर से 78°17' पूर्वी देशांतर** तक है।
- राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 8°47' देशांतरों के मध्य है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम चौड़ाई 869 **किलोमीटर** है।
- राजस्थान का पूर्वी बिन्दु सिलाना गाँव (धौलपुर) है।
- राजस्थान का पश्चिमी बिन्दु कटरा गाँव (जैसलमेर) है।

कर्क रेखा $23\frac{1}{2}^{o}$ उत्तरी अक्षांश जिसे कर्क रेखा भी कहते है, यह राजस्थान के दक्षिणी भाग से निकलती है।

- यह भारत के आठ राज्यों गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम से होकर गुजरती है।

राजस्थान का विस्तार:–

स्थलीय सीमा–

- राजस्थान की कुल **स्थलीय सीमा 5,920 किलोमीटर** है, जिसमें से **1,070 किलोमीटर** अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा **4,850 किलोमीटर** अन्तर्राज्यीय सीमा है।

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा–

- राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है, जिसका नाम **'रेडक्लिफ रेखा'** है।

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के बीच निर्धारित की गई है।
- रेडक्लिफ लाइन का निर्धारण 17 अगस्त, 1947 को हुआ था।
- रेडक्लिफ रेखा पर भारत के 3 राज्य और 2 केन्द्र शासित प्रदेश स्थित हैं–

  तीन राज्य–
  1. पंजाब
  2. राजस्थान
  3. गुजरात

Short Notes

दो केन्द्र शासित प्रदेश–
1. जम्मू–कश्मीर
2. लद्दाख

- रेडक्लिफ लाइन की कुल लम्बाई 3,323 किलोमीटर है, जिसमें से राजस्थान के साथ 1,070 किलोमीटर की सीमा लगती है यानी कि कुल रेडक्लिफ का एक–तिहाई भाग राजस्थान के साथ संलग्न है।
- इस अन्तर्राष्ट्रीय रेखा का नामकरण ब्रिटिश 'वकील सिरिल रेडक्लिफ' के नाम पर किया गया था।
- अन्तर्राष्ट्रीय रेखा की शुरुआत श्रीगंगानगर जिले के हिन्दूमल कोट से शुरू होकर बाड़मेर जिले के भागल गाँव (बाखासर) तक है।
- राजस्थान के 6 जिले अन्तर्राष्ट्रीय रेखा पर स्थित हैं जो कि निम्नलिखित हैं–

1.	श्रीगंगानगर	210 किलो मीटर
2.	बीकानेर	168 किलो मीटर
3.	जैसलमेर	464 किलो मीटर
4.	बाड़मेर	228 किलो मीटर
5	अनुपगढ	
6	फलौदी	

- अन्तर्राष्ट्रीय–सीमा पर स्थित जिलों के अतिरिक्त सबसे नजदीक जिला–मुख्यालय अनुपगढ तथा सबसे दूर धौलपुर है।
- रेडक्लिफ पर पाकिस्तान के 9 जिले स्थित हैं– पंजाब प्रान्त के 3 जिले बहावलनगर, बहावलपुर, रहीमयार खां जिले तथा सिंध प्रांत के 6 जिले घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं।

अन्तर्राज्यीय–सीमा–

- राजस्थान राज्य की स्थलीय सीमा पाँच राज्यों के साथ लगती है।
- यह अन्तर्राज्यीय–सीमा 4,850 किलोमीटर है।
- राजस्थान के उत्तर में पंजाब राज्य है।
- राजस्थान के उत्तर–पूर्व में हरियाणा राज्य है।
- राजस्थान के पूर्व में उत्तर प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य है।

पंजाब राज्य–

- यह राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा 89 किलोमीटर बनाता है।
- पंजाब राज्य की सीमा पर स्थित राजस्थान के दो जिले हैं। श्रीगंगानगर पंजाब के साथ सर्वाधिक व हनुमानगढ़ न्यूनतम सीमा बनाता है।

हरियाणा राज्य–

- हरियाणा राज्य राजस्थान के साथ 1,262 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- हरियाणा के साथ राजस्थान के हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूँ, नीम का थाना, कोटपूतली बहरोड., खैरथल, डिग, अलवर जिले सीमा बनाते हैं–

उत्तर प्रदेश राज्य–

- उत्तर प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 877 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- उत्तर प्रदेश के साथ राजस्थान के दो जिले सीमा बनाते हैं–
  1. भरतपुर 2. धौलपुर
  3. डीग
- उत्तर प्रदेश के दो जिलों की सीमाएँ राजस्थान के साथ लगती हैं–
  1. मथुरा 2. आगरा

मध्य प्रदेश राज्य–

- मध्य प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 1,600 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- **राजस्थान के 10 जिले मध्य प्रदेश के साथ सीमा बनाते हैं–**
  1. धौलपुर 2. करौली
  3. सवाई माधोपुर 4. कोटा
  5. बाराँ 6. झालावाड़ (सर्वाधिक)
  7. चित्तौड़गढ़ 8. भीलवाड़ा (न्यूनतम)
  9. प्रतापगढ़ 10. बाँसवाड़ा।
- कोटा मध्य प्रदेश के साथ में दो बार सीमा बनाता है।

गुजरात राज्य–

- गुजरात राज्य राजस्थान के साथ 1,022 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- गुजरात के साथ राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, सिरोही, सांचोर व बाड़मेर जिले सीमा बनाते हैं।
- राज्य के सर्वाधिक निकट स्थित बंदरगाह कांडला बंदरगाह (गुजरात) है।
- राजस्थान के 29 जिले अन्तर्राज्यीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित है।
- राजस्थान के चार ऐसे जिले हैं जो दो–दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैं–
  1. हनुमानगढ़ – पंजाब व हरियाणा।
  2. भरतपुर – हरियाणा व उत्तर प्रदेश।
  3. धौलपुर – उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश।
  4. बाँसवाड़ा – मध्य प्रदेश व गुजरात।
- राजस्थान के 2 जिले अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित हैं–
  1. श्रीगंगानगर – पाकिस्तान व पंजाब।
  2. बाड़मेर – पाकिस्तान व गुजरात।
- राजस्थान के 21 ऐसे जिले हैं जिनकी सीमा किसी भी राष्ट्र तथा राज्य से नहीं लगती है।
- कोटा एवं चित्तौड़गढ़ राजस्थान के वे जिले है जो एक ही राज्य के साथ 2 बार सीमा बनाते है।

राजस्थान के संभाग:–

- वर्तमान में राजस्थान में 10 संभाग हैं।
- नवीनतम संभाग बांसवाडा, सीकर, पाली है। इसकी घोषणा 17 मार्च, 2023 को की गई तथा इनका गठन 7 अगस्त, 2023 को हुआ बांसवाडा संभाग, उदयपुर संभाग का विभाजन करके तथा सीकर संभाग, जयपुर व बीकानेर संभाग का विभाजन करके एंव पाली संभाग, जोधपुर संभाग का विभाजन करके बनाया गया । भरतपुर की घोषणा तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया ने 04 जून, 2005 को की थी।
- अप्रैल, 1962 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने संभागीय व्यवस्था को समाप्त कर दिया तथा 26 जनवरी, 1987 को हरिदेव जोशी ने संभागीय व्यवस्था को पुन: शुरू किया और अजमेर को छठा संभाग बनाया।
- जिले के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी को जिलाधीश (वर्तमान में जिला कलेक्टर) एवं संभाग स्तर पर मुख्य प्रशासनिक अधिकारी को संभागीय आयुक्त के पदनाम से संबोधित किया गया।

1. जयपुर संभाग

- जयपुर संभाग में 7 जिले है– जयपुर ग्रामीण, जयपुर शहरी, अलवर, दौसा, दूदू, कोटपूतली– बहरोड, खैरथल–तिजारा
- जयपुर संभाग में क्षेत्रफल के हिसाब से बडा जिला जयपुर ग्रामीण एंव छोटा जिला दूदू है।

2. जोधपुर संभाग–

- जोधपुर संभाग में 6 जिले है – बीकानेर ,हनुमानगढ ,गंगानगर, फलौदी, बाडमेर, जैसलमेर, बालोतरा
- जोधपुर संभाग में क्षेत्रफल के हिसाब से बडा जिला जैसलमेर तथा छोटा जिला जोधपुर शहर है।

3. बीकानेर संभाग–

- बीकानेर संभाग में 4 जिले है– बीकानेर, हनुमानगढ, अनूपगढ ।
- बीकानेर संभाग में क्षेत्रफल के हिसाब से बडा जिला बीकानेर एंव छोटा जिला गंगानगर है।

4. कोटा संभाग–

- कोटा संभाग में 4 जिले है – कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड.
- कोटा संभाग में क्षेत्रफल के हिसाब से बडा जिला बारां तथा छोटा जिला कोटा है।

5. अजमेर संभाग–

- अजमेर संभाग में 7 जिले है– अजमेर, नागौर, टोंक, डीडवाना–कुचामन,शाहपुरा,ब्यावर, केकडी

6. उदयपुर संभाग–

- **उदयपुर** संभाग में 5 जिले है – उदयपुर, भीलवाडा, राजसमंद, चितौडगढ, सलूम्बर है।

7. भरतपुर संभाग–

- भरतपुर संभाग में 6 जिले है भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, गंगापुरसिटी, डीग।

8. बांसवाड़ा संभाग–

- बांसवाड़ा संभाग में 3 जिले है– बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ ।
- बांसवाड़ा संभाग में क्षेत्रफल के हिसाब से बडा जिला बांसवाड़ा तथा छोटा जिला डूंगरपुर है।
- यह अंतर्राज्यीय सीमा गुजरात व मध्य प्रदेश से बनाता है।

Short Notes

Short Notes

9. पाली संभाग–

- पाली संभाग में 4 जिले है – पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही।
- पाली संभाग में क्षेत्रफल की दृष्टि से बड़ा जिला पाली तथा छोटा जिला सांचौर है।

10. सीकर संभाग–

- सीकर संभाग में 4 जिले है सीकर, झुंझुनूं, चुरु, नीम का थाना।
- सीकर संभाग में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला चुरु तथा छोटा जिला नीम का थाना है।

राजस्थान के जिले–

- वर्तमान में राजस्थान में 50 जिले हैं।
- राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 19 नये जिलों की घोषणा की है जिससे राजस्थान में जिलों की संख्या बढ़कर 50 हो गयी है।
- 19 नये जिले – बालोतरा, ब्यावर, अनूपगढ़, डीडवाना, डीग, दूदू, गंगापुर सिटी, जयपुर ग्रामीण, जयपुर शहर, जोधपुर ग्रामीण, जोधपुर शहर, कोटपुतली, खैरथल, नीम का थाना, फलौदी, सांचौर, केकड़ी, शाहपुरा, सलूम्बर।
- नये जिले के गठन से संबंधित कमेटी रामलुभाया कमेटी थी।
- एकीकरण के समय सबसे अन्त में सम्मिलित होने वाला जिला अजमेर था, जिसे 26 वें जिले के रूप में मान्यता मिली।
- 27 वाँ जिला धौलपुर 15 अप्रैल, 1982 को बना।
- 28 वाँ जिला बाराँ 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 29 वाँ जिला दौसा 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 30 वाँ जिला राजसमन्द 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 31 वाँ जिला हनुमानगढ़ 12 जुलाई, 1994 को बना।
- 32 वाँ जिला करौली 19 जुलाई, 1997 को बना।
- 33 वाँ जिला प्रतापगढ़ 1 अप्रैल, 2008 को बना।

राजस्थान के भौगोलिक विशेषताओं वाले क्षेत्र एवं उनके उपनाम

कांठल

- प्रतापगढ़ के आसपास का क्षेत्र माही नदी के किनारे होने के कारण इसका नाम कांठल पड़ा।

गिरवा

- उदयपुर, के आसपास पहाड़ियों से घिरे भाग को गिरवा कहते हैं जिसका सामान्य अर्थ पहाड़ियों की मेखला है।

भौमट

- डूँगरपुर, पूर्वी सिरोही व उदयपुर जिलों का आदिवासी क्षेत्र।

शेखावाटी

- झुंझुनूँ, चूरू, सीकर, जिलों को शेखावाटी के नाम से जाना जाता है।

ढूँढाड़

- आधुनिक जयपुर के पास बहने वाली ढूँढ नदी के समीपवर्ती भाग को ढूँढाड़ कहते थे।

गुर्जर प्रदेश

- जोधपुर और पाली का क्षेत्र।

वल्ल और दुंगल

- बाड़मेर, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़ क्षेत्र।

स्वर्णगिरी

- जालोर का क्षेत्र।

ऊपरमाल का पठार

- मुख्य रूप से भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) एवं बिजौलिया (भीलवाड़ा) के मध्य पठारी भू–भाग।

देशहरो–

- जरगा और रागा के बीच पहाड़ी भाग जो वर्ष भर हरा–भरा रहता है, इसलिए इस प्रदेश को देशहरो कहा जाता था।

थली

- चूरू, सरदारशहर का क्षेत्र।

छप्पन का मैदान–

- प्रतापगढ़ एवं बाँसवाड़ा के मध्य भू–भाग को **छप्पन का मैदान** कहा जाता है क्योंकि इस भू–भाग में छप्पन गाँवों अथवा नदी–नालों का समूह है।

मेवल व देवलिया–

- बाँसवाड़ा और डूँगरपुर के मध्य का भू–भाग है। मेव (डूंगर पहाड़ी) स्थित होने के कारण।

मत्स्य प्रदेश-
- अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली जिले का पूर्वी भाग।

यौद्धेय-
- श्रीगंगानगर के निकट का प्रदेश।

शौरसेन-
- भरतपुर, करौली, धौलपुर का क्षेत्र।

शिवी-
- उदयपुर, चित्तौड़गढ़ का क्षेत्र।

बागड़-
- डूँगरपुर, बाँसवाड़ा का क्षेत्र।

अहिच्छत्रपुर-
- नागौर के चारों ओर का क्षेत्र।

राजस्थान की उत्पत्ति
- महाद्वीपीय -विस्थापन का सिद्धांत वेगनर ने दिया।
- वेगनर ने बताया कि सर्वप्रथम पृथ्वी पर एक ही भू-भाग था।
- अल्फ्रेड वेगेनर के अनुसार महाद्वीपों के संयुक्त रूप को '**पेंजिया**' तथा इसके चारों ओर जलीय आकृति '**पेंथालासा**' कहा।
- प्री-केम्ब्रियन काल में इस पेंजिया का विखण्डन हो गया तथा जिस टुकड़े का खिंचाव उत्तर की ओर हुआ उसे '**अंगारा लैंड**' तथा जिसका खिंचाव दक्षिण की ओर हुआ उसे '**गोंडवाना लैंड**' नाम दिया गया।
- अंगारा लैंड तथा गोंडवाना लैंड के बीच में स्थित जलीय -आकृति को वेगनर ने '**टेथिस महासागर**' नाम दिया था।
- राज्य की उत्पत्ति में अंगारा लैंड का कोई योगदान नहीं है।
- राजस्थान का उत्तर-पश्चिम मरुस्थलीय प्रदेश टेथिस-महासागर के अवशेष हैं।
- अरावली पर्वतीय प्रदेश व दक्षिण-पूर्वी पठारी भाग गोंडवाना लैंड के अवशेष हैं।
- राजस्थान में अधिकांशत: स्थलाकृतियों के निर्माण में टेथिस महासागर का योगदान है।

♦♦♦♦

Short Notes

2 अध्याय

राजस्थान के भौतिक प्रदेश

Short Notes

राजस्थान के भौतिक प्रदेश–

– राजस्थान के भौतिक प्रदेशों का सर्वप्रथम वर्गीकरण वर्ष 1967 में प्रो. **वी.सी. मिश्रा** ने अपनी पुस्तक '**राजस्थान का भूगोल**' में किया, जिसका प्रकाशन वर्ष 1968 में नेशनल बुक ट्रस्ट ने किया।

– प्रोफेसर वी. सी. मिश्रा ने राजस्थान राज्य को स्थलाकृति, भौगोलिक स्थिति, कृषि और फसल पैटर्न और कुछ आर्थिक विशेषताओं के आधार पर सात भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया है –

1. नहरी क्षेत्र
2. पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
3. अर्द्ध शुष्क क्षेत्र
4. अरावली प्रदेश
5. पूर्वी कृषि, औद्योगिक प्रदेश
6. दक्षिण–पूर्वी कृषि प्रदेश
7. चम्बल बीहड़ प्रदेश

– सन् 1971 में डॉ. रामलोचन सिंह ने राजस्थान को भौगोलिक दृष्टि से तीन श्रेणियों में विभक्त किया–

1. दो वृहत् प्रदेश– अरावली पर्वतीय प्रदेश, दक्षिण–पूर्वी पठारी प्रदेश
2. चार उप प्रदेश– पश्चिमी राजस्थान, पश्चिमी मरुस्थल, पूर्वी राजस्थान, पूर्वी मैदान
3. बारह लघु प्रदेश

– सन् 1994 में डॉ. हरिमोहन सक्सेना ने व प्रो. तिवारी ने "**राजस्थान का प्रादेशिक भूगोल**" नामक पुस्तक में उच्चावच एवं भौगोलिक संरचना के आधार पर राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में विभाजित किया गया–

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (थार का मरुस्थल)
2. अरावली पर्वतीय प्रदेश
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश
4. दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश (हाड़ौती का पठार)

राजस्थान का उच्चावच प्रारूप के अनुसार भौगोलिक प्रदेश

(i) 51% मैदानी प्रदेश
(ii) 31% उच्च पठारी प्रदेश
(iii) 11% निम्न भूमि क्षेत्र
(iv) 6% पर्वत शृंखला
(v) 1% उच्च पर्वत शिखर

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

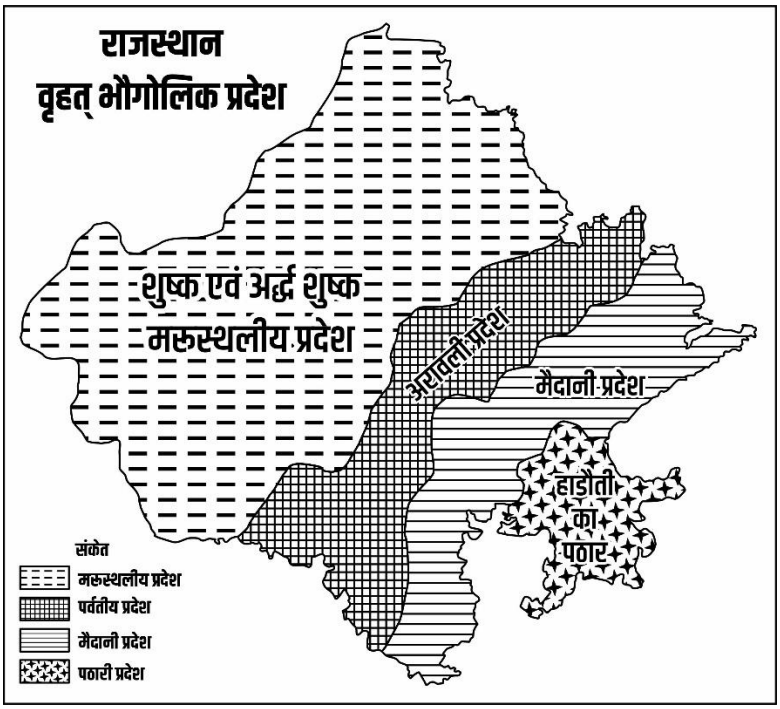

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (थार का मरुस्थल) की उत्पत्ति–

– राजस्थान में अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में स्थित विशिष्ट भौगोलिक प्रदेश पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (थार का मरुस्थल) की उत्पत्ति नूतन महाकल्प (नियोजोइक एरा, चतुर्थक युग) के प्लीस्टोसीन काल में टेथिस सागर के अवशेष के रूप में हुई है।

– सर सिरिल फॉक्स तथा बैलेण्ड फोर्ड के अनुसार – टर्शियरी काल (साइनोजोइक एरा– तृतीयक महाकल्प) तक थार का मरुस्थल समुद्र के नीचे था। चतुर्थक महाकल्प के प्लीस्टोसीन काल में समुद्र के निरन्तर पीछे हटने, सूखने, मानवीय क्रियाकलापों जैसे – अतिचारण, निर्वनीकरण, मृदा एवं जल का अनुचित प्रबंधन के कारण मरुस्थलीय दशाओं का विकास हुआ।

थार का मरुस्थल टेथिस सागर का अवशेष है जिसके प्रमाण निम्नलिखित है -

- (i) पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में स्थित खारे पानी की झीलें
- (ii) टर्शियरी कालीन अवसादी चट्टानों में जीवाश्म खनिज जैसे - कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस के भण्डार
- (iii) जैसलमेर के कुलधरा गाँव से व्हेल मछली के अवशेष मिले।

थार का मरुस्थल ग्रेट पेलिओ आर्कटिक अफ्रीका मरुस्थल का पूर्वी भाग है-

- ग्रेट पेलिओ आर्कटिक अफ्रीका मरुस्थल का विस्तार उत्तरी अफ्रीका से फिलिस्तीन-अरब-ईरान होता हुआ भारत के उत्तर - पश्चिम के पंजाब-हरियाणा - राजस्थान - गुजरात राज्यों में विस्तृत हैं। ग्रेट पेलिओ आर्कटिक अफ्रीका मरुस्थल को उत्तरी अफ्रीका में सहारा मरुस्थल, अरब-ईरान देशों में कबीर, पाकिस्तान में चेलिस्तान तथा भारत में थार का मरुस्थल कहा जाता है।

थार के मरुस्थल का विस्तार-

- थार रेगिस्तान क्षेत्रफल के हिसाब से दुनिया का 17वां सबसे बड़ा रेगिस्तान है और भारत और पाकिस्तान के मध्य फैला हुआ है।
- थार रेगिस्तान भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों (हरियाणा, पंजाब, गुजरात और राजस्थान) में फैला हुआ है।
- भारत में थार मरुस्थल का सबसे बड़ा विस्तार राजस्थान में तथा सबसे छोटा विस्तार हरियाणा में है।
- राजस्थान में थार के मरुस्थल का विस्तार राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 61.11% (2,09,042 वर्ग किलोमीटर) है जबकि राजस्थान में मुख्य मरुस्थल 1,75,000 वर्ग किलोमीटर है।
- राजस्थान में थार रेगिस्तान की अक्षांशीय सीमा 25°N और 30°N के बीच स्थित है।
- राजस्थान में थार के मरुस्थल का देशान्तरीय विस्तार $69^0$30' पूर्वी देशान्तर से $70^0$45'पूर्वी देशान्तर के मध्य है।
- थार रेगिस्तान 640 किलोमीटर लम्बा और 300-360 किलोमीटर चौड़ा है।
- थार रेगिस्तान की समुद्र तल से औसत ऊंचाई 250 मीटर है, जबकि उत्तर पूर्व में औसत ऊंचाई 300 मीटर और दक्षिण की ऊंचाई 150 मीटर है।
- थार रेगिस्तान की ढलान उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर फैली हुई है।
- प्रशासनिक दृष्टि से थार के मरुस्थल में राजस्थान के 12 जिले अवस्थित है। (श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूँ, सीकर, नागौर, जोधपुर, पाली, जालोर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर)

थार के मरुस्थल से संबंधित महत्त्वपूर्ण बिंदू

- **थली -** थार के मरुस्थल का स्थानीय नाम।
  धोरे- मरुस्थल में पाई जाने वाली रेतीली बलुई मृदा से निर्मित लहरदार स्थलाकृति को स्थानीय भाषा में धोरे कहा जाता है।
- **लू-** थार के मरुस्थल में ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली गर्म एवं शुष्क पवन**,** जो स्थानीय गर्म पवन का उदाहरण है।
- **स्थानीय पवन-** तापमान व वायुदाब में विषमता के कारण किसी स्थान विशेष से चलने वाली पवन स्थानीय पवन कहलाती है। स्थानीय पवन दो प्रकार की होती है-गर्म एवं ठण्डी।
- **भभूल्या-**थार के मरुस्थल में आकस्मिक आने वाले वायु के चक्रवात को स्थानीय भाषा में भभूल्या कहा जाता है।
- **चक्रवात-** ग्रीष्म ऋतु में केन्द्र में अधिक तापमान एवं निम्न वायुदाब के कारण पवन तीव्रगति से परिधि (बाहर) से केन्द्र की ओर गति करती है तथा गर्म होकर ऊपर उठती है**,** इस अवस्था को चक्रवात कहा जाता है।
- **मावठ-** थार के मरुस्थल में शीत ऋतु में भूमध्य सागरीय पश्चिमी विक्षोभों से होने वाली वर्षा मावठ कहलाती है।
- मावठ रबी की फसल (गेहूँ) के लिए अधिक उपयोगी है इस कारण महावट (मावठ) को गोल्डन ड्रॉप्स (सुनहरी बूँदें) कहा जाता है।
- **पुरवईया-** ग्रीष्मकालीन दक्षिण पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा में आने वाली मानसूनी हवाओं को स्थानीय भाषा में पुरवईया कहा जाता है।
- पुरवईया राजस्थान में अधिकांश जिलों में 90% वर्षा करती हैं।
- **रन-** बालुका स्तूपों के मध्य स्थित दलदली क्षेत्र रन/टाट/तल्ली/अभिनति कहलाता है। राजस्थान में सर्वाधिक रन जैसलमेर में है।
  जैसे -पोकरण, बरमसर, कानोत, भाकरी, लवा (जैसलमेर), थोब (बाड़मेर), बाप (जोधपुर)
- '**थोब**' रन क्षेत्रफल की दृष्टि से थार के मरुस्थल का सबसे बड़ा रन है।
- **बॉलसन-** प्लाया के सूखने से निर्मित मैदान **बॉलसन** कहलाता है।

राजस्थान में मरुस्थल के प्रकार-

1. हम्मादा- चट्टानी/पथरीला मरुस्थल - पोकरण (जैसलमेर), फलोदी, बालोतरा ।

2. रैग- यह एक मिश्रित मरुस्थल है जो हम्मादा के चारों ओर पाया जाता है। यह जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर में आते हैं।

3. इर्ग- इसे सम्पूर्ण मरुस्थल व महान मरुस्थल कहा जाता है। इसमें जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, नागौर, चूरू, सीकर, झुंझुनूँ क्षेत्र आते हैं।

Short Notes

Short Notes

लघु मरुस्थल–

– कच्छ रन (गुजरात) से बीकानेर के मध्य स्थित मरुस्थल को लघु मरुस्थल की संज्ञा दी गई है।

थार के मरुस्थल का वर्गीकरण–

जलवायु के आधार पर–

1. शुष्क रेतीला प्रदेश– 0–25 सेमी. वर्षा

2.अर्द्ध शुष्क प्रदेश– 25–40 सेमी. वर्षा

– शुष्क रेतीला व अर्द्ध शुष्क प्रदेश को 25 सेमी. वर्षा रेखा (250 मिमी.) विभाजित करती है।

(1) शुष्क रेतीला प्रदेश–

– 25 सेमी. (250 मिमी.) वर्षा रेखा के पश्चिम में स्थित प्रदेश जहाँ 25 सेमी. से कम वर्षा होती है।
– 25 सेमी. वर्षा रेखा (250 मिमी.) शुष्क रेतीले प्रदेश की पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है।

शुष्क मरुस्थल को पुन: दो भागों में विभाजित किया गया है–

– (अ) बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश – 41.50 प्रतिशत।
(ब) बालुका स्तूप युक्त प्रदेश – 58.50 प्रतिशत।

(अ) बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश–

– शुष्क रेतीले प्रदेश का वह भाग जहाँ बालुका स्तूप (धोरे) नहीं पाए जाते हैं।
– इसमें परतदार (अवसादी) चट्टानें पाई जाती है।
– शुष्क रेतीले प्रदेश का 41.50 प्रतिशत है।
– बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश का विस्तार जैसलमेर (सर्वाधिक), बाड़मेर, जोधपुर में है।
– हम्मादा, रैग, मगरा, लाठी सीरीज, चाँदन नलकूप, आकलगाँव जीवाश्म पार्क और कुलधरा ग्राम।

मगरा–

– बालोतरा (बाड़मेर) से पोकरण (जैसलमेर) के मध्य स्थित अवशिष्ट पहाड़ियाँ।

लाठी सीरीज–

– जैसलमेर से मोहनगढ़ तक 64 किलोमीटर क्षेत्र में फैली एक भूगर्भीय जल पट्टी है।
– जैसलमेर में ट्रियासिक युगीन अवसादी चट्टानों का जमाव है, जो मीठे जल के पट्टी व स्टील ग्रेड चूना पत्थर के लिए प्रसिद्ध है।
– लाठी सीरीज में सेवण घास पाई जाती है जो प्रोटीन युक्त घास है।

चाँदन नलकूप–

– लाठी सीरीज में जैसलमेर में चाँदन नामक स्थान पर स्थित नलकूप जहाँ से आस–पास के क्षेत्र में जलापूर्ति होती है।
– इसे थार का घड़ा भी कहा जाता है। ये एक भूगर्भीय जल पट्टी का उदाहरण है।

आकल गाँव जीवाश्म पार्क–

– जैसलमेर में राष्ट्रीय मरु उद्यान में आकल गाँव में स्थित जीवाश्म पार्क जहाँ पर जुरैसिक कालीन प्राकृतिक वनस्पति के अवशेष मिले हैं–
क्रिटेशियस काल – ज्वालामुखी क्रिया।
ट्रियासिक काल – रेंगने वाले जीवों का काल।
जुरैसिक काल – घने जंगलों का विकास।

कुलधरा ग्राम–

– बालुका मुक्त प्रदेश में स्थित जैसलमेर का वह गाँव जहाँ से व्हेल मछली या डायनासोर के अवशेष मिले हैं।
– कुलधरा ग्राम में राजस्थान के पहले कैक्टस गार्डन की स्थापना की गई है।

(ब) बालुका स्तूप युक्त प्रदेश–

– शुष्क रेतीले प्रदेश में स्थित वह क्षेत्र जहाँ बालुका स्तूपों की प्रधानता होती है।
– थार के मरुस्थल बालू रेत (रेतीली बलुई) मृदा से निर्मित लहरदार स्थलाकृति बालुका स्तूप कहलाती है।
– बालुका स्तूपों के मध्य मार्ग को कारवां (घासी) कहा जाता है जहाँ से ऊँटों का समूह गुजरता है।
– यह जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, दक्षिणी श्रीगंगानगर क्षेत्र में पाए जाते हैं।
– विशेषता – इर्ग, बालुका स्तूप, खड़ीन।

प्लाया झील–

– प्लाया स्पेनिश भाषा का शब्द है, जिसका तात्पर्य शुष्क प्रदेशों में उच्च भूमि से घिरी निम्न भूमि (बेसिन)।
– थार के मरुस्थल में बालुका स्तूपों के मध्य स्थित निम्न भूमि जहाँ वर्षा जल एकत्रित होने से बनी अस्थायी झील का निर्माण होता है।
– राजस्थान में सर्वाधिक प्लाया झीलें जैसलमेर में हैं।

(2) अर्द्ध शुष्क प्रदेश–

– पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में स्थित वह भू–भाग जहाँ 25–50 सेमी. वर्षा होती है।
– अर्द्ध शुष्क प्रदेश का विस्तार– शुष्क रेतीला मैदान तथा अरावली पर्वतीय प्रदेश के मध्य पाया जाता है।
– 25 सेमी. वर्षा रेखा अर्द्ध शुष्क प्रदेश की पश्चिमी सीमा का निर्धारण करती है।

अरावली पर्वतीय प्रदेश–
- 40 सेमी. वर्षा रेखा अर्द्धशुष्क प्रदेश की पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है।
- उत्तरी सीमा का निर्धारण घग्घर नदी करती है।

अर्द्ध शुष्क प्रदेश का वर्गीकरण–
- भौगोलिक संरचना के आधार पर
  (i) घग्घर प्रदेश
  (ii) शेखावाटी प्रदेश
  (iii) नागौरी उच्च भूमि
  (iv) गौडवाड़ प्रदेश

(i) घग्घर प्रदेश–
- श्रीगंगानगर– हनुमानगढ़ में घग्घर नदी द्वारा निर्मित मैदानी प्रदेश।
- प्राचीन काल में यह क्षेत्र यौद्धेय प्रदेश कहलाता था (यौद्धेय जाति का निवास क्षेत्र)
- हनुमानगढ़ में घग्घर नदी निर्मित मैदानी भाग को स्थानीय भाषा में नाली कहा जाता है।
- घग्घर दोआब प्रदेश– सतलज व घग्घर नदी के बीच की भूमि।``
- सेम की समस्या (जल उत्प्लावन की समस्या)– नहरी क्षेत्र के आस–पास भूमिगत जल रिसाव (केशाकर्षण) के कारण भूपटल की ऊपरी परत का दलदली होना तथा मृदा में लवणीयता की मात्रा में वृद्धि होना। श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ सेम की समस्या से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र हैं।

(ii) शेखावाटी प्रदेश–
- चूरू, झुंझुनूँ व सीकर का क्षेत्र है।
- प्राचीन काल में शेख सामंतों का क्षेत्राधिकार था।
- यह राजस्थान के अन्त: प्रवाह या आंतरिक प्रवाह क्षेत्र का भाग है।
- शेखावाटी प्रदेश की मुख्य नदी कांतली नदी है।

(iii) नागौरी उच्च भूमि–
- नागौर में 300 से 500 मीटर ऊँची अरावली से पृथक् उच्च भूमि क्षेत्र है।
- नागौरी उच्च भूमि सोडियम लवणों की अधिकता के कारण यहाँ लवणीय झीलें (नमकीन झीलें) सर्वाधिक हैं।

(iv) गौडवाड़ प्रदेश (लूणी बेसिन)–
- पाली–जालोर–बाड़मेर–जोधपुर के मध्य स्थित है।
- प्राचीन काल में गौड़ राजपूतों का क्षेत्राधिकार था।

छप्पन की पहाड़ियाँ–
- पश्चिमी राजस्थान का माउण्ट आबू पीपलूद ग्राम को कहा जाता है।
- यहाँ 56 गुम्बदाकार पहाड़ियाँ स्थित हैं, जो बालोतरा (बाड़मेर) से सिवाणा (बाड़मेर) क्षेत्र में स्थित है।
- इसी पहाड़ी पर नाकोड़ा पर्वत बालोतरा (बाड़मेर) में स्थित है।

जसवंतपुरा की पहाड़ियाँ–
- यह पहाड़ी जालोर में स्थित है।
- इस पहाड़ी पर डोरा पर्वत 869 मीटर, इसराना भाखर 839 मीटर, रोजा भाखर 730 मीटर, झारोल 588 मीटर, सुंधा पर्वत 450 मीटर।
- पश्चिमी राजस्थान की सबसे ऊँची पर्वत चोटी डोरा पर्वत है।

ग्रेनाइट पर्वत–
- ग्रेनाइट पर्वत जालोर में स्थित है (जालोर को ग्रेनाइट सिटी कहा जाता है।)

2. अरावली पर्वतीय प्रदेश

अरावली पर्वतीय प्रदेश की उत्पत्ति–
- अरावली का शाब्दिक अर्थ पर्वतों की शृंखला है जिसे विष्णु पुराण में सुमेर पर्वत/मेरु पर्वत / परिपत्र पर्वत कहा गया है।
- अरावली पर्वतीय प्रदेश की उत्पत्ति 4.88 अरब वर्ष पूर्व आद्य महाकल्प (एजोइक एरा, प्री पैल्योजोइक एरा, पूर्व प्राथमिक महाकल्प) के प्री–क्रेम्बियन काल में गौण्डवाना लैण्ड में वलन की क्रिया से पर्वतों की एक शृंखला के रूप में निर्माण हुआ जिसे अरावली पर्वतमाला कहा गया।
- अरब सागर को अरावली का गर्भ गृह कहा जाता है।
- उच्चावच की दृष्टि से अरावली पर्वतमाला भारत के प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश का भाग है।
- अरावली पर्वतमाला से पूर्व देहली क्रम भी चट्टानों का विस्तार था जिसे राजस्थान में तीन भागों में विभाजित किया गया –
  (i) अलवर समूह – अलवर
  (ii) अजबगढ़ समूह – सिरोही
  (iii) रायलो समूह – बाड़मेर

Short Notes

Short Notes

अरावली पर्वतमाला का विस्तार–

- अरावली पर्वतमाला के उत्तरी भाग का आकार भेड़पीठनुमा तथा दक्षिणी भाग का आकार पंखाकार है।
- इसका विस्तार भारत के तीन राज्यों गुजरात, राजस्थान, हरियाणा तथा केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली में है।
- राजस्थान में अरावली का लगभग 80% भाग स्थित है।
- भारत में अरावली का विस्तार पालनपुर (गुजरात) से रायलसीमा (रायसीना) दिल्ली तक 692 किलोमीटर है।
- राजस्थान में अरावली पर्वतमाला का विस्तार खेड़ब्रह्म (ब्रह्मखेड़ा)/सिरोही से खेतड़ी/झुंझुनूँ तक 550 किलोमीटर है।
- अरावली पर्वतमाला अक्षांशीय विस्तार 23°20′ उत्तरी अक्षांश से 28°20′ उत्तरी अक्षांश के मध्य है।
- अरावली पर्वतमाला का देशांतरीय विस्तार 72°10′ पूर्वी देशान्तर से 77°03′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है।
- अरावली पर्वतीय प्रदेश राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 9.3% भाग है तथा इसमें लगभग 10% जनसंख्या निवास करती है।
- राजस्थान में अरावली का विस्तार दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व दिशा में है।

अरावली पर्वतीय प्रदेश का वर्गीकरण–

- अरावली पर्वतीय प्रदेश को ऊँचाई के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया गया है–
  (A) उत्तरी अरावली, (B) मध्य अरावली, (C) दक्षिण अरावली

1. उत्तरी अरावली–

- उत्तरी अरावली प्रशासनिक दृष्टि से चार जिलों – जयपुर, अलवर, सीकर, झुंझुनूँ में विस्तृत है।
- उत्तरी अरावली की औसत ऊँचाई 450 मीटर है।

उत्तरी अरावली की प्रमुख चोटियाँ निम्नलिखित है –

- (i) रघुनाथगढ़ (सीकर) – 1,055 मीटर
  (ii) खोह (जयपुर) – 920 मीटर
  (iii) भरौच (अलवर) – 792 मीटर
  (iv) बरवाड़ा (जयपुर) – 786 मीटर
  (v) बबाई (झुंझुनूँ) – 780 मीटर
  (vi) बिलाली (अलवर) – 775 मीटर
  (vii) बैराठ (जयपुर) – 704 मीटर
  (viii) सरिस्का (अलवर) – 677 मीटर
  (ix) भानगढ़ (अलवर) – 649 मीटर
  (x) जयगढ़ (जयपुर) – 648 मीटर
  (xi) नाहरगढ़ (जयपुर) – 599 मीटर
  (xii) बालागढ़ (अलवर) – 597 मीटर
- उत्तरी अरावली में कोई दर्रा नहीं है।

2. मध्य अरावली–

- मध्य अरावली का विस्तार अजमेर जिले में विस्तृत है।
- मध्य अरावली की औसत ऊँचाई – 500–700 मीटर

मध्य अरावली की प्रमुख चोटियाँ निम्नलिखित है –

- (i) गोरमजी – अजमेर – 934 मीटर
  (ii) मेरियाजी (टॉडगढ़)–अजमेर – 933 मीटर
  (iii) तारागढ़ – अजमेर – 873 मीटर
  (iv) नागपहाड़ – अजमेर – 795 मीटर

मध्य अरावली के प्रमुख दर्रे निम्नलिखित हैं–

- (i) बर दर्रा – पाली (मारवाड़ तथा मेरवाड़ा को जोड़ता है NH–162 गुजरता है।)
  (ii) अरनिया – अजमेर
  (iii) सुराघाट – अजमेर
  (iv) पीपली – अजमेर
  (v) परवेरिया– अजमेर
  (vi) शिवपुरी – अजमेर
  (vii) झीलवाड़ा – अजमेर

3. दक्षिणी अरावली–

- दक्षिण अरावली का विस्तार राजसमंद, सिरोही व उदयपुर जिलों में हैं।
- दक्षिण अरावली की औसत ऊँचाई 900 मीटर है।

दक्षिण अरावली की प्रमुख चोटियाँ निम्नलिखित है–

- (i) गुरुशिखर – सिरोही – 1,722 मीटर
  (ii) सेर – सिरोही – 1,597 मीटर
  (iii) देलवाड़ा – सिरोही – 1,442 मीटर
  (iv) जरगा – उदयपुर – 1,431 मीटर
  (v) अचलगढ़ – सिरोही – 1,380 मीटर
  (vi) कुम्भलगढ़ – राजसमंद – 1,224 मीटर
  (vii) ऋषिकेश – सिरोही – 1,017 मीटर
  (viii) कमलनाथ – उदयपुर – 1,001 मीटर
  (ix) सज्जनगढ़ – उदयपुर – 938 मीटर
  (x) सायरा – उदयपुर – 900 मीटर
  (xi) लीलागढ़ – उदयपुर – 874 मीटर
  (xii) नागपानी – उदयपुर – 867 मीटर
  (xiii) गोगुन्दा – उदयपुर – 840 मीटर

Short Notes

- राजस्थान में अरावली की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ सिरोही जिले में हैं जबकि राजस्थान में अरावली की सर्वाधिक चोटियाँ उदयपुर जिले में हैं।

दक्षिण अरावली के प्रमुख दर्रे निम्नलिखित हैं-

- (i) फुलवारी की नाल – उदयपुर
- (ii) देसूरी की नाल – पाली
- (iii) जीलवा / पगल्या नाल – उदयपुर
- (iv) कामली घाट – राजसमंद
- (v) गोरम घाट – राजसमंद
- (vi) हाथीगुढ़ा दर्रा – राजसमंद
- (vii) केवड़ा की नाल – उदयपुर
- (viii) देबारी दर्रा – उदयपुर
- (ix) हाथी दर्रा – उदयपुर

अरावली के प्रमुख पठार-

- उड़िया का पठार- सिरोही में स्थित राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार (1,360 मीटर ऊँचाई)।
- आबू का पठार- सिरोही में उड़िया के पठार के दक्षिण में स्थित राजस्थान का दूसरा सबसे ऊँचा पठार (1,295 मीटर ऊँचाई)।
- भोराठ का पठार- गोगुन्दा (उदयपुर) से कुम्भलगढ़ (राजसमंद) के मध्य स्थित 1,225 मीटर उच्च पठारी क्षेत्र।
- मेसा का पठार- चित्तौड़गढ़ में बेड़च तथा गम्भीरी नदियों द्वारा अपरदित पठार (620 मीटर ऊँचाई)।
- मानदेसरा का पठार- चित्तौड़गढ़
- लसाड़िया का पठार-जयसमंद झील के पूर्व में स्थित उबड़ खाबड़ पठारी क्षेत्र (राजस्थान का सबसे कटा-फटा पठार है।)
- देशहरो का पठार-उदयपुर में जरगा तथा रागा की पहाड़ियों के मध्य स्थित वर्ष भर हरा भरा रहने वाला पठारी क्षेत्र।
- ऊपरमाल का पठार-बिजौलिया से भैंसरोड़गढ़ के मध्य स्थित पठार क्षेत्र।
- भोमट का पठार-उदयपुर, डूँगरपुर
- काकनवाड़ी का पठार, अलवर

अरावली के प्रमुख पर्वत एवं पहाड़ियाँ-

- **गिरवा-** उदयपुर के आस-पास पाई जाने वाली अर्द्धचंद्राकार या तश्तरीनुमा पहाड़ियों को स्थानीय भाषा में **गिरवा** कहा जाता है।
- **भाकर-**पूर्वी सिरोही में स्थित तीव्र ढाल वाली पहाड़ियाँ **भाकर** कहलाती है।
- **मेवल-** डूँगरपुर, बाँसवाड़ा के मध्य स्थित पहाड़ियों को स्थानीय भाषा में **मेवल** कहा जाता है।
- **मगरा-**उदयपुर के उत्तर पश्चिम में स्थित अवशिष्ट पहाड़ियाँ **मगरा** कहलाती है। जैसे - माकड़ का मगरा, बांकी का मगरा, कामन मगरा, लेगा मगरा आदि।

उत्तरी अरावली की पहाड़ियाँ-

- (i) पालखेत की पहाड़ियाँ
- (ii) लोहागढ़ पर्वत
- (iii) भोजागढ़ पर्वत
- (iv) अधवाड़ा पर्वत
- (v) नेहरा पर्वत
- (vi) तोरावाटी की पहाड़ियाँ

→ झुंझुनूँ

- (vii) मालखेत की पहाड़ियाँ
- (viii) खण्डेला की पहाड़ियाँ
- (ix) जीणमाता की पहाड़ियाँ
- (x) हर्ष पर्वत
- (xi) नेछवा पहाड़ी

→ सीकर

- (xii) सेवर की पहाड़ियाँ
- (xiii) बैराठ की पहाड़ियाँ
- (xiv) मनोहरपुरा की पहाड़ियाँ
- (xv) बीजक की पहाड़ियाँ
- (xvi) चुलगिरी
- (xvii) झालाना डूँगरी
- (xviii) कालीखेह पहाड़ी

→ जयपुर

- (xix) नीलकण्ठ की पहाड़ी
- (xx) कालीघाटी की पहाड़ी
- (xxi) उदयनाथ की पहाड़ी
- (xxii) हर्षनाथ की पहाड़ी

→ अलवर

- (xxiii) देवगिरि की पहाड़ी - दौसा

मुश्किल परीक्षाएं भी आसान लगेगी

जब करेंगे लक्ष्य एप के संग तैयारी

मौका है, अपनी तैयारी को सिलेक्शन वाली तैयारी बनाने का

LIVE FROM CLASSROOM

ONLINE/OFFLINE COURSE

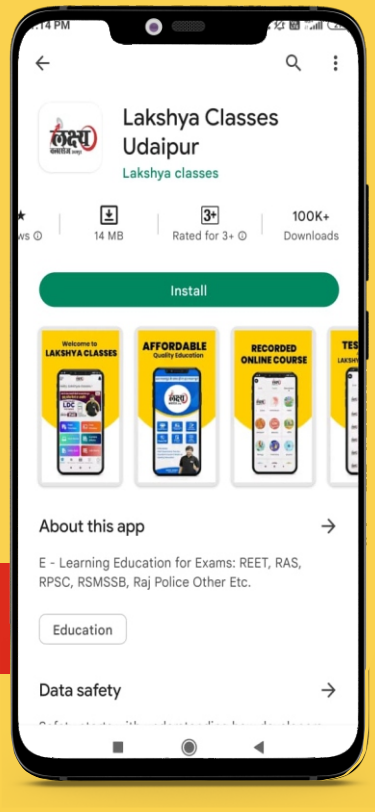

- Test Series
- Recorded Courses
- Downloadable Classes
- Free Quizzes
- Video & Audio Lecture
- Previous Year Paper
- Free Current Affair
- Doubt Solving Session

Scan to Download Lakshya App Now

Google play

INSTAGRAM | FACEBOOK | YOUTUBE | TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)

M. 6376957258, 6376491126

RAJASTHAN

BSTC

प्रवेश पूर्व परीक्षा

भाषा योग्यता (हिंदी)

Pre D.El.Ed. EXAMINATION 2024

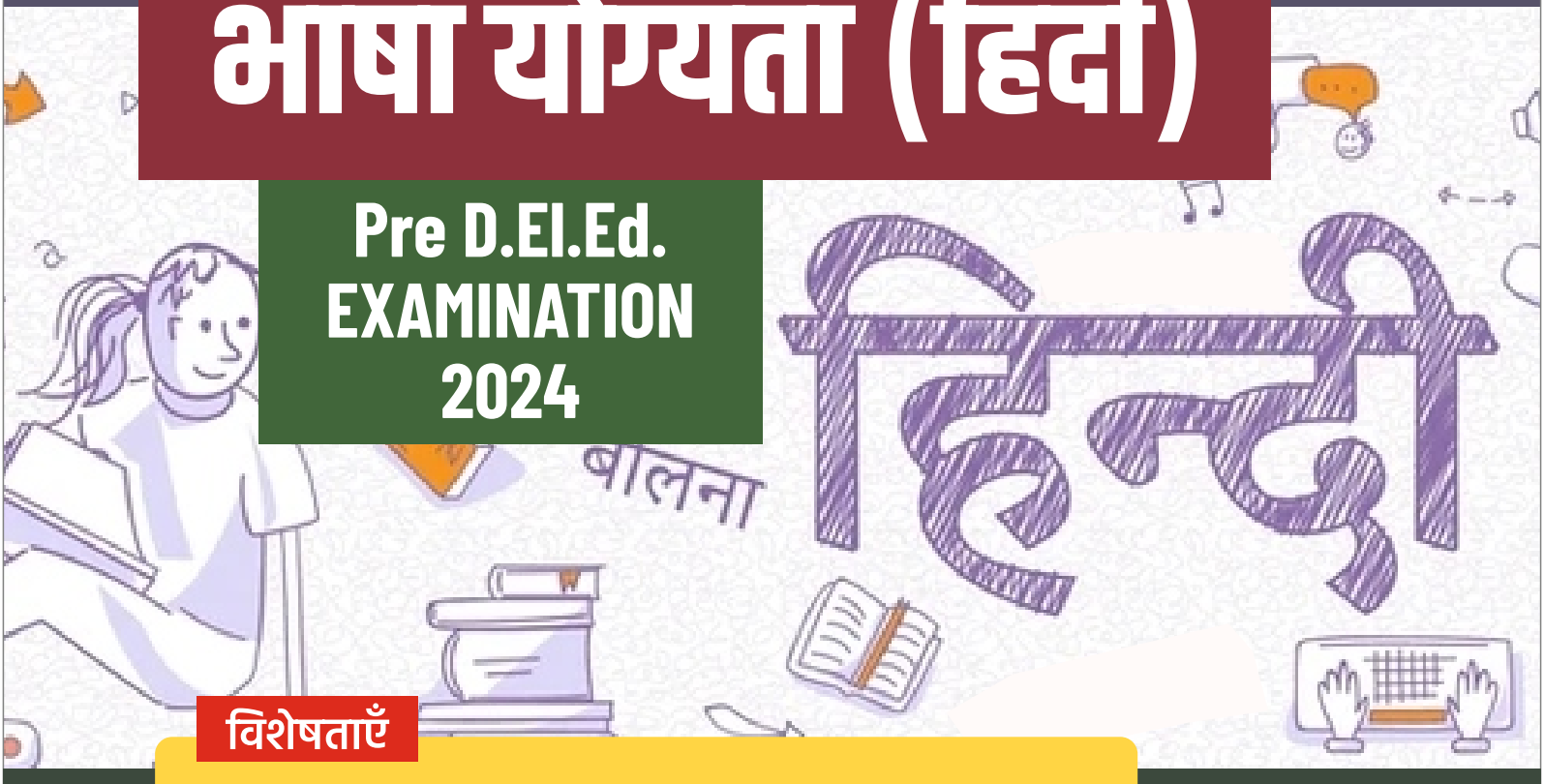

विशेषताएँ

- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम,सरल भाषा एवं व्यावहारिक उदाहरणों का संकलन
- नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
- परीक्षोपयोगी संभावित प्रश्नोत्तरों का संग्रह

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™
M. 6376957258, 6376491126
Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)
3rd floor, E-112, Kalpatru Shopping Centre, Jodhpur

विषय - वस्तु

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	हिन्दी का सामान्य परिचय	1 - 3
2.	वाक्य विचार	4 - 9
3.	संधि एवं संधि विच्छेद	10 - 19
4.	समास एवं समास विग्रह	20 - 22
5.	उपसर्ग	23 - 26
6.	प्रत्यय	27 - 34
7.	विलोम शब्द	35 - 40
8.	पर्यायवाची शब्द	41 - 45
9.	युग्म शब्द	46 - 49
10.	शब्द शुद्धि	50 - 55
11.	वाक्य शुद्धि	56 - 58
12.	मुहावरे	59 - 70
13	लोकोक्तियाँ	71 - 74
14.	वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द	75 - 78

1 अध्याय

हिन्दी का सामान्य परिचय

Short Notes

- हिन्दी फ़ारसी/पारसी/ईरानी भाषा का शब्द है।
- सिन्धु नदी के पश्चिमी भाग में रहने वाले लोग **स** को **ह** उच्चारित करते थे और **ध** को **द** बोलते थे। इस प्रकार ईरानी लोग सिन्धु नदी को 'हिन्दु' नदी कहते थे, सिंधु नदी के पूर्व में रहने वाले भारतीय लोगों को हिन्दू कहते थे। आर्यों की भाषा हिन्दी कहलायी तथा सिन्धु नदी के पूर्व का भाग हिन्दुस्तान (सिन्धु + स्थान) कहलाया। सिन्धु - हिन्दु - हिन्दू - हिन्दी - हिन्दुस्तान
- भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास को तीन कालों खंडों में बाँटा गया है–
  (1) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा - 1500 ई. पू. - 500 ई.पू. तक
  (2) मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा - 500 ई. पू. - 1000 ई. तक
  (3) आधुनिक भारतीय आर्य भाषा - 1000 ई. - वर्तमान समय

संस्कृत

- 1. वैदिक संस्कृत (वेद, उपनिषद्) – 1500 ई. पू. - 1000 ई.पू.
  2. लौकिक संस्कृत (रामायण, महाभारत) – 1000 ई.पू.- 500 ई.पू.
  – **पालि** (बौद्ध ग्रंथ) - 500 ई.पू. - 1 ई.
  – **प्राकृत** (जैन ग्रंथ) - 1 ई. - 500 ई.
  – **अपभ्रंश** (शौरसेनी) - 500 ई. - 1000 ई.
  – **हिन्दी** - 1000 ई. - वर्तमान समय
  – हिन्दी का मानक समय - 1100 ई.

भाषा

- [भाष् (प्रकट करना) - संस्कृत]
- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपने मन के भाव और विचारों को प्रकट करने के लिए जिस माध्यम का प्रयोग करता है, उसे 'भाषा' कहते हैं।
  विशेष– राजस्थानी भाषा दिवस - **21 फरवरी**

हिन्दी भाषा दिवस - 14 सितंबर

- संविधान के **भाग-17 के अनुच्छेद 343 से 351** में हिन्दी के **राजभाषा** होने से संबंधित उल्लेख किया गया है।
- **विशेष**– वर्तमान समय में **12 अनुसूची और 22 भाषाओं** में हिन्दी का भी स्थान है लेकिन हिन्दी को कहीं भी राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान नहीं दिया गया है बल्कि राजभाषा के रूप में हिन्दी का उल्लेख किया गया है।

व्याकरण

- व्याकरण (वि + आ + करण) = 'भली भाँति समझना'
- व्याकरण एक ऐसा ग्रंथ है, जो किसी भाषा के शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन और शुद्ध प्रयोग का माध्यम होता है।
- व्याकरण के मूल रूप से तीन अंग होते हैं–
  (1) वर्ण विचार (2) शब्द विचार (3) वाक्य विचार
- भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
- लिखित रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
- मौखिक रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - ध्वनि
- अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - शब्द
- भावार्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - वाक्य

वर्ण विचार

- किसी भाषा के व्याकरण ग्रंथ में इन तीन तत्त्वों की विशेष एवं आवश्यक रूप से चर्चा की जाती है।
  1. वर्ण 2. शब्द 3. वाक्य
- हिन्दी विश्व की सभी भाषाओं में सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है। हिन्दी में 44 वर्ण हैं, जिन्हें दो भागों में बाँटा जा सकता है- 1. स्वर 2. व्यंजन

स्वर :

- ऐसी ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करने में अन्य किसी ध्वनि की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं ।
- स्वर ग्यारह होते हैं, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ ।
- इन्हें दो भागों में बाँटा जा सकता है-
  1. ह्रस्व 2. दीर्घ
- जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर एवं जिन स्वरों को बोलने में अधिक समय लगे उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इन्हें मात्रा द्वारा भी दर्शाया जाता है। ये दो स्वरों को मिलाकर बनते हैं, अतः इन्हें संयुक्त स्वर भी कहा जाता है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं।

Short Notes

व्यंजन :

- जो ध्वनियाँ स्वरों की सहायता से बोली जाती हैं, उन्हें व्यंजन कहते हैं। जब हम क बोलते हैं तब उसमें क् + अ मिला होता है । इस प्रकार हर व्यंजन स्वर की सहायता से ही बोला जाता है।
- व्यंजनों का वर्गीकरण इस प्रकार है-

स्पर्श –

क वर्ग - क्, ख्, ग, घ, (ङ)
च वर्ग - च् छ् ज् झ्, (ञ)
ट वर्ग - ट् ठ् ड् ढ्, (ण)
त वर्ग - त्, थ, द, ध, (न)
प वर्ग - प, फ, ब, भ्, (म)
अन्तस्थ - य्, र्, ल्, व्
ऊष्म - श्, ष्, स्, ह
संयुक्ताक्षर – इसके अतिरिक्त हिन्दी में तीन संयुक्त व्यंजन भी होते हैं-
क्ष – क् + ष्
त्र – त् + र्
ज्ञ – ज् + ञ्

- हिन्दी वर्णमाला में **11** स्वर और **33** व्यंजन अर्थात् कुल **44** वर्ण हैं तथा तीन संयुक्ताक्षर हैं।

वर्णों के उच्चारण स्थान

- भाषा को शुद्ध रूप में बोलने और समझने के लिए विभिन्न वर्णों के उच्चारण स्थानों को जानना आवश्यक है।

	वर्ण	उच्चारण स्थान	वर्ण ध्वनि का नाम
1.	अ, आ, क वर्ग और विसर्ग	कंठ कोमल तालु	कंठ्य
2.	इ, ई, च वर्ग, य, श	तालु	तालव्य
3.	ऋ, ट वर्ग, र्, ष	मूर्द्धा	मूर्द्धन्य
4.	ऌ, त वर्ग, ल, स	दन्त	दन्त्य
5.	उ, ऊ, प वर्ग	ओष्ठ	ओष्ठ्य
6.	अं, ङ, ञ, ण, न्, म्	नासिका	नासिक्य
7.	ए, ऐ	कंठ तालु	कंठ – तालव्य
8.	ओ, औ	कंठ ओष्ठ	कठोष्ठ्य
9.	व	दन्त ओष्ठ	दन्तोष्ठ्य
10.	ह	स्वर यन्त्र	अलिजिह्वा

- अनुनासिक ध्वनियों के उच्चारण में वर्ण विशेष का उच्चारण स्थान के साथ-साथ नासिका का भी योग रहता है। अतः अनुनासिक वर्णों का उच्चारण स्थान उस वर्ग का उच्चारण स्थान और नासिका होगा।
- जैसे अं में कंठ और नासिका दोनों का उपयोग होता है अतः इसका 'उच्चारण स्थान कंठ नासिका होगा।

उच्चारण की दृष्टि से व्यंजनों को आठ भागों में बाँटा जा सकता है-

1. स्पर्शी

- जिन व्यंजनों के उच्चारण में फेफड़ों से छोड़ी जाने वाली हवा वाग्यंत्र के किसी अवयव का स्पर्श करती है और फिर बाहर निकलती है। निम्नलिखित व्यंजन स्पर्शी हैं-

क् ख् ग् घ् ; त् थ् द् ध् ;
ट् ठ् ड् ढ् ; प् फ् ब् भ् ;

2. संघर्षी

- जिन व्यंजनों के उच्चारण में दो उच्चारण अवयव इतनी निकटता पर आ जाते हैं कि बीच का मार्ग छोटा हो जाता है तब वायु उनसे घर्षण करती हुई निकलती है। ऐसे संघर्षी व्यंजन हैं-
श्, ष्, स्, ह्, ख्, ज्, फ्

3. स्पर्श संघर्षी

- जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्पर्श का समय अपेक्षाकृत अधिक होता है और उच्चारण के बाद वाला भाग संघर्षी हो जाता है, वे स्पर्श संघर्षी कहलाते हैं - च, छ, ज, झ् ।

4. नासिक्य

- जिनके उच्चारण में हवा का प्रमुख अंश नाक से निकलता है ङ्, ञ, ण, न, म

5. पार्श्विक

- जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग मसूड़े को छूता है और जैसे वायु पार्श्व आस-पास से निकल जाती है, वे पाश्विक हैं– ल्।

6. प्रकम्पित

- जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा को दो तीन बार कंपन करना पड़ता है, वे प्रकम्पित कहलाते हैं। जैसे- र।

7. उत्क्षिप्त

- जिनके उच्चारण में जिह्वा की नोक झटके से नीचे गिरती है तो वह उत्क्षिप्त (फेंका हुआ) ध्वनि कहलाती है।
- ड़् ढ़् उत्क्षिप्त ध्वनियाँ हैं।

8. संघर्षहीन

- जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा बिना किसी संघर्ष के बाहर निकल जाती है, ये संघर्षहीन ध्वनियाँ कहलाती हैं। जैसे- य, व। इनके उच्चारण में स्वरों से मिलता जुलता प्रयत्न करना पड़ता है, इसलिए इन्हें अर्द्धस्वर भी कहते हैं।

स्वर तन्त्रियों की स्थिति और कम्पन के आधार पर वर्णों का वर्गीकरण-

- इसके अतिरिक्त स्वर तन्त्रियों की स्थिति और कम्पन के आधार पर वर्णों को 2 श्रेणी में भी बाँटा जा सकता है-

1. घोष

- घोष का अर्थ है 'नाद या गूंज'। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय गूंज यानी स्वर तंत्र में कंपन होती है, उन्हें घोष वर्ण कहते हैं। इनकी कुल संख्या तीस हैं।
- पाँचों वर्गों के अन्तिम तीन वर्ण यानी ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, ण्, द्, ध्, न्, ब्, भ्, म् तथा य्, र्, ल्, व्, ह घोष वर्ण कहलाते हैं।
- इसके अतिरिक्त सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं। इनकी कुल संख्या तीस हैं ।

2. अघोष

- इन वर्गों के उच्चारण में प्राणवायु में कम्पन नहीं होता अतः कोई गूंज न होने से ये अघोष वर्ण होते हैं। इनकी संख्या तेरह हैं।
- सभी वर्गों के पहले और दूसरे वर्ण यानी क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ् तथा श्, ष्, स्, वर्ण अघोष हैं।

श्वास वायु के आधार पर वर्णों का वर्गीकरण-

अल्पप्राण

- जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास वायु कम मात्रा में मुख विवर से बाहर निकलती है।
- पाँचों वर्गों के पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण यानी क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ्, ट्, ड्, ण्, त्, द्, न्, प्, ब्, म् तथा य्, र्, ल्, व् और सभी स्वर अल्पप्राण हैं।

महाप्राण

- जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में मुख विवर से बाहर निकलती है, उन्हें महाप्राण ध्वनियाँ कहते हैं।
- प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण यानी ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, द, थ्, ध्, फ्, भ् तथा श्, ष्, स्, ह् महाप्राण हैं।

अनुनासिक

- अनुनासिक ध्वनियों के उच्चारण में नाक का सहयोग रहता है, जैसे अँ, आँ, ईं, ऊँ आदि।

♦ ♦ ♦ ♦

Short Notes

2 अध्याय

वाक्य विचार

Short Notes

- वक्ता के अर्थ को पूर्ण रूप से स्पष्ट करने वाले शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं।
- भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है वर्ण और वर्णों के सार्थक समूह से शब्द निर्मित होते हैं व शब्दों के सार्थक समूह से वाक्य। अर्थात् अगर शब्दों के सार्थक क्रम को बदल दिया जाए तो वक्ता का अभिप्राय स्पष्ट नहीं हो सकेगा-
  जैसे-विभा छत के ऊपर खड़ी है।
  क्रम बदलने पर-छत है विभा के ऊपर खड़ी।
- इस प्रकार शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।
- अर्थ के सम्प्रेषण की दृष्टि से भाषा की पूर्ण इकाई वाक्य है। संरचना की दृष्टि से पदों का सार्थक समूह ही वाक्य है।

वाक्य के अंग

- मुख्यतः वाक्य के दो अंग होते हैं-
  1. उद्देश्य
  2. विधेय

1. उद्देश्य-

- वाक्य में जिसके संबंध में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं। वाक्य में कर्ता ही उद्देश्य होता है।

यथा-

- 1. दादाजी ने पूजा की।
  2. लड़के खेल रहे हैं।
- इन वाक्यों में दादाजी व लड़कों के बारे में बताया जा रहा है अर्थात् ये दोनों उद्देश्य हैं।

2. विधेय-

- उद्देश्य अर्थात् कर्ता के संबंध में वाक्य में जो कुछ भी कहा जाता है, वह विधेय होता है।

यथा-

- 1. मोर नाच रहा है।
  2. बालक दूध पी रहा है।

वाक्य भेद

- क्रिया, अर्थ तथा रचना के आधार पर वाक्यों के अनेक भेद व उनके प्रभेद किए गए हैं।

1. क्रिया के आधार पर –

- क्रिया के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(अ) कर्तृवाच्य-

- जब वाक्य में क्रिया का संबंध सीधा कर्ता से होता है व क्रिया के लिंग, वचन, कर्ता, कारक के अनुसार प्रयुक्त होते हैं, उसे कर्तृवाच्य वाक्य कहते हैं।
  जैसे- सीता गाना गा रही है।
  अनुष्क गाना गा रहा है।

(ब) कर्मवाच्य-

- जब वाक्य में कर्म को केंद्र में रखकर कथन किया जाता है तथा कर्ता को करण कारक में बदल दिया जाता है। उसे कर्मवाच्य वाक्य कहा जाता है।
  जैसे- श्रेया द्वारा खेल खेला गया।
  अयन के द्वारा दूध पीया गया।

(स) भाववाच्य-

- जब वाक्य में क्रिया कर्ता व कर्म के अनुसार प्रयुक्त न होकर भाव के अनुसार होती है तो उसे भाववाच्य वाक्य कहते हैं।
  जैसे- शगुन से पढ़ा नहीं जाता।
  अक्षिता से पढ़ा नहीं जाता।

2. अर्थ के आधार पर

- अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं-

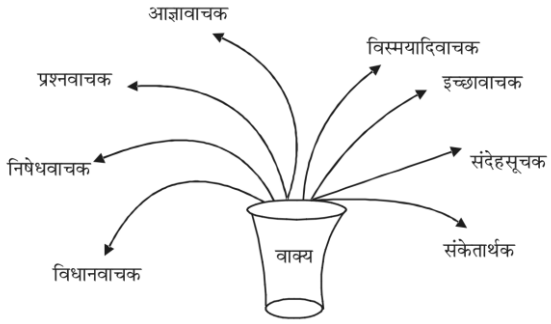

(1) विधानवाचक वाक्य-

- जिस वाक्य में किसी काम या बात का होना पाया जाता है, वह विधानवाचक वाक्य कहलाता है।

  जैसे- मैं खाता हूँ (काम का होना)।
  शगुन मेरी सहेली है (बात का होना)।

(2) निषेधात्मक वाक्य -

- जिस वाक्य में किसी बात के न होने या काम के अभाव या नहीं होने का बोध हो, वह निषेधात्मक वाक्य कहलाता है।

  जैसे- सड़क पर मत भागो ।
  अनुष्क घर पर नहीं है।

(3) प्रश्नवाचक/प्रश्नार्थक वाक्य -

- प्रश्न का बोध कराने वाला वाक्य अर्थात् जिस वाक्य का प्रयोग प्रश्न पूछने में किया जाए उसे प्रश्नार्थक वाक्य कहते हैं।

  जैसे- आप कहाँ जा रहे हैं?
  तुम क्या खेल रहे हो?

(4) आज्ञावाचक वाक्य -

- जिस वाक्य में आज्ञा, अनुमति, उपदेश व विनय का बोध हो, वह आज्ञार्थक/आज्ञावाचक वाक्य कहलाता है।

  जैसे- अनुष्क अपना कमरा साफ करो। (आज्ञा)
  अयन इस कुर्सी पर बैठो।

(5) विस्मयादिबोधक वाक्य -

- जिस वाक्य में हर्ष, शोक, घृणा व विस्मय आदि भाव प्रकट होते हैं, वह विस्मयादिबोधक वाक्य कहलाता है।

  जैसे- अरे! यह क्या हो गया !
  वाह ! कितना सुंदर दृश्य है!

(6) इच्छावाचक/इच्छार्थक वाक्य -

- जिस वाक्य में किसी आशीर्वाद, इच्छा कामना का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

  जैसे- ईश्वर सबका भला करे ! (इच्छा)
  आपका जीवन सुखमय हो !

(7) संभावनार्थक वाक्य -

- जिस वाक्य में किसी काम के पूरा होने में संदेह या संभावना का भाव प्रकट हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

  जैसे- शायद वे कल आएँ।
  हो सकता है कल तक मौसम ठीक हो जाए।

(8) संकेतार्थक वाक्य -

- जिस वाक्य में संकेत या शर्त हो, वह संकेतार्थक वाक्य कहलाता है।

  जैसे- यदि तुम आओ तो मैं चलूँ।
  वर्षा न होती तो, फसल सूख जाती।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

- रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-
  (i) सरल वाक्य
  (ii) मिश्र या मिश्रित वाक्य
  (iii) संयुक्त वाक्य

Short Notes

Short Notes

(i) सरल वाक्य–

– जिस वाक्य में एक उद्देश्य व एक ही विधेय होता है, उसे साधारण या सरल वाक्य कहते हैं अर्थात् एक कर्ता व एक ही क्रिया होती है।

जैसे- मै जाता हूँ।

(ii) मिश्र वाक्य / मिश्रित वाक्य–

– जिस वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य हो तथा उसके साथ अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। मिश्र वाक्य व उप वाक्यों को जोड़ने का काम समुच्चयबोधक अव्यय करते हैं। (चूँकि, क्योंकि, जब, तब, अर्थात्, यदि, तो, ताकि, तदापि) ।

जैसे- वे मेरे घर आएँगे, क्योंकि उन्हें अजमेर शहर घूमना है।
वे मेरे घर आएँगे (प्रधान वाक्य) क्योंकि (योजक)
उन्हें अजमेर शहर घूमना है। (आश्रित उप वाक्य)
मैं जानता हूँ कि तुम्हें अजमेर जाना है।

(i) प्रधान उपवाक्य –

– जो वाक्य मुख्य उद्देश्य व मुख्य विधेय से बना हो उसे प्रधान उप वाक्य कहते हैं।

(ii) आश्रित उपवाक्य –

– वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य होती है अर्थात् जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के आश्रित रहता है, उसे आश्रित उपवाक्य कहते हैं।

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

– 1. संज्ञा उपवाक्य
2. विशेषण उपवाक्य
3. क्रियाविशेषण उपवाक्य

1. संज्ञा उपवाक्य

– ऐसे उपवाक्य जो वाक्य में संज्ञा की तरह काम करें अर्थात् किसी कर्ता, कर्म तथा पूरक का काम देते हैं, वे संज्ञा उपवाक्य कहलाते हैं। इस वाक्य में प्रायः कि, का प्रयोग होता है।

जैसे-

– मैंने देखा कि शगुन गा रही है।
संज्ञा उपवाक्य में प्रायः 'कि' का लोप भी हो जाता है-
मैंने सुना है वे कल आएँगे।
कर्म- मैं कहता हूँ कि वह शहर गया। 'वह शहर गया' 'कहता हूँ' का कर्म है।
पूरक- उनकी इच्छा है कि मैं खाना खाऊँ। 'कि मैं खाना खाऊँ' 'है' क्रिया का पूरक है।

2. विशेषण उपवाक्य-

– वे उपवाक्य जो प्रधान वाक्य में कर्ता अथवा कर्म या संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण आश्रित उपवाक्य कहते हैं। विशेषण उपवाक्य का प्रारम्भ प्रायः जो, जिसकी, जिसका, जिसके आदि शब्दों से होता है।

जैसे- जिससे आपको काम था, वह व्यक्ति चला गया।

3. क्रिया विशेषण उपवाक्य –

– जो प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताते हैं, वे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहलाते हैं। ये क्रिया के घटित होने का स्थान, दिशा, कारण, परिणाम, रीति आदि की सूचना देते हैं।

जैसे- यदि दिनभर खेलोगे तो कब पढ़ोगे।

क्रिया विशेषण उपवाक्य कि, क्योंकि, जो, यदि, तो, अगर, यद्यपि, इसलिए, भी, इतना आदि अव्यय पदों द्वारा अन्य वाक्यों से मिलाते हैं।

(iii) संयुक्त वाक्य – जिस वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य या प्रधान उपवाक्य या समानाधिकरण उपवाक्य किसी संयोजक शब्द (तथा, एवं, या, अथवा, और, परंतु, लेकिन, किंतु, बल्कि, अतः आदि) से जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे भरत आया किंतु भूपेंद्र चला गया।

(समानाधिकरण वाक्य ऐसे उपवाक्य जो प्रधान उपवाक्य या आश्रित उपवाक्य के समान अधिकार वाले हों उन्हें समानाधिकरण उपवाक्य कहते हैं।)

वाक्य विश्लेषण

– रचना के आधार पर निर्मित वाक्यों को उनके अंगों सहित अलग कर उनका परस्पर संबंध बताना वाक्य विश्लेषण या वाक्य-विग्रह कहलाता है।

Short Notes

1. सरल वाक्य का विश्लेषण –

– सरल वाक्य के वाक्य विश्लेषण में सर्वप्रथम वाक्य के दो अंग उद्देश्य व विधेय को बताना होता है उसके बाद उद्देश्य के अंग कर्ता व कर्ता का विस्तार तथा विधेय के अंतर्गत कर्म व कर्म का विस्तारक, पूरक, पूरक का विस्तारक जो भी हो उनका उल्लेख करना होता है।

जैसे- (क) सभी मित्र दिल्ली का लाल किला देखने चले गए।
(ख) मेरी बहन श्रेया कहानियों की पुस्तकें बहुत पढ़ती है।

	उद्देश्य		विधेय					
	कर्ता	**कर्ता का विस्तारक**	**कर्म**	**कर्म का विस्तारक**	**पूरक**	**पूरक का विस्तारक**	**क्रिया**	**क्रिया का विस्तारक**
(क)	मित्र सभी	लालकिला	दिल्ली का	–	–	देखने	देखने	–
(ख)	श्रेया	मेरी बहन	पुस्तकें	कहानियों	-	-	पढ़ती है	बहुत

(ग) जयपुर का सिटी पैलेस दर्शनीय स्थल है।

	उद्देश्य		विधेय					
	कर्ता	**कर्ता का विस्तारक**	**कर्म**	**कर्म का विस्तारक**	**पूरक**	**पूरक का विस्तारक**	**क्रिया**	**क्रिया का विस्तारक**
(ग)	सिटी पैलेस	जयपुर का	–	–	स्थल	दर्शनीय	है	–

2. मिश्रित वाक्य या मिश्रवाक्य का विश्लेषण-

– मिश्रित या मिश्र वाक्य के विश्लेषण में उसके प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य एवं उसके प्रकार का उल्लेख किया जाता है। जैसे- (क) मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं राष्ट्रपति बनूँ।
(ख) प्रांशु कल कॉलेज नहीं गया क्योंकि वह बीमार था।

	उपवाक्य	**वाक्य भेद**	**कार्य**	**योजक**	**कर्ता**	**कर्ता का विस्तार**	**क्रिया**	**कर्म**	**पूरक**	**पूरक विस्तार**
(क)	**मेरे जीवन का लक्ष्य है**	प्रधान उपवाक्य	–	–	जीवन का	–	है	लक्ष्य	–	–
	मैं राष्ट्रपति बनूँ	आश्रित संज्ञा उपवाक्य	प्रधान उपवाक्य की क्रिया का कर्म	कि	मैं	बनूँ	–	राष्ट्रपति	–	–
(ख)	**प्रांशु कल कॉलेज नहीं गया**	प्रधान उपवाक्य	–	–	प्रांशु	–	नहीं	–	–	कल
	वह बीमार था	आश्रित क्रिया विशेषण उपवाक्य	–	क्योंकि	वह (उसे)	–	था	–	बुखार	–

3. संयुक्त वाक्य का विश्लेषण-

– संयुक्त वाक्य के विश्लेषण में समानाधिकरण उपवाक्यों या साधारण वाक्यों के उल्लेख के साथ उन्हें जोड़ने वाले योजक शब्द का भी उल्लेख करना होता है। जैसे-
1. अनुष्क ने पुस्तक पढ़ी और सो गया।
2. सबने आपकी बहुत प्रतीक्षा की पर आप नहीं आए।

	उपवाक्य	**वाक्य भेद**	**योजक**	**कर्ता**	**कर्ता का विस्तार**	**क्रिया**	**क्रिया का विस्तार**	**कर्म**	**कर्म का विस्तारक**	**विधेय**
1.	**अनुष्क ने पुस्तक पढ़ी**	प्रधान उपवाक्य	–	अनुष्क	–	पढ़ी	–	पुस्तक	–	–
	सो गया	समानाधिकरण उपवाक्य	और	वह (लुप्त)	सो गया	–	–	–	–	–

2.	**सबने आपकी बहुत प्रतीक्षा की**		–	सबने	–	प्रतीक्षा की	–	आपकी	–	बहुत
	आप नहीं आए	समानाधिकरण	पर	–	–	आए	नहीं	आप	–	–

वाक्य संश्लेषण

- वाक्य विश्लेषण में वाक्य में आए उपवाक्यों को अलग किया जाता है लेकिन वाक्य संश्लेषण में अलग-अलग वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बना दिया जाता है। कालांश लगा। गुरु जी आए। कक्षा में पढ़ाया। दूसरी कक्षा में चले गए।
- वाक्य संश्लेषण में इन चार वाक्यों से एक बनाया जाता है-

उदाहरण 1

- 1. कालांश लगते ही गुरु जी एक कक्षा में पढ़ाकर दूसरी कक्षा में चले गए। **(सरल वाक्य)**
  2. कालांश लगते ही गुरु जी कक्षा में आए और पढ़ाकर दूसरी कक्षा में चले गए। **(संयुक्त वाक्य)**
  3. कालांश लगा ही था कि गुरु जी कक्षा में पढ़ाने आए, फिर दूसरी कक्षा में चले गए। **(मिश्रित वाक्य)**

उदाहरण 2

- 1. हमारे घर से बाहर निकलते ही आसमान में बादल छाने लगे। **(सरल वाक्य)**
  2. हम घर से बाहर निकले और आसमान में बादल छाने लगे। **(संयुक्त वाक्य)**
  3. जैसे ही हम घर से बाहर निकले, आसमान में बादल छाने लगे। **(मिश्रित वाक्य)**

उदाहरण 3

- 1. बच्चे खेलने के लिए मैदान में गए थे। **(सरल वाक्य)**
  2. बच्चों को खेलना था अतः मैदान में गए थे। **(संयुक्त वाक्य)**
  3. बच्चे मैदान में गए थे क्योंकि उन्हें खेलना था। **(मिश्रित वाक्य)**

वाक्य के आवश्यक तत्त्व

1. सार्थकता-

- वाक्य में हमेशा सार्थक शब्दों का ही प्रयोग होना चाहिए।
  जैसे- मैं आप सबको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

2. पदक्रम-

- वाक्य का सही अर्थ ग्रहण करने के लिए एक निश्चित क्रम होना चाहिए यदि क्रम बदल जाता है तो कथन का अर्थ बदल जाता है।
  जैसे- बच्चे को काटकर फल दो।
  सही क्रम-फल काटकर बच्चे को दो।

3. निकटता-

- पदों के बीच अगर अंतर रहता है तो वह अर्थ ग्रहण में बाधक रहता है। इसलिए वाक्य के पदों में परस्पर निकटता होना अनिवार्य है।
- वाक्य में स्वाभाविक ठहराव की आवश्यकता होती है परंतु प्रत्येक शब्द के बाद ठहरना या रुक-रुककर बोलना अशुद्ध होता है।
  जैसे- उसने ..... मेरा..... गाना.....सुना। (उसने मेरा गाना सुना)

4. पूर्णता-

- वाक्य अपने आप में पूर्ण होना चाहिए इसमें शब्दों की कमी होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।
  जैसे- कमल पीता है।
  शुद्ध - कमल दूध पीता है।

वाक्य में पद क्रम

- वाक्य रचना में पदक्रम का विशेष महत्त्व होता है। अतः वाक्य रचना करते समय कर्ता, कर्म और क्रिया का क्रम ध्यान में रखना आवश्यक है। अतः इन नियमों को जानना आवश्यक है-

1. वाक्य में कर्ता और कर्म के बाद में क्रिया आती है।
   जैसे- अनुष्क खाना खा रहा है।
2. कर्ता, कर्म तथा क्रिया के (विस्तारक) पूरक इनसे पूर्व में आते हैं।
   जैसे- भूखा भिखारी स्वादिष्ट खाना जल्दी-जल्दी खा गया।
3. क्रिया विशेषण क्रिया से पहले प्रयोग में आता है।
   जैसे- धावक तेज दौड़ता है।
4. पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले आती है।
   जैसे- वह खाना खाकर सो गया।
5. संबोधन और विस्मयादिबोधक प्रायः वाक्य के आरंभ में आते हैं।
   जैसे- अनुष्क ! इधर बैठो !
   वाह! कितना सुन्दर महल है!

Short Notes

6. निषेधात्मक वाक्यों में 'न' अथवा 'नहीं' का प्रयोग प्रायः क्रिया से पहले किया जाता है।
   जैसे- रमेश बाजार नहीं जाएगा।
7. सार्वजनिक विशेषण अन्य विशेषण से पूर्व आता है।
   जैसे- मेरी छोटी बहिन।
8. पदवी या व्यवसाय सूचक शब्द नाम से पहले आते हैं।
   जैसे- पं. रामसहाय, डॉ. अक्षत, प्रो. शगुन।
9. मिश्र या संयुक्त वाक्यों में योजक का प्रयोग दो उपवाक्य के बीच होता है।
   जैसे- घर पर काम था इसलिए वह नहीं आया।
   जब कार्य समाप्त हुआ तब वे घर चले गए।
10. मिश्र वाक्य की संरचना में प्रधानवाक्य आश्रित उप वाक्य के पहले आता है।
    जैसे- जो परिश्रम करता है, उसे सब पसंद करते हैं।

वाक्य में क्रिया का अन्वय

– वाक्य रचना में पदों के संबंध व क्रम का विशेष ध्यान रखा जाता है। पदों के इसी क्रम या संबंध को 'मेल या अन्वय' कहते हैं। अन्वय का अर्थ 'संबद्धता' है, अर्थात् वाक्य में पदों का उचित मेल होना आवश्यक है-

कर्ता व क्रिया का अन्वय-

1. वाक्य में कर्ता के परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ हो तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होता है।
   जैसे- मोहन गाना गाता है।
   राधा गाना गाती है।
2. वाक्य में विभक्ति रहित एक ही लिंग, वचन, पुरुष के कर्ता हो तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी।
   जैसे- अनुष्क, अमन, अक्षत खाना खा रहे हैं।
   श्रेया, शगुन गाना गा रही हैं।
3. आदर का भाव प्रकट करने वाले एक वचन कर्ता के साथ भी क्रिया का बहुवचन में प्रयोग होता है।
   जैसे– पिता जी कल आ रहे हैं। भाई साहब खाना खा रहे हैं।
4. भिन्न लिंग, वचन के विभक्ति रहित एक वाक्य के कर्ता और, तथा आदि शब्दों से जुड़े हों तो क्रिया बहुवचन पुल्लिंग में होगी।
   जैसे- अनुष्क व शगुन खेल रहे हैं।
5. हिन्दी में आँसू, हस्ताक्षर, प्राण, दर्शन, होश आदि शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।
   जैसे- ये हस्ताक्षर मेरे हैं।
   मेरी आँखों में आँसू आ गए।

कर्म और क्रिया का अन्वय-

1. यदि वाक्य में कर्ता विभक्ति सहित और कर्म विभक्ति रहित हो तो क्रिया का लिंग, वचन व पुरुष कर्म के अनुसार होंगे।
   जैसे- श्रेया ने गाना गाया।
   प्रांशु ने पुस्तक पढ़ी।
2. यदि कर्ता और कर्म दोनों के साथ विभक्ति हो तो क्रिया एकवचन पुल्लिंग व अन्य पुरुष होती है।
   जैसे- राम ने चोर को पकड़ा।
   अनुष्क ने अक्षत को देखा।
3. यदि कर्ता के साथ विभक्ति 'ने' लगा हो और वाक्य में दो कर्म हो तो क्रिया अंतिम कर्म के अनुसार लगती है।
   जैसे- अनुष्क ने पुस्तक और पेंसिल खरीदा।
   अमन ने मिठाई व फल खरीदे।

संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय-

1. अगर सर्वनाम का प्रयोग अनेक संज्ञाओं के स्थान पर हो तो वह बहुवचन में प्रयुक्त होता है।
   जैसे- श्रेया, शगुन विद्यालय गई हैं, वे शाम को घर लौटेंगी।
2. एक संज्ञा के स्थान पर एक ही सर्वनाम का प्रयोग होना चाहिए।
   जैसे- राम ने श्याम से कहा, तुम जाओ, लड़के तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।
3. जिस संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम प्रयुक्त हुआ है वचन उसी संज्ञा के अनुरूप होता है।
   जैसे- सीता ने कहा वह गाना गाएगी।

विशेषण व विशेष्य का अन्वय

1. अगर वाक्य में एक से अधिक विशेष्य हों तो विशेषण अपने निकट विशेष्य के अनुसार होगा।
   जैसे- काली साड़ी, पीला कुर्ता लाओ।
   पीला कुर्ता काली साड़ी लाओ।
2. आकारांत विशेषण-विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार बदल जाते हैं।
   जैसे- तुम काला कुर्ता पहनो।
   तुम काली साड़ी पहनो।

   किंतु अन्य विशेषणों में विशेष्य के अनुरूप परिवर्तन नहीं होता है।
   जैसे- नीली कमीज, नीली साड़ी
   वाक्य रचना के शुद्ध रूप

♦ ♦ ♦ ♦

Short Notes

मुश्किल परीक्षाएं भी आसान लगेगी

जब करेंगे लक्ष्य एप के संग तैयारी

मौका है, अपनी तैयारी को सिलेक्शन वाली तैयारी बनाने का

LIVE FROM CLASSROOM

ONLINE/OFFLINE COURSE

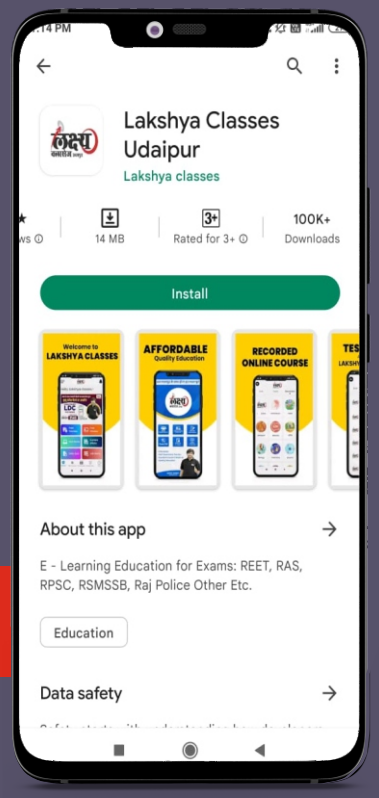

- Test Series
- Recorded Courses
- Downloadable Classes
- Free Quizzes
- Video & Audio Lecture
- Previous Year Paper
- Free Current Affair
- Doubt Solving Session

स्कूल I Grade व्याख्याता Ist Paper/2nd Paper	SI दोनों प्रश्न पत्रों की सम्पूर्ण तैयारी	BSTC PTET	संगणक	पशु परिचर	FORESTER
RAS Pre	शिक्षक मुख्य परीक्षा	II Grade शिक्षक Ist Paper/2nd Paper	CONSTABLE	BANKING ASSISTANT	
REET LEVEL पात्रता परीक्षा I & II	LAB ASSISTANT	पटवार	LDC	CET 2024	WOMAN SUPERVISOR

Scan to Download Lakshya App Now

ANDROID APP ON Google play

INSTAGRAM | FACEBOOK | YOUTUBE | TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)

M. 6376957258, 6376491126

RAJASTHAN

BSTC

प्रवेश पूर्व परीक्षा

LANGUAGE ABILITY (ENGLISH)

Pre D.El.Ed. EXAMINATION 2024

विशेषताएँ

- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम, सरल भाषा एवं व्यावहारिक उदाहरणों का संकलन
- नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
- परीक्षोपयोगी संभावित प्रश्नोत्तरों का संग्रह

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™
M. 6376957258, 6376491126
Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)
3rd floor, E-112, Kalpatru Shopping Centre, Jodhpur

विषय - वस्तु

S.N.	UNIT	PAGE NO.
1.	Articles	1 - 5
2.	Preposition	6 - 10
3.	Connectives (Conjunctions)	11 - 13
4.	Sentences	14 - 20
5.	Tense	21 - 31
6.	Direct and Indirect Speech	32 - 42
7.	Vocabulary	43 - 63
8.	Synonyms	64 - 69
9.	Antonyms	70 - 73
10.	Spelling errors	74 - 76
11.	One Word Substitution	77 - 80
12.	Reading Comprehension	81 - 87

1 अध्याय

Articles

Short Notes

– अंग्रेजी में a, an और the को Articles कहते हैं। ये दो 'प्रकार के होते हैं –
– Indefinite Articles – a , an
– Definite Article – the

(1) Indefinite Article –

– A तथा an का प्रयोग साधारणतया उन Nouns के पहले होता है जिनको गिना जा सके जैसे – A chair is made of wood. इस वाक्य में chair को गिना जा सकता है अतः इसके पूर्व a का प्रयोग हुआ है wood (लकड़ी) को यहाँ गिना नहीं जा सकता। अतः इसके पहले Indefinite Article का प्रयोग नहीं हुआ है।

(2) Definite Article-

– यह निश्चित Noun के पहले प्रयोग होता है। जैसे – I went to call the teacher (the teacher of our class).

1. Use of 'A' and 'An' – Indefinite Articles

'A' का प्रयोग

नियम –

(a) Indefinite Article 'a' का प्रयोग साधारणतया उन Nouns के पूर्व किया जाता है जिनकी गिनती की जा सकती है और जिनका उच्चारण व्यंजन (Consonant) की ध्वनि से होता है । जैसे – a dog, a woman, a horse, a boy, a table, आदि ये शब्द क्रमशः 'ड', 'व', 'ह', 'ब' तथा ट ध्वनि से आरम्भ होते हैं। अतः Article 'a' इनके पूर्व लगा है।

(b) जब 'u' की आवाज 'यू' हो। जैसे – a university, a European, a useful thing, a unit.

'An' का प्रयोग।

नियम –

(a) Indefinite Article an' का प्रयोग उन शब्दों से पहले होता है जो किसी स्वर (a, e, i, 0, u) से प्रारम्भ हों और जिनका उच्चारण भी स्वर की तरह होता हो। जैसे – an elephant, an ass, an orange, an umbrella, an inkpot.

(b) जिन शब्दों में h' शान्त रहता है, उनसे पहले 'an' का प्रयोग होता है। जैसे – an hour, an honest man, an honourable man.

– A तथा An का प्रयोग निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा एवं प्रयोग किया जा सकता है।

1. प्रथम बार प्रयुक्त होने वाले एकवचन गिनने योग्य संज्ञाओं (SingularCountable Nouns) के पहले:
– I have a book.
– She lives in a hut.
– He saw an old man.
– Mr Sharma is an umpire in this match.

2. ऐसी एकवचन पूरक संज्ञाओं (Noun Complements) से पूर्व जो किसी पेशे या व्यवसाय (profession) से सम्बन्धित हों:
– She is a nurse.
– He is an engineer.
– Neeraj is a doctor.
– She is an actress.

3. Adjective + Noun की स्थिति में:
– a big elephant.
– an old woman.
– an ugly child.
– a useful book.

4. ऐसी अभिव्यक्तियों के लिए जो मूल्य, गति, अनुपात आदि का बोध कराती हों:
– two rupees a kilo, six times a day, eighty rupees a dozen, 20 km an hour, ten rupees d meter, इत्यादि।

5. संख्यात्मक/मात्रात्मक अभिव्यक्तियों से पूर्व:
– a pair, a couple, a dozen, half a dozen, a hundred, a thousand, a lot, a great deal, a great man, a quarter, a million इत्यादि।

6. 'a' तथा 'an' का प्रयोग 'एक-से' (the same) के अर्थ में भी होता है:
- Birds of a feather flock together.
- These are but two sides of a coin.
- Men of a mind always group together.
- Take two at a time.

7. Mr/ Mrs / Miss + surname के पहले वक्ता से उनका परिचय न होने का भाव दर्शाने के लिए a का प्रयोग होता है:
- a Mr Sharma, a Mrs Mathur, a Miss Gupta इत्यादि।
- a Mr Sharma से आशय ऐसे व्यक्ति से है, जो Mr Sharma के नाम से पुकारा जाता है परन्तु वक्ता से अपरिचित है; परिचित अवस्था में केवल Mr Sharma या Mrs Mathur ..... लिखते हैं।

Exercise 1

Fill in the blanks with 'a' or 'an':
रिक्त स्थानों को 'a' अथवा 'un' से भरिये–

1. He was ..... wise teacher.
2. It was ..... long way to the forest.
3. Now cricket has become ..... international game.
4. They will be back in ..... week.
5. I will finish this work within ..... hour.
6. Rani hopes to win ..... lottery.
7. He is so good ..... umpire that every player respects him.
8. We are to play ..... one-day match next week.
9. He is ..... honest man of our city.
10. Can you give ..... example of a cruel king?
11. My father is ..... MLA.
12. My friend's father is ..... UDC.

Answers:

- 1. a 2. a 3. an 4. A 5. an 6. a 7. an 8. A 9. an 10. an 11. an 12. a

2. Use of 'the' – Definite Article

- The एक definite article है और इसका प्रयोग एकवचन व बहुवचन (Singular and Plural Nouns) के पूर्व निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है –

1. एक Noun के पहले जिसका पूर्व में उल्लेख किया जा चुका हो:
- I saw a lion. The lion was sleeping under a tree.
  पहले वाक्य में मैंने एक शेर देखा। (दूसरे वाक्य में वही) शेर पेड़ के नीचे सो रहा था।
- We heard a noise. The noise came from a neighbour's house.

2. Adjectives की Superlative Degree के पहले:
- Ravi is the best singer in the school.
- My uncle is the richest man in the town.

अपवाद :

- किसी सम्बन्धवाचक विशेषण (Possessive Adjective) जैसे: my, his, her, their, your, our के बाद Adjective की Superlative Degree का प्रयोग होने पर the का प्रयोग नहीं होता, जैसे:
  – He is my best friend.
  – Mr Dixit is our best teacher.

3. किसी शब्द समूह (Phrase) या उपवाक्य (Clause) से सुनिश्चित होने वाले Noun के पहले:
- The girl in the blue skirt is my sister.
- The man with a little nose is our Principal.
- The cars made in our factory are the strongest ones.
- The book on the table belongs to the library.
- The man who went out is an excellent singer.

4. ऐसे noun के पहले जो अपनी सम्पूर्ण जाति (the whole class or race) का बोध कराता है:
- The dog is a faithful animal. (यहाँ अर्थ 'समस्त कुत्ता जाति') से है।
- The elephant has a long trunk.
- The cat likes milk.

Short Notes

5. नदियों, सागरों, महासागरों, खाड़ियों, मरुस्थलों, द्वीप-समूहों, पर्वत श्रृंखलाओं, नहरों, जंगलों तथा देशों के बहुवचनीय नामों के पहले:
- The Ganga, The Yamuna (rivers)
- The Bay of Bengal (बंगाल की खाड़ी)
- The Arabian Sea (अरब सागर)
- The Gulf of Mexico (मेक्सिको की खाड़ी)
- The Thar desert, The Sahara Desert (सहारा मरुस्थल)
- The Himalayas, The UK (इंग्लैण्ड का नाम)
- The West Indies, The USA (संयुक्त राज्य अमेरिका):

Note:
- झीलों के नाम के पूर्व Lake, पर्वत या चोटी के नाम के पूर्व Mount व किसी अन्तरीप के नाम से पूर्व Cape शब्द का प्रयोग होने की स्थिति में the का प्रयोग नहीं होता है, जैसे: Cape Camorin, Mount Everest, Lake Mansarovar, इत्यादि।

6. संज्ञा (Noun) की तरह प्रयुक्त होने वाले विशेषण (Adjective) शब्दों के पूर्व the का प्रयोग होता है:
- The brave always rule over the earth. (बहादुर व्यक्ति)
- The rich should help the poor. (अमीर व्यक्ति)
- The weak can never do anything. (कमजोर व्यक्ति)

7. विश्व में अपने ढंग की अनोखी अथवा एकमात्र वस्तुओं के लिए:
the sun, the moon, the sky, the earth, the world, the Taj, the Wall of China.

8. दिशाओं के नाम के पहले:
the east, the west, the south, the north.

9. ऐसे नामों के पहले जो Adjective + Noun के रूप में हों:
the National Highway, the New South Coast, the Gold Coast.

10. धार्मिक पुस्तकों, वाद्य-यन्त्रों एवं क्रमवाचक संख्याओं से पूर्व:
the Geeta, the Bible, the Quran, the Ramayana, the violin, the flute, the fourth, the last, the next, इत्यादि।

11. Comparative Degree के दो बार प्रयोग की स्थिति में:
- The more you have, the more you want.
- The sooner, the better.
- The higher you go, the cooler you feel.
- The better I know her, the more I admire her.

12. जब किसी Proper Noun (व्यक्तिवाचक संज्ञा) की तुलना किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति, स्थान या वस्तु से की जाती है:
- Kalidas is the Shakespeare of India.
- Kashmir is the Switzerland of Asia.

13. धर्म, समुदाय, जाति, राष्ट्रीयता, राजनीतिक दलों, जहाजों, रेलगाड़ियों, हवाई जहाजों, जलपोतों आदि के नाम के पहले:
the Hindus, the Sikhs, the Jats, the Vaishnavas, the English, the Indians, the Americans, the Congress, the BJP., the Nilgiri, the Kanishka, the Vikrant, the Chetak Express.

14. Plural Surnames के पहले पूरे परिवार को बताने के लिए:
- the Guptas, the Sharmas, इत्यादि।

15. शरीर के अंगों के नाम के पहले:
- He caught her by the hair.
- She grabbed him by the neck.

16. तारीखों एवं राष्ट्रीय महत्व के दिनों के पहले:
- the 25th July, the 15th August, the 26th January, the Independence Day, the Republic Day इत्यादि।

17. same, only, opposite, front, end, beginning जैसे शब्दों के पूर्व:
- the same scene, the only son, the opposite party, the front page, the end of the play, the beginning of the story.

18. all, some of ..... (Plural Noun), one of ..... (Plural Noun), each of ..... (Plural Noun) के साथ:
- all the boys, some of the students, one of the girls, each of the winners.

Short Notes

Short Notes

The Omission of the Definite Article

निम्नलिखित स्थितियों में Definite Article 'the' प्रयोग नहीं होता है :

1. Proper Noun (व्यक्तिवाचक संज्ञा), Material Noun (पदार्थवाचक संज्ञा) तथा Abstract Noun (भाववाचक संज्ञा) के पूर्व:
- Arjun was a great archer.
- Gold is costlier than silver.
- Wisdom is greater than wealth.
2. जब किसी Common Noun का व्यापक अर्थ में प्रयोग होता हो:
- Man is mortal.
- Man is a social animal.
3. भाषाओं, अध्ययन के विषयों, सार्वजनिक स्थलों, खेलों, बीमारियों तथा निश्चित समय पर किये जाने वाले भोजनों के नाम के पहले:
- I am learning French.
- She doesn't like physics.
- We go to hospital when we are ill.
- They go to school regularly.
- We play hockey every day.
- She is suffering from pneumonia. (निमोनिया)
- I have lunch at noon.
- He goes to temple daily.
4. राष्ट्रों, रंगों, त्योहारों के नाम के पहले:
- India has a very old and rich culture.
- The leaves of this plant have turned yellow.
- Diwali is celebrated with pomp and show.
5. महीनों, दिनों तथा ऋतुओं के नाम के पहले:
- January is the first month of the year.
- Sunday comes before Monday.
- Spring is the first season of the year. (also The spring)
6. God शब्द के पहले इसका प्रयोग नहीं होता (जब 'G' बड़े अक्षर में लिखा गया हो और इसका अर्थ 'ईश्वर' हो):
- He prayed to God for help.
- God is everywhere and within every soul.
7. kind of तथा sort of के बाद Definite Article नहीं आता है, जैसे:
- What kind of man is he?
- He is a right sort of man.
8. church, market, school, college, hospital, prison, bed के पूर्व Definite Article नहीं लगाते, यदि इनका प्रयोग उसी कार्य के लिए किया जाये जिसके लिए वे बने हों। Church में प्रार्थना के लिए जाते हैं; market में खरीदारी करने के लिए जाते हैं; school, college में पढ़ने के लिए जाते हैं; hospital में इलाज के लिए, prison में सजा भोगने के लिए तथा bed पर सोने के लिए जाते हैं- अतः यदि इसी अर्थ में इन शब्दों का प्रयोग होता है, तो इन शब्दों के पूर्व Definite Article नहीं लगता है। जैसे :
- My son goes to school. (पढ़ने के लिए)
- My father is ill and going to hospital. (इलाज के लिए)
- The thief has been sent to prison. (सजा काटने के लिए)
- You will have to go to court. (वाद-विवाद या झगड़ा निपटाने के लिए)
- I go to bed late at night. (सोने के लिए)
- He goes to church every Sunday. (प्रार्थना के लिए)

लेकिन यदि इनका प्रयोग दूसरे कार्य के लिए हो तो Definite Article लगाते हैं, जैसे :
- I am going to the school to enquire about the progress of my son.
- My father is going to the hospital to see his friend.
- Shall we go to the prison to know the prisoner's condition?
- I am going to the court to see the dacoits.
- The school is at the next crossing.
- The market is closed today.
- The church of Ajmer is very grand.

9. Proper Noun +'s + Noun से पहले Definite Article नहीं आता, जैसे:
This is Mohan's house. (यहाँ the Mohan's house नहीं लिखना चाहिए।)
This is Hari's book. (यहाँ the Hari's book नहीं लिखना चाहिए।)
परन्तु यदि Common Noun के साथ 's आता है, तो इसके पहले Article लगाते हैं, जैसे –
That is an old man's room.
This is a priest's hut.
10. Possessive Adjective के बाद Definite Article नहीं लगेगा, जैसे:
This is my house. I know his address.

Exercise 2

Fill in the blanks with 'a', 'an', 'the' or 'x': निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति 'a', 'an' 'the या 'x' से कीजिये –

1. we study in ..... same school.
2. He has suffered ..... lot.
3. ..... Chetak Express is l0ate today.
4. Sonu is ..... tallest boy in his class.
5. A fox is cleverer than ..... crow.
6. Gold is ..... precious metal.
7. We are going to ..... Kolkata next week.
8. We should help ..... poor.
9. Swimming is ..... useful exercise.
10. He works in ..... insurance company.

Answers:

– 1. the 2. a 3. The 4. the 5. a 6. a 7. x 8. the 9. a 10. an

Exercise 3

Fill in the blanks with 'a', 'an', 'the' or 'x': रिक्त स्थानों की पूर्ती 'a', 'an', 'the' या 'x' से कीजिये –

1. This morning my daughter expressed her desire to go to ..... school.
2. All of us must be careful about disposing ..... waste.
3. Some of the waste from ..... kitchen can be dumped into a pit.
4. Abhay would spend hours together in front of ..... screen.
5. Rathore joined ..... Indian Forest service in 1960 as a park ranger.
6. Once upon ..... time there was a great kingdom, named Mahapal.
7. But ..... people of Mahapal were not happy.
8. King Mahender declared Vikram ..... prince of Mahapal.
9. Hope this letter finds you in ..... best of spirits.
10. Anjali visited me ..... last week.
11. It is ..... treasure of art and sculpture.

Answers:

– 1. x 2. the 3. the 4. the 5. the 6. a 7. the 8. the 9. the 10. x 11. a

Exercise 4

Fill in the blanks with 'a', 'an', 'the' or 'X': रिक्त स्थानों की पूर्ती 'a', 'an', 'the' या 'x' से कीजिये –

1. We have ..... biggest fair of Rajasthan, held during Dussehra in Kota.
2. It was in those days when I was posted in ..... rural area.
3. Piyush was ..... only child of ..... Panwars.
4. It is quite safe to donate blood to ..... HIV patient.
5. I have ..... bad habit of chewing gutkha.
6. I have been chewing gutkha for ..... last two years.
7. Where there is ..... will, there is ..... way.
8. Sushrut is known as ..... father of anaesthesia.
9. Amrita Devi was dumbstruck with ..... wonder.
10. ..... defaulters will be penalized and prosecuted.
11. As ..... result, he did well in his training.

Answers:

– 1. the 2. a 3. the, the 4. an 5. a 6. the 7. a, a 8. the 9. x 10. The 11. A

♦ ♦ ♦ ♦

Short Notes

अध्याय 2

Preposition

Short Notes

– Preposition दो शब्दों से मिलकर बना है-Pre तथा Position. Pre का अर्थ है पहले तथा Position का अर्थ है रखा हुआ (placed) अर्थात् वह शब्द जो किसी Noun अथवा Pronoun से पहले प्रयोग किया जाता है। Preposition सम्बन्धसूचक शब्द होता है जो किसी वाक्य में उस noun अथवा pronoun जिससे पूर्व इसका प्रयोग होता है, का किसी दूसरे Noun अथवा Pronoun के साथ सम्बन्ध बतलाता है। जैसे-
The book is on the table.
The cat is under the chair.
कुछ प्रमुख Prepositions के प्रयोग:

1. In (अन्दर, में)

(i) यदि कोई पहले से ही अन्दर हो तो in का प्रयोग होता है, यह स्थिरता का भाव देता है। जैसे-
1. My book is **in** the bag.
2. You are sitting **in** the room.

(ii) महीने व सन् के पहले in लगता है-
1. Mahatma Gandhi was born **in** 1869.
2. He will come **in** July.

(iii) इसी प्रकार मौसम, सप्ताह, प्रातः, सायं आदि के लिए भी in का प्रयोग किया जाता है in summer, in winter, in a week, in the morning, in the evening, in the afternoon etc.

(iv) देशों, बड़े शहरों, प्रान्तों, जिलों आदि के नामों के साथ in का प्रयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में, बड़े स्थानों के लिए in का प्रयोग किया जाता है
1. He lives **in** India.
2. He lives at Sanganer **in** Jaipur District.

2. Into (अन्दर, में)

– जब पहले से अन्दर नहीं हो और बाद में गति होकर अन्दर हो तो into का प्रयोग करते हैं। दूसरे शब्दों में,
(i) जब गति हो, और
(ii) स्थान परिवर्तन अथवा रूप-परिवर्तन हो तो into का प्रयोग करो।
1. They pulled Simon **into** the boat.
2. He came **into** the room,
3. He put the book **into** the bag.

3. 0n (पर, ऊपर)

(i) जब एक वस्तु दूसरी वस्तु के ऊपर हो, और दोनों की सतह स्पर्श होती हो, तो on का प्रयोग होता है। in की तरह स्थिर अवस्था में ही इसका प्रयोग होता है।
1. He is sitting **on** a chair.
2. My book is **on** the table.

(ii) दिनों के नाम के पहले on आता है, जैसे
He came here **on** Monday

(iii) पैदल के लिए 'on foot' आता है, जैसे
He came **on** foot.

4. Upon = (पर, ऊपर)

– जब पहले से ऊपर नहीं हो और गति द्वारा स्थान परिवर्तन होकर ऊपर हो तो upon का प्रयोग करते हैं। The cat jumped **upon** the table.

5. Above (ऊपर)

– ऊपर, से ऊँचा, से अधिक आदि के अर्थ में above का प्रयोग किया जाता है
1. The sky is **above** our head,
2. We were flying **above** the clouds.
3. It weighs **above** ten tons.

6. Over = (ऊपर)

– ऊपर से अधिक, सीधे ऊपर किन्तु वस्तु एक-दूसरे को छूती न हो तो over का प्रयोग होता है। स्पर्श होने पर गति हो अथवा ढकने का अर्थ हो तो भी over का प्रयोग करते हैं।
1. There was a lamp hanging **over** the table.
2. I have **over** thirty books.
3. Spread this cloth **over** the table.

7. At

(i) की तरफ, निकट at दो अर्थों में प्रयोग होता है—
(1) की तरफ (2) निकट
1. Look **at** the blackboard.
2. Sita is standing **at** the door.

(ii) घड़ी के समय के पहले
1. He came to me **at** 6 p.m.
2. I get up **at** 4 a.m.

(iii) छोटे स्थान के लिए at तथा बड़े स्थान के लिए in का प्रयोग करो।

– 1. Mahatma Gandhi was born **at** Porbandar in Gujarat.
2. I live **at** Rajasthan in India.

– Under = नीचे जब कोई किसी के नीचे हो किन्तु सतह स्पर्श न करे |
1. The cap-seller was sleeping **under** a tree.
2. The cat is sitting **under** the table.

8. Of (का, की, के)

(1) of का प्रयोग अधिकार या सम्बन्ध बताने के लिए का, के, को के अर्थ में किया जाता है
1. Are these bales **of** silk yours?
2. Good writing is a necessary part **of** education,

(ii) किसी बीमारी से मृत्यु होने का सम्बन्ध बतलाने के लिए भी of का प्रयोग किया जाता हैHe died **of** chholera,

(iii) किसी वस्तु से कोई चीज निर्मित हो तथा उस मूल वस्तु का अस्तित्व अभी भी हो तो of का प्रयोग होगा
This chair is made **of** wood.

9. After (बाद में, पीछे)

– 1. She came **after** 5 o'clock.
2. People ran **after** the thief.

10. For (के लिए के अर्थ में)

(i) समय की अवधि के लिए 'से' के अर्थ में
I have been studying cases **for** two hours.

(ii) कीमत के लिए
I bought this pen **for** five rupees.

11. Since

– Since का प्रयोग 'समय के बिन्दु' (Point of time) अर्थात् निश्चित समय से पहले 'से' के अर्थ में किया जाता है। यह ध्यान रहे कि since का प्रयोग केवल Perfect Tense में ही किया जाता है।
1. I have been living in Canada **since** 1990.
2. He has been working very hard **since** July,

12. In front of (के सामने)

– 1. We should put the book **in front of** our eyes.
2. There is a shop **in front of** my school.

– Between = दो व्यक्तियों अथवा वस्तुओं में अथवा उनके बीच में
1. Distribute the pens **between** Sita and Vimla,
2. There is a pen **between** these two books.

13. Among (दो से अधिक व्यक्तियों अथवा वस्तुओं के बीच में)

– She came and distributed apples **among** ten students,

14. From.....to (से ..... तक/को)

– किसी स्थान से आओ तो 'from' का प्रयोग करो। —किसी स्थान पर जाओ तो "to' का प्रयोग करो।

– 1. I am going **to** school
2. She went **to** Delhi.
3. Sita is coming **from** her house.
4. He will return **from** Mumbai in March.
5. He will go **from** Jaipur to Jodhpur.

15. Along = सहारे-सहारे, किनारे-किनारे

(i) लम्बाई की दिशा में एक किनारे से दूसरे किनारे तक एक रेखा में गति दर्शाने के लिए 'along' का प्रयोग किया जाता हैWe walked **along** the road.

Short Notes

(ii) किनारे-किनारे स्थित होने का भाव प्रकट करने के लिए भी 'along' का प्रयोग किया जाता है
Trees grew **along** the river bank

16. Across = आर-पार, उस पार

(i) किसी चीज के दूसरी तरफ के लिए She lives **across** the river.
(ii) एक तरफ से दूसरी तरफ के लिए
They built a bridge **across** a river.
(iii) किसी क्षेत्र में एक तरफ से दूसरी तरफ अथवा विपरीत दिशा में गति दर्शाने के लिए the thief ran **across** the field.

17. Through = में होकर

(i) Through का प्रयोग गतिशील क्रिया को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह एक छोर से दूसरे छोर तक की गति दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है
1. The thief came **through** the window.
2. A man was passing **through** the forest.

18. By (द्वारा)

(i) Passive Voice में-
1. A story is written **by** Sita.
2. Food was cooked **by** my mother.
(ii) किसी वाहन के अन्दर बैठ कर यात्रा करना-
1. She will go **by** car.
2. My father will come **by** train.
(iii) 'अधिकतम समय' या तक के अर्थ में अथवा इस समय से अधिक देर से नहीं, दिये हुए समय से पहले–
[नोट-ऐसे वाक्यों में by के तुरन्त बाद कोई समय-सूचक शब्द अवश्य दिया हुआ होता है। प्रमुख समय-सूचक शब्द ये हैं-घड़ी का समय (जैसे सात बजे), दिनांक (जैसे—17 तारीख), सप्ताह का दिन (जैसे सोमवार), महीने का नाम (जैसे—मार्च, मई), सन् (जैसे—सन् 2017), सुबह, शाम, रात्रि, कल, सप्ताह आदि।]
He will finish his work **by** 5 p.m.
(iv) 'निकट' तथा 'पास' का भाव प्रकट करने के लिए
Seema is sitting **by** Raju.
(v) किसी व्यक्ति के कार्य के अर्थ में
The book is written **by** a famous writer.
(vi) through अथवा along के अर्थ मेंHe came in **by** the back door.

19. With (से, साथ)

(i) किसी वस्तु द्वारा काम किये जाने के भाव में with का प्रयोग किया जाता है
I write **with** a pen.
Mohan beat me **with** a stick.
(ii) किसी व्यक्ति के साथ के अर्थ में भी with का प्रयोग करते हैं
I live **with** Mohan.
She goes to school **with** Vimla.

20. Within (के भीतर)

– किसी निश्चित समय (अथवा अवधि) या किसी निश्चित स्थान के भीतर कार्य करने अथवा सीमित रहने का भाव देने के लिए within का प्रयोग किया जाता है।
1. I shall come **within** an hour.
2. Write a story **within** two pages.

21. About (के बारे में, लगभग)

– (i) के बारे में' के अर्थ में
(a) I know something **about** computer.
(ii) 'लगभग' के अर्थ में
(a) I reach school at **about** 8 a.m.

Exercise: 1

Choose the correct answer:

1. The pond was ..... the middle of the 200.
(a) in (b) on (c) out (d) to **[a]**

2. The animals chatted ..... each other.
(a) with (b) all (c) since (d) to **[a]**

Short Notes

3. **The owl was surprised ..... this change.**
(a) in (b) into (c) at (d) up **[c]**

4. **They make fun ..... me.**
(a) under (b) of (c) above (d) down **[b]**

5. **My stomach ached ..... ten days.**
(a) since (b) for (c) in (d) to **[b]**

6. **They gave me slice ..... slice.**
(a) since (b) to (c) after (d) for **[c]**

7. **We shall find solutions ..... the problems.**
(a) into (b) in (c) to (d) up **[c]**

8. **We will stay ..... our rooms.**
(a) since (b) for (c) in (d) down **[c]**

9. **They all agreed ..... it.**
(a) since (b) into (c) to (d) above **[c]**

10. **They are tired of being bullied ..... us.**
(a) from (b) by (c) in (d) out **[b]**

11. **They took it ..... one cage to the other.**
(a) from (b) since (c) for (d) into **[a]**

12. **The loser went ..... the nearby mines.**
(a) from (b) above (c) into (d) over **[c]**

13. **He wiped tears ..... his cheeks.**
(a) into (b) in (c) from (d) to **[c]**

14. **I cannot go ..... Jaipur.**
(a) up (b) above (c) over (d) to **[d]**

15. **He ordered an utmost alert ..... sides.**
(a) since (b) for (c) up (d) on **[d]**

Exercise: 2

1. **The young lady stared ..... them.**
(a) at (b) for (c) in (d) into **[a]**

2. **My husband is ..... heaven.**
(a) without (b) from (c) since (d) in **[d]**

3. **They are not meant ..... you.**
(a) into (b) in (c) for (d) to **[c]**

4. **All ..... you will soon die.**
(a) to (b) of (c) with (d) at **[b]**

5. **She was conscious of..... her leg.**
(a) of (b) on (c) with (d) off **[a]**

6. **She died ..... her country.**
(a) for (b) on (c) since (d) from **[a]**

7. **The body bhikshu came .....**
(a) in (b) from (c) at (d) below **[a]**

8. **Thousands of questions came ..... his mind.**
(a) over (b) for (c) since (d) into **[d]**

9. **He was silent ..... a long time.**
(a) in (b) into (c) for (d) since **[c]**

10. **I shall go ..... the Emperor.**
(a) into (b) with (c) in (d) since **[b]**

Exercise: 3

11. **There was hardly anything ..... the room.**
(a) in (b) into (c) by (d) to **[a]**

12. **They began to fall ..... the ground in heaps.**
(a) into (b) up to (c) under (d) on **[d]**

Short Notes

मुश्किल परीक्षाएं भी आसान लगेगी

जब करेंगे लक्ष्य एप के संग तैयारी

मौका है, अपनी तैयारी को सिलेक्शन वाली तैयारी बनाने का

LIVE FROM CLASSROOM

ONLINE/OFFLINE COURSE

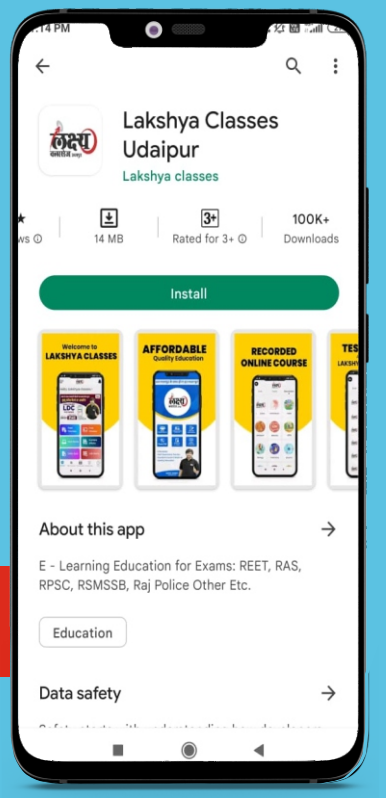

Test Series | Recorded Courses | Downloadable Classes | Free Quizzes | Video & Audio Lecture | Previous Year Paper | Free Current Affair | Doubt Solving Session

स्कूल I Grade व्याख्याता Ist Paper/2nd Paper	SI दोनों प्रश्न पत्रों की सम्पूर्ण तैयारी	BSTC PTET	संगणक	पशु परिचर	FORESTER
RAS Pre	शिक्षक मुख्य परीक्षा	II Grade शिक्षक Ist Paper/2nd Paper	CONSTABLE	BANKING ASSISTANT	
REET LEVEL पात्रता परीक्षा I & II	LAB ASSISTANT	पटवार	LDC	CET 2024	WOMAN SUPERVISOR

Scan to Download Lakshya App Now

Google play

INSTAGRAM | FACEBOOK | YOUTUBE | TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)

M. 6376957258, 6376491126

RAJASTHAN

BSTC

प्रवेश पूर्व परीक्षा

संस्कृत

Pre D.El.Ed. EXAMINATION 2024

विशेषताएँ

- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम,सरल भाषा एवं व्यावहारिक उदाहरणों का संकलन
- नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
- परीक्षोपयोगी संभावित प्रश्नोत्तरों का संग्रह

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™
M. 6376957258, 6376491126
Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)
3rd floor, E-112, Kalpatru Shopping Centre, Jodhpur

विषय - वस्तु

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्वर, व्यंजन (उच्चारण स्थान)	1 - 2
2.	लिंग ज्ञानम्	3
3.	संधि	4 - 10
4.	प्रत्यय	11 - 14
5.	समास	15 - 16
6.	उपसर्ग	17 - 27
7.	शब्द रूप	28 - 34
8.	धातु रूप	35 - 48
9.	कारक	49 - 54
8.	वचन	55

1 अध्याय

स्वर, व्यंजन (उच्चारण स्थान)

Short Notes

वर्ण विचार

वर्ण की परिभाषा:

– किसी भी भाषा की सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है, अर्थात् ऐसी ध्वनि जिसका अंतिम विभाजन कर दिया गया हो एवं आगे विभाजन किया जाना संभव नहीं हो; उसे वर्ण कहते हैं। जैसे- क्, ख्, ग्, घ्, अ, इ, उ इत्यादि। अतः भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई को **ध्वनि** कहते है तथा भाषा की सबसे छोटी लिखित इकाई को **वर्ण** कहते है।

वर्ण के भेद: वर्ण के मुख्यतः दो भेद माने गए हैं-

– **अच् (स्वर) :** जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी सहायता के किया जाता है, वे स्वर कहलाते हैं। इनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से हैं-

1. मात्रा या समय के आधार पर वर्गीकरण-

स्वर (अच्) :-

(1) ह्रस्व: (एक मात्रिक:)

(2) दीर्घ: (द्विमात्रिक:)

(3) प्लुत (त्रिमात्रिक:)

"एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो, द्विमात्रो दीर्घमुच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो, व्यंजनं चार्धमात्रकम्।।"

2. माहेश्वर सूत्रों में कुल नौ अच् (स्वर) माने हैं- 'अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ'

(i) **ह्रस्व स्वर-** जिस स्वर के उच्चारण में केवल एक मात्रा का समय लगता है वह स्वर ह्रस्व स्वर कहलाता है। इसमें निम्नलिखित 5 स्वर शामिल किए जाते हैं- 'अ, इ, उ, ऋ, लृ'

(ii) **दीर्घ स्वर-** जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है तो वह दीर्घ स्वर कहलाता है। दीर्घ स्वरों में प्रायः दो-दो स्वरों को मेल होता है, अतः इनको संयुक्त स्वर भी कहते हैं। इनकी संख्या 8 मानी जाती हैं-

(क) आ, ई, ऊ, ॠ' (4)

(ख) दीर्घ स्वर-ए, ओ, ऐ, औ (4)

'लृ' स्वर का दीर्घ रूप नहीं होता है।

संस्कृत व्याकरण में कुल 8 दीर्घ स्वर माने गए है।

(iii) **प्लुत स्वर-** जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगता है तो वह स्वर प्लुत स्वर कहलाता है। प्लुत स्वर के रूप को दर्शाने के लिए स्वर के साथ प्रायः (३) चिह्न का प्रयोग कर दिया जाता है। पाणिनीय शिक्षा ग्रंथ में 8/9 प्लुत स्वर स्वीकार किए गए हैं-

नोट- इस प्रकार संस्कृत व्याकरण में कुल 21/22 स्वर वर्ण माने गए हैं।

1. ह्रस्व-5
2. दीर्घ-8
3. प्लुत-8/9

कुल = 21/22 वर्ण

ह्रस्व-दीर्घ एवं प्लुत इन तीनों प्रकार के स्वरों के पुनः तीन भेद कर दिए जाते हैं।

(1) उदात्त

(2) अनुदात्त

(3) स्वरित।

उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित स्वरों के भी पुनः दो भेद कर दिए जाते हैं।

(1) अनुनासिक स्वर (जैसे-अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ)

(2) अननुनासिक या निरनुनासिक स्वर (जैसे-अ, आ, इ, ई)

हल् (व्यञ्जन) : किसी स्वर की सहायता से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यञ्जन कहलाते है। संस्कृत वर्णमाला में कुल 33 व्यञ्जन हैं, इनका वर्गीकरण तीन प्रकार से किया गया हैं।

(1) स्पर्श व्यञ्जन- क् से लेकर म् तक 25 वर्ण स्पर्श व्यञ्जन कहलाते है।

(2) अन्तःस्थ व्यञ्जन- य्, व्, र्, ल् यह चार वर्ण अन्तःस्थ व्यञ्जन कहलाते है।

(3) ऊष्म व्यञ्जन- श्, ष्, स्, ह् यह चार वर्ण ऊष्म व्यञ्जन कहलाते है।

उपर्युक्त व्यंजनों के अलावा चार संयुक्त व्यंजनों की रचना भी की जाती है,

जैसे-

(1) श्र = श् + र (2) ज्ञ = ज् + ञ (3) त्र = त् + र (4) क्ष = क् + ष

अयोगवाह वर्ण –

– जो वर्ण लेखन में काम आते है उन्हें अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। अयोगवाह वर्ण निम्नलिखित है।

(1) अनुस्वार – इसका प्रयोग हमेशा स्वर के बाद में होता है।

Short Notes

(2) विसर्ग- इसका प्रयोग भी स्वर के बाद होता है।
(3) अर्द्ध विसर्ग – विसर्ग का आधास्वरूप अर्द्ध विसर्ग कहलाता है।
(a) जिह्वामूलीय
(b) उपध्मानीय
(4) यम वर्ण – जो वर्ण दो-दो के जोड़े में आते है उन्हें 'यम' वर्ण कहा जाता है।
यम वर्ण 4 है क्क्, ख्ख्, ग्ग्, घ्घ्
- पाणिनीय शिक्षा ग्रंथ के अनुसार वर्णों की संख्या 63/64 मानी गयी है।
शम्भु अर्थात शंकर के मतानुसार 63 वर्ण माने गये है जबकि स्वयंभू अर्थात ब्रह्मा के अनुसार 64 वर्ण माने गये है।
1. स्वरों की संख्या 21 मानी गई है-
2. स्पर्शानां पञ्चविंशति = अर्थात स्पर्शी वर्णों की संख्या मानी गयी है क् से म् तक।
3. यादयश्च स्मृता ही अष्टौ = यकारादि वर्णों की संख्या 8 मानी गई है।
(a) अन्त:स्थ-वर्ण य्, व्, र्, ल् (b) ऊष्म: वर्ण = श्, ष्, स्, ह्
4. यम वर्णों की संख्या 4 मानी गई है।
कुं खुं गुं घुं
5. अनुस्वार = (1) वर्ण अनुस्वार भी माना गया है।
6. विसर्ग = (1) वर्ण विसर्ग भी माना गया है।
7. पराश्रित वर्ण = जो वर्ण किसी अन्य वर्ण पर आश्रित रहते है उन्हें पराश्रित वर्ण कहा जाता है।
पराश्रित वर्ण (2) है –
(1) जिह्वामूलीय
(2) उपध्मानीय
8. दु: स्पृष्ट वर्ण = जिस वर्ण का उच्चारण करते समय जिह्वा अत्यन्त कठिनाई से उच्चारण स्थान का स्पर्श करती है उसे दु: स्पृष्ट वर्ण कहते है। जैसे – दु: स्पृष्ट वर्ण = ळ्
व्यंजनों का वर्गीकरण : व्यंजनों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जा सकता है-
(1) उच्चारण के आधार पर वर्गीकरण
(2) प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण।

व्यंजनों का उच्चारण के आधार पर वर्गीकरण

उच्चारण स्थानानि-

क्र.सं.	सूत्र	सूत्र की परिभाषा
1	अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	अ, आ, क वर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), ह तथा विसर्ग (:) का उच्चारण स्थान कण्ठ होता है।
2	इचुयशानां तालुः	इ, ई, च वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्), य, तथा 'श' का उच्चारण स्थान तालु होता है।
3	ऋटुरषाणां मूर्धा	ऋ, ॠ', ट वर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र एवं ष का उच्चारण स्थान मूर्धा होता है।
4	लतुलसानां दन्ताः	लृ, त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्), ल एवं स का उच्चारण स्थान दंत होता है।
5	उपूपध्मानीयानामोष्ठौ	उ, ऊ, प वर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्) एवं ***उपध्मानीय वर्ण** (⁀प़, ⁀ फ़) का उच्चारण स्थान 'ओष्ठ' होता है।
6	(1) ञमङणनानां नासिका (2) नासिकानुस्वारस्य च	प्रत्येक वर्ग के पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) तथा अनुस्वार (ं) का उच्चारण स्थान ***नासिका** होता है।
7	एदैतोः कण्ठतालुः	**ए, ऐ** वर्णों का उच्चारण स्थान **कण्ठतालु** होता है।
8	ओदौतोः कण्ठोष्ठ्म	**ओ, औ** वर्णों का उच्चारण स्थान **कण्ठोष्ठ** होता है।
9	वकारस्य दन्तोष्ठम्	**व** वर्ण का उच्चारण स्थान **दन्तोष्ठ** होता है।
10	जिह्वामूलीयस्य जिह्वूलम्	***जिह्वामूलीय** वर्ण (⁀ क़, ⁀ ख़) का उच्चारण स्थान **'जिह्वामूल'** होता है।

- **उपध्मानीय-** यह अर्द्ध विसर्ग का रूप माना जाता है। इसका प्रयोग ⁀ प़, ⁀ फ़ के साथ किया जाता है।
- **जिह्वामूलीय-** यह भी अर्द्ध विसर्ग का रूप माना जाता है। इसका प्रयोग ⁀ क़, ⁀ ख़ के साथ किया जाता है।
- **नोट-** निम्नलिखित 10 वर्णों के 2-2 उच्चारण स्थान माने गए हैं-
(1) ए = कण्ठ + तालु
(2) ङ = कण्ठ + नासिका
(3) म = ओष्ठ + नासिका
(4) औ = कण्ठ + ओष्ठ
(5) ओ = कण्ठ + ओष्ठ
(6) ण = मूर्धा + नासिका
(7) ञ = तालु + नासिका
(8) न = दन्त + नासिका
(9) व = दन्त + ओष्ठ
(10) ऐ = कण्ठ + तालु
- इस प्रकार कुल आठ उच्चारण स्थान माने गए हैं, जैसे-
1. उरः (काकल) 2. कण्ठः 3. शिरः (मूर्धा) 4. जिह्वामूल
5. दन्त 6. नासिका 7. ओष्ठ 8. तालु

♦♦♦♦

2 अध्याय

लिंग ज्ञानम्

Short Notes

– हिन्दी में लिंग दो होते हैं- पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। संस्कृत में इन दो के अतिरिक्त और लिंग है- नपुंसकलिंग। समस्त संज्ञाएँ इन्ही तीन लिंगों में विभक्त है। संस्कृत में लिंगज्ञान बहुत कठिन है, क्योंकि लिंग प्रकृति के अनुसार नहीं है। अतः कोषों की सहायता, पाणिनीय के लिंगानुशासन तथा संस्कृत साहित्य के अध्ययन से लिंग ज्ञान हो सकता है। संस्कृत में एक ही वस्तु या व्यक्ति के वाचन शब्द भिन्न-भिन्न लिंगों के हैं, यथा- 'तटः-तटी-तटम्' इन तीनों का अर्थ किनारा है।

पुल्लिंग

– पुँल्लिंग शब्दों के नियम निम्नलिखित है-

1. निम्न शब्द एवं इनके पर्यायवाचक सभी शब्द पुँल्लिंग होते है- करः (किरण, हाथ) और बलिः, गण्डः (कपोल), ओष्ठः (ओठ), दन्तः (दांत), कण्ठः, केशः, नखः (नाखून) और स्तनः, परन्तु दीधितिः (किरण) शब्द स्त्रीलिंग है और मरीचिः शब्द स्त्रीलिंग और पुंलिंग दोनों है।
2. निम्न शब्द तथा इनके पर्यायवाचक शब्द पुंल्लिंग होते है- वर्ण (शुक्लः, कृष्णः आदि रंग), अग्निः, शब्दः, वायुः (हवा), रस (कटुः, तिक्त, आदि), नरः (आदमी), अहिः (साँप), ऋतु (वसन्तः, ग्रीष्मः आदि), किन्तु ऋतुवाचक शरत्, मास वाचक (वैशाख, ज्येष्ठ, आदि) और वर्षा शब्द स्त्रीलिंग है।
3. साधारण और विशेष सुर (देवता) और असुर (राक्षस) और इनके अनुचर वाचक शब्द पुँलिंग होते हैं, यथा- दानवः, देवः, शिवः, विष्णु, दैत्यः आदि।
4. लाज-लाजा, अक्षत-अक्षताः, दार-दाराः, असु (प्राण)- असवः शब्द पुँल्लिंग और बहुवचनान्त होते है।
5. समास युक्त अह और अह-भागान्त शब्द पुंल्लिंग होते हैं, यथा- एकाहः, मध्याः, पूर्वाः, द्वयहः, व्यहः, पराः इत्यादि किन्तु पुण्याहम् शब्द नपुंसकलिंग है।
6. घञ्, अप्, घ और अच् प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिंग होते है जैसे- विस्तर, भावः, त्यागः, पाकः, सञ्यः, गरः, गोचरः, विजयः, विनयः इत्यादि शब्द पुँल्लिंग होते हैं अपितु मुख वय, भय, पद लिंग आदि शब्द नपुंसकलिंग होते हैं।
7. नकारान्त शब्द पुँल्लिंग होते है, जैसे आत्मन्-आत्मा, राजन्-राजा, किन्तु मन् प्रत्ययान्त कर्मन् और चर्मन् आदि शब्द नपुंसकलिंग होते है।
8. निम्न शब्द और इनके पर्यायवाचक शब्द पुँल्लिंग होते है- स्वर्गः, यागः (यज्ञ), अद्रिः (पर्वत), मेघः, अब्धिः (समुद्र), द्रुः (वृक्ष), कालः (समय), असिः (तलवार), शरः (बाण) और शत्रुः। किन्तु त्रिविष्टपम् (स्वर्ग), अभ्रम् (मेघ) ये शब्द नपुसकलिंग हैं। द्यौः और दिव् (स्वर्ग) ये शब्द स्त्रीलिंग हैं। इषुः (बाण) शब्द पुंल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों हैं। स्वर् (स्वर्ग) अव्यय है।

स्त्रीलिंग

– नित्य शब्द स्त्रीलिंग होते है-

1. समाहार द्विगु समासयुक्त अकारान्त शब्द (जिनके आगे ईप् होता है) स्त्रीलिंग होते है। यथा-त्रिलोकी, पञ्चवटी, द्विपुरी आदि, किन्तु पात्र, युग और भुवन शब्द परे रहने से नपुंसकलिंग होता है, यथा पञ्चपात्रम् चतुर्युगम्, त्रिभुवनम्।
2. तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग होते है। यथा-लघुता, सुन्दरता, ब्राह्मणता आदि।
3. तिथिवाचक शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, यथा-प्रतिपत्, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पूर्णिमा आदि।
4. क्तिन् (ति) प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। यथा-मतिः, गतिः, सम्पत्ति इत्यादि परन्तु ज्ञातिः शब्द पुँल्लिंग होता है।
5. ईकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते है। यथा- नदी, लक्ष्मीः, गौरी, देवी।
6. ऋकारान्त शब्द स्त्रिलिंग होते है यथा-मातृ (माता), दृहितृ (कन्या), स्वसृ (बहिन), यातृ (पति के भाइयों की स्त्रियाँ) और ननांदृ (ननद)।
7. एकाक्षर ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, यथा-श्रीः, हीः, भूः, भ्रः आदि।
8. विद्युत् (बिजली), निशा (रात), बल्ली (लता), वीणा (बीन), दिक् (दिशा), भूः (पृथ्वी), नदी, हीः (लाज) वाचक शब्द स्त्रीलिंग होते है।

नपुंसकलिंग

1. समाहारद्वन्द्व और अव्ययीभावसमासोत्पन्न शब्द नपुसंकलिंग होते हैं, यथा-पणिपादम् हस्त्यश्वम्, प्रतिदिनम्, यथाशक्ति आदि।
2. तद्धित के त्व और ष्यञ् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिंग हाते हैं, यथा-शुक्लत्वं-शौक्ल्यम्, सुन्द्रत्वम् - सौन्दर्यम्, राजत्वम्- राज्यम्, मधुरत्वम् - माधुर्यम् आदि।
3. भाववाच्य में ल्युट् (अन) प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं, वे नपुंसकलिंग होते हैं, यथा- गमनम्, शयनम्, भोजनम् इत्यादि।
4. यदि संख्यावाचक शब्द आदि में हो और अन्त में रात्र शब्द हो तो नपुसंकलिंग होतो है। यथा-द्विरात्रम्, पञ्चचात्रम् आदि।
5. शत आदि संख्यावाचक शब्द नपुंसकलिंग होते हैं, यथा-शतम्, सहस्त्रम् आदि पर कोटिः, शब्द स्त्रीलिंग होता है। शत, अयुत, प्रयुत, शब्द पुंल्लिंग और नपुंसकलिंग होते है, यथा-अयं शतः, इदं शतम् इत्यादि।

♦♦♦♦

3 अध्याय

संधि

Short Notes

- सन्धि का सामान्य अर्थ मेल या जुड़ाव है तथा इसी से ही सन्धि कार्य संभव होता है। संस्कृत भाषा के वाक्य में प्रत्येक पद का अंत किसी स्वर, व्यञ्जन, अनुस्वार अथवा विसर्ग में होता है। उसके आगे जब कोई अन्य शब्द आता है तब पहले शब्द के अंतिम वर्ण अथवा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण अथवा दोनों में कुछ परिवर्तन हो जाता है। यही परिवर्तन सन्धि कहलाता है।
- सन्धि का वास्तविक अर्थ है-भली प्रकार रखना अथवा मिलाना। अच्छी तरह तभी मिलाया जा सकता है जब बीच में किसी भी प्रकार का कोई व्यवधान न हो।
- व्युत्पत्ति= सम् उपसर्ग, धा धातु, कि प्रत्यय

संधि पद पुल्लिङ्ग है

सन्धि की परिभाषा-

- **"परः सन्निकर्षः संहिता"** पाणिनि द्वारा दिए गए इस सूत्र के अनुसार सन्धि के लिये दो वर्ण परस्पर सन्निकट होने चाहिए; दूरवर्ती वर्णों में सन्धि नहीं होती है। वर्णों की व्यवधान रहित अति समीपता ही संहिता कहलाती है। संहिता से तात्पर्य सन्धि से ही है।
- वाक्य में (वक्ता की इच्छा पर)- कृष्णः क्षेत्रं याति (इस वाक्य को सन्धि करने पर निम्न प्रकार से भी लिखा जा सकता है- कृष्णो क्षेत्रं याति (सन्धियुक्त वाक्य)

सन्धि के भेद

- उपर्युक्त किए गए संधि के विवरण में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्णों की अत्यधिक समीपता (संहिता) के कारण उन वर्णों में उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को ही सन्धि कहा जाता है। हालांकि व्याकरण के आदि आचार्य पाणिनि ने सन्धि के भेदों का वर्णन नहीं किया फिर भी परवर्ती आचार्यों ने सन्धि के तीन भेद स्वीकार किए है-

1. **अच् सन्धि (स्वर सन्धि)-** दो स्वरों की अत्यधिक समीपता के कारण जब उनमें से एक स्वर या दोनों स्वरों में विकार या परिवर्तन होता है, तो उसे स्वर सन्धि (अच् सन्धि) कहते हैं। यथा-
   हरि + ईशः = हरीशः विद्या + आलयः = विद्यालयः भानु + उदयः = भानूदयः
2. **हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि)-** दो या दो से अधिक वर्णों के पास-पास आने पर होने वाला परिवर्तन यदि व्यञ्जन के कारण अथवा व्यञ्जन में होतो व्यञ्जन संधि होती है।
   हल् सन्धि तीन प्रकार से हो सकती है-
   (1) व्यञ्जन की व्यञ्जन के साथ- उत् + चारण = उच्चारण
   (2) व्यञ्जन की स्वर के साथ- अच् + आदि = अजादि
   (3) स्वर की व्यञ्जन के साथ- लक्ष्मी + छाया=लक्ष्मीच्छाया
3. **विसर्ग सन्धि-** जब पास-पास आने पर पदों में परिवर्तन विसर्गों के कारण हो तब विसर्ग सन्धि कहलाती है। या जब विसर्ग के पश्चात् कोई स्वर या व्यञ्जन आने पर विसर्ग में विकार या परिवर्तन होता है तब उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। विसर्ग सन्धि दो प्रकार से हो सकती है। यथा-
   (1) विसर्ग की व्यञ्जन के साथ-रामः + चिनोति = रामश्चिनोति
   (2) विसर्ग की स्वर के साथ-मुनिः + आगतः = मुनिरागतः

व्याकरण के अनुसार संधि के पाँच भेद है।

- 1. अच् सन्धिः (स्वर सन्धिः)
  2. हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि)
  3. विसर्ग सन्धि
  4. प्रकृति भाव
  5. स्वादि

अच् सन्धिः (स्वर सन्धिः)

- जब स्वर के साथ स्वर का मेल हो तो उसे स्वर सन्धि कहते है
- स्वर सन्धि के निम्नलिखित आठ भेद किए जा सकते हैं।
  (i) दीर्घ स्वर सन्धिः
  (ii) गुण स्वर सन्धिः
  (iii) वृद्धि स्वर सन्धिः
  (iv) यण् स्वर सन्धिः
  (v) अयादि स्वर सन्धिः
  (vi) पररूप स्वर सन्धिः
  (vii) पूर्वरूप स्वर सन्धिः
  (viii) प्रकृति भाव स्वर सन्धिः

Short Notes

(i) दीर्घ स्वर सन्धि-

– यदि पूर्व पद का अंतिम स्वर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ हो तथा उत्तर पद का पहला (अक्षर) स्वर भी उसी जाति का हो तो दोनों के स्थान पर एक दीर्घ हो जाता है। इसे हम निम्न प्रकारों से समझ सकते हैं, जैसे-

सूर्य + अस्त: = सूर्यास्त
महा + आशय: = महाशय:
हिम + आलय: = हिमालय
कदा + अपि = कदापि
हरि + इच्छा = हरीच्छा
रजनी + ईश: = रजनीश:
मुनि + ईश: = मुनीश:
शची + इन्द्र: =शचीन्द्र:
शश + अंक: = शशांक:
त्रिपुर + अरि: = त्रिपुरारि:
होतृ + ऋकार = होतृकार:
कुश + आसन: = कुशासन:
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
दया + अर्णव: = दयार्णव:
दया + आनन्द = दयानन्द:
विद्या + आलय: = विद्यालय:

लृ स्वर का कोई दीर्घ नहीं होता है, अतः इसका कोई उदाहरण नहीं बनता है।

(ii) गुण स्वर सन्धि-

– यदि पूर्व पद के अन्त में अ, आ हो तथा उत्तर पद के पहले अक्षर इ, ई, उ, ऊ, ऋ, लृ हों तो उनका क्रम से ए, ओ, अर् तथा अल् हो जाता है।

गज + इन्द्र: = गजेन्द्र:
धन + ईश: = धनेश:
महा + ऋषि: = महर्षि:
महा + ऋद्धि: = महर्द्धि:
राधा + इच्छा = राधेच्छा
महा + ईश्वर: = महेश्वर:
गण + ईश: = गणेश:
देव + ईश: = देवेश:
नव + ऊढा = नवोढा
जल + ऊर्मि: = जलोर्मि:
गंगा + ऊर्मि: = गंगोर्मि:
दया + ऊन = दयोन:
रमा + ईश: = रमेश:
गंगा + ईश्वर: = गंगेश्वर:

अन्य उदाहरण

स्व + ईरिणी = स्वैरिणी
अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी
स्व + ईर: = स्वैर:
स्व + ईरिन् = स्वैरी
प्र + ऊढ: = प्रौढ:
प्र + ऊढि: = प्रौढि:
प्र + ऊह: = प्रौह:
क्षुधा + ऋत: = क्षुधार्त:
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
अव + ऋच्छति = अवार्च्छति
तृष + ऋत: = तृषार्त:
उप + ऋच्छति = उपार्च्छति
सुख + ऋत: = सुखार्त:
दु:ख + ऋत: = दु:खार्त:

(iii) वृद्धि स्वर सन्धि-

– यदि पूर्व पद के अंत में अ या आ तथा उत्तर पद के पूर्व वर्ण ए या ऐ हों तो दोनों के स्थान पर औ साथ ही ऋ उत्तर का पहला वर्ण हो तो 'आर' हो जाता है।

सह + एव = सहैव
कृष्णा + ऐक्यम् = कृष्णैक्यम्
तव + ऐश्वर्यम् = तवैश्वर्यम्
प्रार्थना + एषा = प्रार्थनैषा
अद्य + एव = अद्यैव
लोक + एषणा = लोकैषणा
तव + ऐश्वर्यम् = तवैश्वर्यम्
मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्
महा + औदार्यम् = महौदार्यम्
महा + औत्सुक्यम् = महौत्सुक्यम्

अन्य उदाहरण

– उप + ऋच्छति = उपार्च्छति
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
प्र + एजते = प्रेजते
उप + ओषति = उपोषति
स्थूल + ओतु: = स्थूलोतु: (पररूप सन्धि)
स्थूल + ओतु: = स्थूलौतु: (वृद्धि सन्धि)
बिम्ब + ओष्ठ: = बिम्बोष्ठ: (पररूप सन्धि)
बिम्ब + ओष्ठ: = बिम्बौष्ठ: (वृद्धि सन्धि)
दन्त + ओष्ठ: = दन्तोष्ठ: (पररूप सन्धि)
दन्त + ओष्ठ: = दन्तौष्ठ: (वृद्धि सन्धि)
कण्ठ + ओष्ठ: = कण्ठोष्ठ: (पररूप सन्धि)
कण्ठ + ओष्ठ: = कण्ठौष्ठ: (वृद्धि सन्धि)

(iv) यण् स्वर सन्धि-

– यदि पूर्व पद का अन्तिम वर्ण इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ तथा लृ तथा उत्तर पद का प्रथमाक्षर कोई भी भिन्न या विजातीय स्वर हा तो इ, इ को य्, उ, ऊ को व्, ऋ, ॠ को र तथा लृ को ल् हो जाता है।

वधू + ऐश्वर्यम् = वध्वैश्वर्यम्
पितृ + अर्थम् = पित्रर्थम्
मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा
लृ + आकृति: = लाकृति:
अति + ऐश्वर्यम् = अत्यैश्वर्यम्
दधि + ओदनम्=दध्योदनम्
अनु + अय: = अन्वय:
गुरु + आदेश: = गुर्वदिश:
वधू + आगमनम् = वध्वागमनम्
ऋतु + इक: = ऋत्विक:
वधू + ईक्षणम् = वध्वीक्षणम्
लघु + औदार्यम्=लघ्वौदार्यम्

Short Notes

(v) अयादि सन्धि-

- एच् (ए, ओ, ऐ, औ) के पश्चात् अच् (कोई भी स्वर) आए तो एच् को क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है अर्थात् बाद में कोई भी स्वर जाने पर ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय् एवं औ को आव् हो जाता है। जैसे-

भो + अनम् = भवनम्	भो + उकः = भावुकः
यो + अनम् = यवनम्	गो + एषणा = गवेषणा
पौ + अकः = पावकः	द्वौ + ऐतिहासिकौ=द्वावैतिहासिकौ

अन्य उदाहरण

हो + यम् = हव्यम्	भौ + यत् = भाव्यम्
गो + अग्रम् = गवाग्रम् (अयादि सन्धिः)	गो + अग्रम् = गोऽग्रम् (पूर्वरूप सन्धिः)
लो + यम् = लव्यम्	लौ + यत् = लाव्यम्
गो + अग्रम् = गो अग्रम् (प्रकृति भाव सन्धिः)	गो + अक्षः = गवाक्षः (अयादि सन्धिः)
गो + यत् = गव्यम्	नौ + यत् = नाव्यम्

(vi) पूर्वरूप सन्धि-

- एङ् (ए, ओ) के पश्चात् ह्रस्व अ आए तो अ को पूर्वरूप हो जाता है और पूर्वरूप हुए अ के स्थान पर अवग्रह (ऽ) लगा दिया जाता है।

जैसे-

को + अपि = कोऽपि	यज्ञे + अग्निः = यज्ञेऽग्निः
वृक्षे + अस्मिन् = वृक्षेऽस्मिन्	साधो + अत्र = साधोऽत्र

(vii) पररूप सन्धि-

- पूर्ववर्ण का परवर्ण में मिल जाना पररूप कहलाता है अर्थात् इस सूत्र के अनुसार अकारान्त उपसर्ग के बाद यदि एङ् (ए, ओ) से शुरु होने वाली धातुओं का कोई शब्द आता है तो पूर्व-पर के स्थान पर पररूप एकादेश होता है। जैसे-

प्र + एजते = प्रेजते	प्र + ओषति = प्रोषति
उप + एजते = उपेजते	उप + ओषति = उपोषति

हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि)-

- दो या दो से अधिक वर्णों के पास-पास आने पर होने वाला परिवर्तन यदि व्यञ्जन के कारण अथवा व्यञ्जन में हो तो व्यञ्जन सन्धि होती है।

हल् सन्धि तीन प्रकार से सम्भव हो सकती है-

(1) व्यञ्जन की व्यञ्जन के साथ।
(2) व्यञ्जन की स्वर के साथ।
(3) स्वर की व्यञ्जन के साथ।

- व्यञ्जन सन्धि के मुख्य भेदों को व्याकरणाचार्यों ने वर्णों के आधार पर उनका नामकरण कर सन्धि के मुख्य सात भेदों का निरूपण इस प्रकार किया है-

(i) श्चुत्व सन्धिः	(ii) ष्टुत्व सन्धिः
(iii) जशत्व सन्धिः	(iv) अनुस्वार सन्धिः
(v) अनुनासिक सन्धिः	(vi) पूर्वसवर्ण
(vii) परसवर्ण	(viii) तुगागम सन्धिः
(xi) चर्त्व सन्धिः	(x) छत्व

(i) श्चुत्व सन्धि :

- सकार अथवा तवर्ग का यदि शकार अथवा चवर्ग से योग हो तो सकार को शकार एवं तवर्ग को क्रमशः चवर्ग हो जाता है अर्थात् तवर्ग का जो वर्ण होगा उसको क्रम में चवर्ग का ही वर्ण हो जाएगा। (पहले की पहला, दूसरे को दूसरा आदि)। जैसे-

रामस् + शेते = रामश्शेते	सत् + चित् = सच्चित्
उत् + छिन्नः = उच्छिन्नः	तत् + छविः = तच्छविः
तद् + जलम् = तज्जलम्	रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति

अन्य उदाहरण

अश् + नाति = अश्नाति	प्रश् + नः = प्रश्नः
जश् + त्वम् = जश्त्वम्	विश् + नः = विश्नः

(ii) ष्टुत्व सन्धिः -

- सकार अथवा तवर्ग का यदि षकार एवं टवर्ग के साथ योग हो तो सकार को षकार एवं तवर्ग को क्रमशः टवर्ग हो जाता है अर्थात् तवर्ग का जो वर्ण हो, उसको क्रम से टवर्ग का वही वर्ण हो जाएगा। जैसे-

षष् + थः = षष्ठः	पेष् + ता = पेष्टा
तत् + टीका = तट्टीका	रामस् + टीकते = रामष्टीकते

विष् + नु = विष्णुः
उद् + डीनः = उड्डीनः
दुष् + तः = दुष्ट
रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

अन्य उदाहरण

षट् + नवति = षण्णवति
षट् + नगरी = षण्णगरी
षट् + सन्तः = षट्सन्तः
षट् + ते = षट्ते
षट् + नाम = षण्णाम

(iii) जशत्व सन्धिः -

– यदि पद के अन्त में झल् (वर्ग का 1, 2, 3, 4 स, श, ष, ह) वर्ण आए तो उसे जश् (ज्, ब्, ग्, ड्, द्) हो जाता है अर्थात् यदि किसी पद के अंत में वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ व्यञ्जन अथवा श्, ष्, स्, ह आए तो उन्हें अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे-

षट् + एव = षडेव
अप् + जम् = अब्जम्
चित् + आनन्दः = चिदानन्दः
वाक् + ईशः = वागीशः
वाक् + दानम् = वाग्दानम्
षट् + आननः = षडाननः
सुप् + अन्तः = सुबन्तः
सत् + आचारः = सदाचारः
दिक् + अन्तः = दिगन्तः
अच् + अन्तः = अजन्तः

(2) **झलां जश् झशि-** यदि झल् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं श्, ष्, ह) से परे झश् (वर्गों के तृतीय, चतुर्थ वर्ण) आएँ तो उसे अपने ही वर्ग का जश् (वर्गों के तृतीय वर्ण) हो जाता है। (सन्धि का यह नियमः प्रायः अपदान्त वर्णों में ही लगता है।) जैसे-

युध् + धः = युद्धः
दघ् + धः = दग्धः
शुध् + धिः = शुद्धिः
क्षुभ् + धः = क्षुब्धः
दुघ् + धम् = दुग्धम्
लभ् + धः = लब्धः

(iv) अनुस्वार सन्धिः -

– यदि पदान्त म् के पश्चात् व्यञ्जन वर्ण आए तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है। जैसे-

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
कार्यम् + कुरु = कार्यं कुरु
गृहम् + गच्छति=गृहं गच्छति
ईश्वरम् + भजति = ईश्वरं भजति

– **अनुस्वारस्य ययि परसवर्ण-** पद के मध्य में स्थित अनुस्वार के पश्चात् यदि यय् (श्, ष्, स्, ह के अतिरिक्त अन्य कोई भी व्यञ्जन) आए तो अनुस्वार को परसवर्ण हो जाता है अर्थात् अनुस्वार के पश्चात् जिस वर्ग का वर्ण है, अनुस्वार के स्थान पर उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। जैसे-

शाम् + तः = (नश्चापदान्तस्य झलि से म् को अनुस्वार) = शां + त = शान्तः
गुम् + फितः = गुं + फितः = गुम्फितः
कुन् + ठितः = कुं + ठितः = कुण्ठितः
शम् + कित = शं + कितः = शंकितः
अन् + चितः = अं + चितः = अंचित

– **नश्चापदान्तस्य झलि-** अपदान्त म् अथवा न् के पश्चात् यदि झल् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं श्, ष्, ह्) आए तो म् अथवा न् को अनुस्वार हो जाता है। जैसे-

आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते
यशान् + सि = यंशासि
दन् + शनम् = दंशनम्
रम् + स्यते = रंस्यते

(v) अनुनासिक सन्धिः -

– पदान्त यर् (ह को छोड़कर शेष व्यञ्जन) के पश्चात् यदि अनुनासिक (वर्ग का पंचम वर्ण) आए तो यर् को अपने वर्ग का पंचम वर्ण विकल्प से हो जाता है। जैसे-

षट् + मुख = षण्मुखः या षड्मुखः
सद् + मतिः = सन्मतिः या सद्मतिः
दिक् + नागः = दिङ्नागः या दिग्नागः (झलां जशोऽन्ते सूत्र से)
तत् + मरणम् = तन्मरणम् या तद्मरणम्

अन्य उदाहरण

चित् + मयम् = चिन्मयम्
दिक् + मात्रम् = दिङ्मात्रम
तत् + मात्रम् = तन्मात्रम्
वाक् + मयम् = वाङ्मयम्

(vi) परसवर्ण (तोर्लि)

– यदि तवर्ग के पश्चात् ल आए तो तवर्ग को भी ल हो जाता है। (न् से परे ल आने पर न् को अनुनासिक (ल्) ँ होता है।) जैसे-

महान् + लाभः = महाँल्लाभः
विद्वान् + लिखति = विद्वाँल्लिखति
उद् + लेखः = उल्लेखः
तत् + लीन = तल्लीनः

Short Notes

(vii) झयो होऽन्यतरस्याम् (पूर्वसवर्ण सन्धि)

- यदि झय् (पंचम वर्ण को छोड़कर वर्गों के अन्य वर्ण) के पश्चात् ह आए तो ह को विकल्प से पूर्ण सवर्ण हो जाता है। अर्थात् ह को पूर्व वर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण (घ्, झ्, ढ्, ध, भ्) हो जाता है। (और पूर्व वर्ण को झलां जशोऽन्ते सूत्र से अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे-

वाक् + हरिः = वाग्घरिः, वाग्हरिः

तत् + हितम् = तद्धितम्, तद्हितम्	उत् + हरणम् + = उद्धरणम्, उद्हरणम्
अच् + हस्वः = अज्झ्रस्वः, अज्ह्स्वः	सम्राट् + हतः = सम्राड्ढतः, सम्राड्हतः

(viii) तुगागम सन्धिः

- हस्व स्वर के परे 'छ्' वर्ण का मेल होने पर 'तुक्' (त्) का आगम होता है, बाद में 'त्' को श्चुत्व आदेश कर 'च्' हो जाता है। जैसे-

परि + छेदः = परिच्छेदः	वि + छेदः = विच्छेदः
पद + छेदः = पदच्छेदः	प्रति + छाया = प्रतिच्छाया
स्व + छाया = स्वच्छाया	वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
छत्र + छाया = छत्रच्छाया	स्व + छन्दः = स्वच्छन्दः

(ix) चर्त्व सन्धिः -

- यदि झल् वर्णों (वर्ग का पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा वर्ण तथा श, ष, स, ह) से परे खर् प्रत्याहार (वर्ग का पहला, दूसरा, वर्ण तथा श, ष, स, ह) के वर्ण आए तो झल् वर्णों के स्थान पर चर् वर्ण (वर्ग का पहला तथा श, ष, स) आदेश होता है अर्थात् परे वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण रहने पर पूर्व वर्णों को वर्ग का पहला वर्ण आदेश होता है। जैसे-

तद् + परः = तत्परः	विपद् + कालः = विपत्कालः
उद् + पन्नः = उत्पन्नः	शरद् + कालः = शरत्कालः
तद् + समः = तत्समः	उद् + तीर्णः = उत्तीर्णः
उद् + कीर्णम् = उत्कीर्णम्	उद् + सर्गः = उत्सर्गः

(x) छत्व (शश्छोऽटि च)

- यदि झय् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण) के पश्चात् श् आए और श् के पश्चात् अट् (सारे स्वर, ह्, य्, व्, र् वर्ण) हो तो श् को विकल्प से छ् हो जाता है। जैसे-

उत् + श्रायः = उच्छ्रायः
सत् + शीलः = सच्छीलः
तज् + शिवः = (खरि च सूत्र से ज् को च् परिवर्तन)
तद् + शिवः = (स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से द् को ज् परिवर्तन)
तद् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा, तच्श्रुत्वा

विसर्ग सन्धि

- विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णो के आने पर विसर्ग (:) में जो विकार या परिवर्तन होता हैं, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं; जैसे- मनः + रथः = मनोरथः

(i) सत्व सन्धि-

- विसर्जनीयस्य सः - यदि विसर्ग के आगे को खर् प्रत्याहार का वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर 'स' हो जाता हैं; जैसे- विसर्ग (:) + खर् = स्
- खर् = क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, श ष स।
- इस नियम को समझने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक हैं-
- यदि विसर्ग के बाद च् या छ् आये तो "विसर्जनीयस्य सः" सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता हैं और इस 'स्' का "स्तोः श्चुना श्चुः" सूत्र से 'श्' हो जाता हैं; जैसे-

(1)	हरिः + छलति हरिश्छलति	(2)	हरिः + चलति हरिश्चलति
(3)	निः + चलम् निश्चलम्	(4)	गौः + चरति गौश्चरति
(5)	निः + चयः निश्चयः	(6)	पूर्णः + चन्द्रः पूर्णश्चन्द्रः
(7)	कः + चित् कश्चित्	(8)	बालः + चलति बालश्चलति
(9)	रामः + चलति रामश्चलति	(10)	निः + छलम् निश्छलम्

- यदि विसर्ग के बाद ट् या ठ् हो तो 'विसर्जनीयस्यः सः' सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है, और उस 'स्' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'ष' हो जाता है; जैसे-

Short Notes

Short Notes

रामः + टीकते रामस् + टीकते रामष्टीकते।
धनुः + टंकारः धनुस् + टंकारः धनुष्टंकारः
रामः + ठकारः रामस् + ठकारः रामष्ठकारः

- यदि विसर्ग के बाद त् और थ् आये तो " विसर्जनीयस्य सः" सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता हैं और वह 'स्' जैसा का तैसा रहता है अर्थात् 'स्' ही रहता हैं। जैसे-

(1) हरिः त्राता
हरिस्त्राता
(2) विष्णुः + तत्र
विष्णुस्तत्र
(3) बालः + तिष्ठति
बालस्तिष्ठति
(4) विष्णुः + त्रायते
विष्णुस्त्रायते
(5) इतः + ततः
इतस्ततः
(6) कृतः + तथा
कृतस्तथा
(7) गजाः + तिष्ठन्ति
गजास्तिष्ठन्ति
(8) विष्णुः + त्राता
विष्णुस्त्राता
(9) बालकः + थुडति
बालकस्थुडति
(10) मनः + तापः
मनस्तापः
(12) नमः + ते
नमस्ते

(ii) रूत्व सन्धि-

- पदान्त सकार और 'सजुष्' के षकार के स्थान पर 'रू' आदेश होता है।
- 'रू' में 'उ' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता हैं 'र्' शेष बचता हैं।
- जब 'रू' (र्) के ठीक पहले ह्रस्व 'अ' न हो और रू (र्) के ठीक बाद में खर् न हो, तो यह 'र्' 'र्' ही रहता हैं। इसे ही 'रूत्वसन्धि' कहते हैं।

(1) कविस् + अयम्
कविरयम्
(2) हरेस् + इदम्
हरेरिदम्
(3) गौस् + अयम्
गौरयम्
(4) प्रातस् + अहम्
प्रातरहम्
(5) पाशैस् + बद्धः
पाशैर्बद्धः
(6) पितुस + आज्ञा
पितुराज्ञा
(7) निस् + धनम्
निर्धनम्
(8) ऋषिस् + वदति
ऋषिर्वदति
(9) मातुस् + आज्ञा
मातुराज्ञा
(10) भानोस् + अयम्
भानोरयम्
(11) मुनिस् आगच्छति
मुनिरागच्छति
(12) हरिस् + जयति
हरिर्जयति
(13) कैस् + उक्तम्
कैरूक्तम्
(14) साधुस् + गच्छति
साधुर्गच्छति

अन्य उदाहरण-

- कविस् + आगच्छति = कविरागच्छति
निस् + दयः = निर्दयः
हरेस + जन्म = हरेर्जन्म
मुनिस् + गच्छति = मुनिर्गच्छति
प्रातस् + एव = प्रातरेव
मुनिस् + इव = मुनिरिव
पतिस् + उवाच = पतिरूवाच
गुरोस् + आगमनम् = गुरोरागमनम्
भानुस् + उदेति = भानुरूदेति
मातृस् + आदेशः = मातृरादेशः

(iii) **उत्व सन्धि-**

- यदि 'रू' के ठीक पहले 'ह्रस्व अ' हो और 'रू' के ठीक बाद में पुनः 'ह्रस्व अ' हो, तो ऐसे दो ह्रस्व अ के बीच बैठे 'रू' (र्) को 'उ' हो जाता हैं। इसे ही उत्व सन्धि कहते हैं।
- ध्यान रहे कि 'रू' के स्थान पर 'उ' नहीं होता, किन्तु उकार की इत्संज्ञा होकर लोप होने पर शेष बचे 'र्' के स्थान पर ही 'उ' होता हैं। सूत्र में 'रू' के कथन को यह तात्पर्य है कि 'रूँ' के 'र्' को ही उत्व हो, अन्य 'र्' को नहीं।

जैसे-

(1) शिवस् + अर्च्यः
शिवोऽर्च्यः ('एङः पदान्तादति" से पूर्वरूप)
(2) देवस् + अपि (पदान्त सकार)
देवोऽपि ("एङः पदान्तादति" सूत्र से पूर्वरूप)
(3) देवस् + अपि (पदान्त सकार)
देवोऽपि ('एङः पदान्तादति" सूत्र से पूर्वरूप)

मुश्किल परीक्षाएं भी आसान लगेगी

जब करेंगे लक्ष्य एप के संग तैयारी

मौका है, अपनी तैयारी को सिलेक्शन वाली तैयारी बनाने का

LIVE FROM CLASSROOM

ONLINE/OFFLINE COURSE

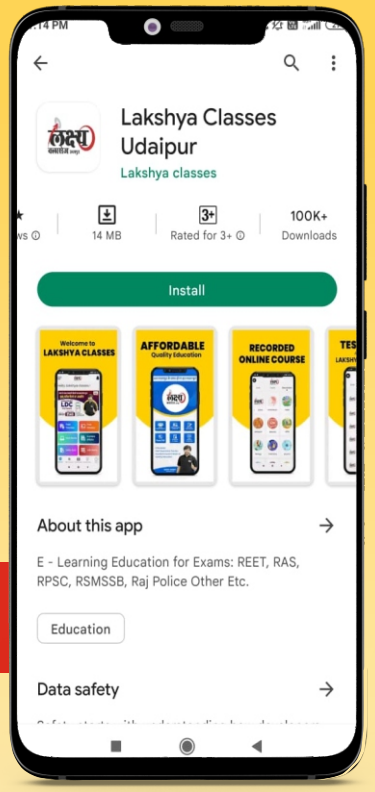

- Test Series
- Recorded Courses
- Downloadable Classes
- Free Quizzes
- Video & Audio Lecture
- Previous Year Paper
- Free Current Affair
- Doubt Solving Session

अभी अपने नज़दीकी बुक स्टोर या
लक्ष्य क्लासेज के एप्लीकेशन से यह बुक्स खरीदें।

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

Sector - 4, Main Road, Udaipur (Raj.)

M. 6376957258, 6376491126